36

9 ; III

35.

त्रैमासिक श्रीः

# श्री स्वाध्याय

## वसन्ताङ्क

वर्ष ६
सं० २००७

संख्या ३
चैत्र




वार्षिक मूल्य ४)

इस अङ्क का मूल्य १) रु०

संस्थापक—
श्रीमान् अमृतवाग्भव आचार्य

सम्पादक—
श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी

# विषय-सूची



## आगामी अङ्कके आकर्षण

द्वितीय आषाढ शु० १० सोमवार ता० २४ जुलाई १६५० को प्रकाशित होने वाले श्रीस्वाध्यायके 'ग्रीष्माङ्क' में "बापूके हत्यारे गौड़सेकी कुण्डली पर विचार" शीर्षकसे एक विशेष लेख प्रकाशित हो रहा है। स्व० नाथूराम गौडसेकी जन्मकुण्डली और उसकी जीवनी पर ज्योतिर्विज्ञानकी दृष्टिसे इतना वैज्ञानिक विश्लेषण अन्य किसी भी पत्रमें नहीं मिलेगा। ज्योतिर्विज्ञानानुरागियोंके लिए अनुभव और आन्वेषणके लिए यह एक विशेष वस्तु होगी। साथ ही 'कर्क-लग्न जातक फल' और धर्मार्थ काम मोक्ष स्तम्भ सम्बन्धी अन्य अनेक महत्त्वपूर्ण लेख इस अङ्क में प्रकाशित होंगे।

### ग्राहकोंको आवश्यक सूचना

जो सज्जन गत वर्षके 'वसन्ताङ्क' से ( मार्च १६४६ से ) 'श्रीस्वाध्याय' के ग्राहक बने थे उन अनेक ग्राहकोंका वार्षिक मूल्य गताङ्क में (पौष वा दिसम्बर १६४६ के हेमन्ताङ्कमें) समाप्त हो चुका है, अतः वे सब सज्जन अपना वार्षिक मूल्य ४ ) चार रुपये शीघ्र ही भेजकर यह अङ्क प्राप्त कर लें। वी० पी० नहीं भेजी जायेगी। विलम्ब करने से सम्भव है यह अङ्क और आगामी 'ग्रीष्माङ्क' भी उन्हें न मिल सके।

गत 'हेमन्ताङ्क' तथा 'श्रीविश्वविजय पञ्चाङ्ग'की सैंकड़ों प्रतियां अण्डर पोस्टल सर्टीफिकेटसे भेजी हुई भी डाक की अव्यवस्थाके कारण गुम हुई, अतः उन ग्राहकोंकी शिकायत पर दुबारा पञ्चाङ्ग और 'श्रीस्वाध्याय' भेजकर हमें पर्याप्त हानि उठानी पड़ी है। एतदर्थ बाध्य होकर अब यह अङ्क हम सब ग्राहकोंको एक पैसे का मार्ग व्यय ( टिकट ) कम लगाकर बैरंग भेज रहे हैं। ताकि पहलेकी भांति गुम न हो। एक पञ्चाङ्गके लिए रजिस्ट्री डाकव्ययसहित मूल्य १=) भेजना चाहिए। वार्षिक मूल्यके साथ केवल ५) रुपया मनीआर्डर द्वारा नीचे लिखे पते पर भेजनेसे यह अङ्क और २००७ का पञ्चाङ्ग रजिस्ट्री द्वारा प्राप्त हो सकेगा।

पता—व्यवस्थापक, श्रीस्वाध्याय सदन, सोलन ( शिमला )

❀ श्रीः ❀

# श्रीस्वाध्याय

संस्थापक तथा प्रधानाध्यक्ष—

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य

## श्री १०८ मान् अमृतवाग्भवजी महाराज

संरक्षक—

धर्ममार्त्तण्ड राजासाहाब श्री० १०५ मान् दुर्गासिंहजी बहादुर सी० आई० ई०, सोलन।
रावराजा कैप्टेन श्री० १०५ मान् गिरिधारीशरणसिंहजी भरतपुर।
श्रीमान् दीवान रुद्रशरण प्रतापसिंहजी जमींदार साहब उपरोड़ा स्टेट म० प्र०।
श्रीमान् चौधरीसाहब गगनसिंहजी रईस जण्डवाल ( होश्यारपुर )
श्रीमान् ला० शिवचरणदासजी सदस्य परामर्शदातृ-समिति हिमाचलप्रदेश, सोलन।

सहायक—

श्री १०५ मती स्व० माँजी महारानी साहिबा ( सिरमौरीजी ) बघाटराज्य।
आयुर्वेदमहोपाध्याय श्री पं० गोवर्द्धन शर्माजी छांगाणी सीतावर्डी नागपुर।
श्री वेणुभाई एम० रावल पाचोरा ( पूर्वखान्देश )।
रावबहादुर धर्मालङ्कार श्री १०५ मान् महाराज प्रभुनाथसिंहजी नरसिंहगढ़।
श्री १०५ मान् महाराज रणदीपसिंहजी साहब नाहन ( सिरमौर )।
श्रीमान् स्व० पं० चतुर्भुजजी राजपुरोहित ताल्लुकेदार भरतपुर।
श्रीमान् स्व० अक्रियानन्दजी ( श्री चुन्नीलालजी ) भरतपुर।
श्रीमान् पं० हरिशङ्करजी शास्त्री ज्योतिषरत्न खिड़कियां सी० पी०।
श्रीमान् कुंवर शिवसिंहजी बी० ए० एल-एल० बी० सेशनजज, सोलन।
श्रीमान् लाला शिवप्रसादजी आढ़ती खर्ड ( पंजाब )।
श्रीमान् ला० बांकेलाल राजकुमार आढ़ती खर्ड ( पंजाब )।

सम्पादक—

## श्री प० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य

उप सम्पादक—

साहित्यरत्न काव्यतीर्थ श्री पं० भवानीशङ्कर त्रिवेदी शास्त्री बी० ए०

प्रकाशक—

## श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन [हिमाचलप्रदेश]

# श्रीस्वाध्यायके नियम तथा उद्देश्य

## उद्देश्य—

समस्त संसारको हितकी ओर ले जाना तथा ऐहलौकिक और पारलौकिक मोक्ष ( स्वातन्त्र्य ) प्राप्त कराना 'श्रीस्वाध्याय' का मुख्य उद्देश्य है।

## संचालकगणोंके नियम—

### संरक्षक—

(१) जो महानुभाव ३००) तीनसौ रुपयेसे अधिक प्रतिवर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक माने जायेंगे।

### सहायक—

(२) जो सज्जन ५०) से ३००) तक प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'श्रीस्वाध्याय' के सहायक माने जायेंगे।

## 'श्रीस्वाध्याय' के नियम

'श्रीस्वाध्यात' आश्विन शुक्ला १०, पौष शुक्ला १०, चैत्र शुक्ला १० और आषाढ़ शुक्ला १० को प्रकाशित होता है। इसका वार्षिक मूल्य ४) रु० और एक प्रतिका १।) रु० है।

(२) जिन सज्जनोंके लेख श्रीस्वाध्याय-सदनकी ओर से प्रार्थना-पूर्वक मंगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे। अन्य लेख यदि गवेषणा-पूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जावेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जायेंगे, अन्यथा नहीं।

(३) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकोंकी दो-दो प्रतियां और विनिमय (परिवर्तन) के पत्र पत्रिकाएं सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन शिमला ) के पतेसे भेजने चाहिएं।

(४) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागज़के एक ओर ही लिखी होनी चाहिए।

(५) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने बढ़ाने तथा लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। अस्वीकृत लेख डाकव्यय प्राप्त होने पर लौटाये जा सकेंगे।

## ग्राहकोंके नियम

'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्क से ( आश्विनमास विजयादशमीसे) ही बनाये जाते हैं, चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि विजयादशमी का 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछे विशेषाङ्क न लेना चाहे तो बीच में किसी भी समयसे ग्राहक हो सकते हैं। ऐसी स्थितिमें उनसे वार्षिक मूल्य ४) न लेकर वर्ष-समाप्ति ( आषाढ़ ) तक के शेष अङ्कोंका मूल्य ही लिया जायगा। 'नववर्षाङ्क'के बिना तीनअङ्कों या नौ मासका मूल्य ३) रु० और एक अङ्कका मूल्य १।) रु० मनीआर्डर द्वारा पेशगी आना चाहिए। वी० पी० मंगाने से उक्त मूल्यमें चार आने अधिक रजिस्ट्री खर्चके बढ़ जायेंगे। वर्षारम्भसे स्थायी ग्रहक बनकर पूरी फाइल मंगवाने में ग्राहकोंको विशेष लाभ है।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहक संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखना चाहिए। यदि ग्राहक संख्या स्मरण न हो और पुराने ग्राहक हों तो मनीआर्डरके कूपनपर 'पुराना' शब्द और नये ग्राहक हों तो 'नया' शब्द नामके साथ अवश्य लिख देना चाहिए। वार्षिक मूल्य या एक अङ्क के मूल्यके नोट या टिकट लिफाफेमें कदापि न भेजें।

'श्रीस्वाध्याय' का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबीपत्र या उत्तरके लिए टिकट आवेंगे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'श्रीस्वाध्याय' प्रकाशित होनेकी तिथि (शुक्ला दशमी) को प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दिया जाता है। यदि किसी ग्राहकके पास कोई अङ्क न पहुँचे तो उसके प्रकाशित होनेकी तिथिसे १५ दिनके अंदर हमें सूचना देनी चाहिए। बादकी शिकायत पर कोई ध्यान नहीं दिया जायेगा।

व्यवस्थापक —

**श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन ( शिमला )**

## 'श्रीस्वाध्याय' और 'श्रीविश्वविजय-पञ्चाङ्ग' पर विद्वानोंका दृष्टिकोण

### संस्कृत-साहित्य के वयोवृद्ध-विद्वान् बिहारके राज्यपाल (गवर्नर) हिज़एक्सीलेन्सी लोकनायक श्रीमान् माधव श्रीहरि अणे महोदय लिखते हैं —

Government House; Patna.
Nov. 13, 1949.

Dear Hardev Sharma Trivedi ji,

I am thankful to you for sending me the number of Shri 'Swadhyaya' and 'Shri Vishwavijaya panchang' I have seen the panchang and I am glad that you are preparing it in accordance with the improved systems of reckoning introduced by Mr. Ketkar. In Maharashtra we have been preparing panchangs by making use of books written by Dr. Daftri and in accordance with resulations passed by conferences of astronomers held during the time of Lokmanya Tilak and some other conferences held later on also after his death.

You have given your own forecast about the achievements of pandit Jawahar Lal ji and Rajendra Babu. I am glad you are taking so much pains to interpret their kundalis.

Thanking you once more for sending me your book swadhyaya and panchang.

I am
Yours sincerely,
M. S. Annye.

राजकीय प्रासाद, पटना
ता० १३ नवम्बर १९४९

प्रिय हरदेव शर्मा त्रिवेदीजी !

अपने 'श्रीस्वाध्याय' का नववर्षाङ्क और 'श्रीविश्वविजय-पंचांग' मुझे भेजा इसके लिए अनुगृहीत हूं। मैंने पंचांगका अध्ययन किया और मुझे प्रसन्नता है कि आपने इसे श्री केतकरकी नवीन संशोधित प्रणाली के अनुसार बनाया है।...आपने श्री पं० जवाहरलाल जी नेहरू और श्री राजेन्द्र बाबू के विषय में जो महत्त्वपूर्ण भविष्यवाणी की है उसके लिए मुझे प्रसन्नता है कि आपने उनकी जन्मकुण्डलियों का इतने मनोयोग से अध्ययन किया है। स्वाध्याय और पंचाङ्ग के लिए पुनः धन्यवाद।

आपका शुभेच्छुः—
( हस्ताक्षर ) एस० एम० अणे

### भारत के सुप्रसिद्ध विद्वान् 'विक्रम' के यशस्वी सम्पादक श्री पं० सूर्यनारायण जी व्यास ज्योतिषाचार्य महोदय लिखते हैं—

'श्रीविश्वविजय' पंचांग मिला यह बहुत सुन्दर सर्वाङ्ग पूर्ण है। अभी जितने पंचांग मैंने देखे हैं उन सबमें आपका पंचांग ही सर्वश्रेष्ठ है। मैं तो इसे अपना ही मनता हूं।........"

# श्रीस्वाध्याय

## [ वसन्ताङ्क ]

स्वराष्ट्रशिक्षां गृहीयाच्चिकीषुः स्वां समुन्नतिम् ।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति ॥ [राष्ट्रालोक]

वर्ष ६ | सोलन, चैत्र शु० १० बुधवार सं० २००७ वि० | संख्या ३

तत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां शोभासम्पच्छालिनीमार्यरीत्या ।
प्रेम्णा लोके स्थापयंस्तत्त्वदर्शी श्रीस्वाध्यायः कल्पतां विश्वमूत्यै ॥
—अ० वा० आचार्य

## निवेदन

[ श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज ]

विरोधो मैत्री वा समुदयति यल्लोकहृदये
न तत्स्थायी भावः कृतकमिति जानातु निपुणम् ।
तमानन्दं विन्देत्कथमिव तदालम्ब्य मतिमान्
नरः स्थायी भावो रस इति वृतं पण्डितवरैः ॥१॥
समिद्धं स्वात्मानं प्रतिनियति साक्षात्कृतवतां
नराणां पापं किं हृदयमवगाढुं प्रभु भवेत् ।
प्रचण्डांशौ सूर्ये तपति गगने मेघरहिते
तमिस्रा किं नेत्रं प्रभवति निरोद्धुं वद सखे ! ॥२॥

सम्पादकीय विचार—

# क्या कहें ?

लगभग तेरहसौ वर्षके पश्चात् भारत फिरसे स्वतन्त्र रूपेण एक सूत्रमें आबद्ध हुआ है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि २६ जनवरी सन् १९५० को सर्व-तन्त्रस्वतन्त्र भारतीय प्रजातन्त्रकी स्थापनासे एक साथ दो महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हुए हैं। प्रथम तो देश ने स्वातन्त्र्य प्राप्त किया और द्वितीय राजनैतिक एकता भी प्राप्त की। भारत स्वतन्त्र तो बहुत समय तक रहा, अनादिकालसे लेकर विक्रमकी ग्यारहवीं शताब्दीके लगभग तक सम्पूर्ण भारत एक प्रकारसे स्वतन्त्र ही था, और दक्षिण भारत तो चौदहवीं शताब्दीके आस पास तक स्वतन्त्र रहा। किन्तु भारतकी राजनैतिक एकताके दर्शन इतिहासमें कभी-कभी ही हुए हैं। मौर्यवंशने काबुल, गान्धार और हीरात तकके सब प्रान्तों को भारतके एक झंडेके नीचे संगठित किया था। गुप्त वंशने भी अनेक प्रान्तोंको एक साथ मिलानेका प्रयत्न किया, और अन्तमें हर्षवर्द्धनने कुछ प्रान्तोंको फिरसे राजनैतिक इकाईके रूपमें संगठित किया। हर्षवर्द्धनके पश्चात् भारतके विभिन्न प्रान्तों या प्रदेशोंने मिलकर राजनैतिक इकाइके रूपमें संगठित होनेकी भावनाको सर्वथा तिलाञ्जली दे दी। महाराणा सांगाके नेतृत्वमें अनेक हिन्दू मुस्लिम शासक एक बार फिरसे संगठित अवश्य हो गये थे, पर वह क्षणिक संगठन था।

आज भारतके छोटे मोटे सैकड़ों राज्य, प्रान्त या प्रदेश संयुक्त होकर एक राजनैतिक इकाईके रूपमें स्वतन्त्रता पूर्वक संगठित हो गये हैं। इस एकताका प्रतीक भी कुछ न-कुछ अवश्य होना चाहिए, जिसके आधार पर हमें या विश्वको यह कहनेका साहस हो सके कि भारत न केवल स्वतन्त्र हुआ है, प्रत्युत उसके सब राज्य और प्रदेश भी मिलकर एक हो गये हैं। इसके लिए हम कह सकते हैं कि दो वस्तुएं ऐसी हैं जो हमारी स्वतन्त्रताके साथ एकताको भी प्रकट करती हैं। उनमेंसे प्रथम है 'राष्ट्र की संसद' ( पार्लियामेण्ट ) और द्वितीय है 'राष्ट्रका नेता'।

उक्त दोनों महत्त्वपूर्ण वस्तु और व्यक्तियोंके लिए अंग्रेजी में 'पार्लियामेण्ट' और 'प्रेजीडेण्ट' पद प्रयुक्त होते हैं। पर यह तो अंग्रेजों व अंग्रेजीकी बात है। हम इन दोनोंको अपनी भाषामें किन नामोंसे सम्बोधित करें यह है विचारणीय प्रश्न।

इनमें से प्रथम 'पार्लियामेण्ट' के लिए 'संसद' शब्द प्रयुक्त हो रहा है। और यही शब्द प्रयुक्त होता रहे तो कोई विचारणीय बात नहीं, किन्तु राष्ट्र की एकताके दूसरे जागृत और जीवित प्रतीक 'प्रेजीडेण्ट' को हम किस नामसे सम्बोधित करें यह एक अत्यन्त गम्भीर विचारणीय प्रश्न है। विधान-परिषद् संसद अथवा स्वयं प्रेजीडेण्टने भी इस सम्बन्धमें अभी तक कोई निर्णय नहीं किया। और हम समझते हैं कि इस प्रश्न का शीघ्रतामें निर्णय न करके इन सबने अपनी बुद्धि-मत्ता और दूरदर्शिता का ही परिचय दिया है। फिर भी इस सम्बन्धमें अनेक नाम अनेक सुझाव उपस्थित किये जा रहे हैं।

'प्रेजीडेण्ट' शब्द सामान्य है, उसके लिए हमारी भाषामें 'प्रधान' पद प्रयुक्त होता है। अतः यदि अंग्रेजीमें 'राष्ट्रपति' के लिए 'प्रेजीडेण्ट' जैसा साधारण शब्द चल सकता है तो हिन्दीमें भी 'प्रधान' का प्रयोग उचित समझा जाना चाहिए। किन्तु हम भारतीय कुछ अधिक भावुक

हैं। हम अपने देश के सर्वोच्च राजनैतिक सत्ताशाली व्यक्तिके लिए 'प्रधान' जैसे साधारण शब्द का प्रयोग करना नहीं चाहते। उक्त प्रतिष्ठित पदके लिए किसी विशेष आदर सूचक शब्दका प्रयोग करना चाहते हैं। इसी भावनासे प्रेरित होकर ही कुछ भावुक लोगोंने इसके लिए 'राष्ट्रपति' शब्दका समर्थन किया है। किन्तु दूसरे लोगोंने उसका विरोध भी किया; कुछ लोगोंने इस आधार पर कि 'राष्ट्रपति' शब्द 'कांग्रेस-पति' के लिए प्रयुक्त होता रहा है तो कुछ लोगोंने किसी अन्य कारण से।

इस सम्बन्धमें हमने आजसे आठ वर्ष पूर्व 'श्री-स्वाध्याय' के द्वितीय वर्ष के प्रथम अंक में कुछ विचार व्यक्त करते हुए स्पष्ट सिद्ध किया था कि किसी भी व्यक्ति को 'राष्ट्रपति' नामसे सम्बोधित करना राष्ट्रके लिए कदापि उचित नहीं। क्योंकि जब हम एक ओर 'भारतमाता' कहते हैं अपने राष्ट्र को, तो 'राष्ट्रपति' शब्द का सीधा अर्थ ठहरता है 'भारत माताका पति'। सभी भारतवासी भारत माताके पुत्र हैं, उसके लाडले लाल हैं, उनमेंसे चाहे कोई कितना ही बड़ा क्यों न हो हम किसीको भारत माता का पति नहीं कह सकते। ऐसा कहना तो एक प्रकारसे अपराध और पाप ही है। वास्तव में बात है भी ठीक, एक परब्रह्म परमात्माके अतिरिक्त कोई किसी राष्ट्रका पति हो ही नहीं सकता, इसी लिए तो वेद भगवान्ने स्पष्ट आदेश दिया है —

'नाऽविष्णुः पृथिवीपतिः'

अर्थात् विष्णुको छोड़ कर (परब्रह्म परमात्माके अतिरिक्त) पृथिवीका और कोई पति नहीं हो सकता। इस दृष्टिसे 'राष्ट्रपति' शब्द का व्यवहार सर्वथा अवैध घोषित किया जाना चाहिए। साथ ही हमारे प्रथम प्रधान माननीय श्री० राजेन्द्रप्रसादजीने प्रधान पद की प्रतिज्ञा ग्रहण करनेके अवसर पर भाषण देते हुए स्पष्ट घोषणा की थी कि "आजसे न कोई राजा है, न प्रजा, सब लोग समान हैं।" अब जबकि कोई राजा नहीं है तो किसीको राजा या उसके पर्यायवाचक नामों से क्यों सम्बोधित किया जाय? जिस प्रकार 'भूपति' 'नरपति' आदि शब्द राजाके पर्याय वाचक समझे जाते हैं वैसे ही 'राष्ट्रपति' भी है। इस दृष्टिसे भी कह सकते हैं कि 'राष्ट्रपति' या उसके समानार्थक किसी भी शब्द का प्रयोग किसी भी व्यक्तिके लिए कदापि न होना चाहिए।

अतः मूल प्रश्न फिर जैसे का तैसा बना रहा कि अब तक बहुतसे लोग भ्रमसे जिस व्यक्तिके लिए 'राष्ट्रपति' शब्द का प्रयोग करते रहे हैं, भविष्यमें उसके लिये समुचित पदवी कौनसी हो? इसकेलिए गम्भीरता पूर्वक विचार करने पर हम इस निर्णय पर पहुँचते हैं कि वह शब्द ऐसा होना चाहिए जो समग्र राष्ट्रकी एकता का प्रतीक हो--प्रतिनिधि हो। इस दृष्टिसे देखने पर 'राष्ट्रमूर्ति' शब्द का प्रयोग उचित प्रतीत होता है। क्योंकि हमारा प्रधान संपूर्ण राष्ट्रकी मानों जीवित जागृत मूर्ति है। उसकी वाणीमें सम्पूर्ण राष्ट्रकी वाणी गूंजती है, उसके दर्शन मानो राष्ट्रके दर्शन है, विदेशी राजदूत आदि अपने प्रमाण पत्र आदि उसे समर्पित कर सम्पूर्ण राष्ट्रको ही समर्पित करते हैं। जिसप्रकार धर्मके प्रतिनिधि या साकार रूपको 'धर्ममूर्ति' और न्यायके साकार रूप व्यक्तिको 'न्यायमूर्ति' कहते हैं वैसे ही राष्ट्रकी एकताके प्रतिनिधि वा साकार रूप अपने प्रधानके लिए 'राष्ट्रमूर्ति' पद का प्रयोग करना अत्यन्त उचित और न्यायसंगत प्रतीत होता है। इसलिए हमारा दृढ मत है कि संसद एवं राष्ट्रके प्रधानका कर्तव्य है कि उक्त पदके लिए 'राष्ट्रमूर्ति' शब्दको ही प्रामाणिकता प्रदान कर अपनी विज्ञताका परिचय दें। यूं 'नेताजी' 'नायक' अध्यक्ष 'प्रधान' आदि दूसरे सामान्य शब्दों से भी काम चल सकता है, पर ये सभी शब्द काम चलाऊ ही हैं। वास्तविक स्थायित्व और महत्त्व तो 'राष्ट्रमूर्ति' शब्द हीमें सन्निहित है।

———

# ब्राह्मणोंका कर्तव्य

## [ लेखक — श्री पं० छज्जूरामजी शास्त्री विद्यासागर ]

[ इस छोटेसे लेखमें वयोवृद्ध विद्वान् श्रद्धेय श्री विद्यासागरजीने जो विचार व्यक्त किये हैं इन पर सम्यक्तया विचार करके विद्वान ब्राह्मणोंको इस ओर कार्यरूपमें अग्रसर होना चाहिए। श्रुति स्मृति पुराण-आदिमें कहीं भी पवित्रतापूर्वक बना हुआ एक ब्राह्मणके हाथ का भोजन दूसरे ब्राह्मणके लिए अभक्ष्य और एक सदाचार-सम्पन्न ब्राह्मणका दूसरे प्रान्तके सदाचारी कुलीन ब्राह्मणसे विवाह सम्बन्धका निषेध नहीं मिलता। वर्णव्यवस्था वैदिक है इसकी रक्षा परमावश्यक है, किन्तु ब्राह्मण-ब्राह्मण, क्षत्रिय-क्षत्रिय और वैश्य-वैश्यके पारस्परिक अवान्तर भेदोंको मिटा देना चाहिए। भगवती श्रुति की आज्ञा है — "ब्राह्मण्यां जायमानो हि ब्राह्मण एव" अतः वर्तमान समयमें ब्राह्मणमात्रको पारस्परिक रोटी-बेटीका सम्बन्ध स्थापित कर एक सूत्रमें संगठित होनेकी परम आवश्यकता है। — सम्पादक ]

जाति एक महान् व्यापक शब्द है। शुक्ल यजुर्वेदके एक सुप्रसिद्ध मन्त्रमें चार जातियोंका नाम और उनके कर्तव्यका निर्देश है। जैसे—'ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीद्बाहुभ्यां राजन्य ऊरूतदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोऽजायत' अर्थ स्पष्ट है। सर्वप्रथम ब्राह्मण जातिको देशविभाजनकी दृष्टिसे दो श्रेणियां बनीं थी, पञ्चगौड़ और पञ्चद्रविड़। पञ्चगौड़ ये हैं —सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, उत्कल और मैथिल। यह विभाजन दैशिक है, शास्त्रोय नहीं, जैसे — सरस्वती नदी के आस-पास बसने वाले सारस्वत, कन्नौज प्रान्तीय कान्यकुब्ज, कुरुक्षेत्रदेशीय गौड़, उत्कलदेशीय उत्कल, और मिथिलावासी मैथिल। अब ये सब अपनेको गौड़ ही कहना छोड़ गये, केवल सारस्वत ब्राह्मण, कान्यकुब्ज ब्राह्मण इत्यादि नामोंसे ही व्यवहृत होने लगे। सबने रोटी-बेटीका सम्बन्ध अपने में ही सीमित कर लिया, जिसका वेदादि शास्त्रोंमें गन्ध तक नहीं। रोटी के सम्बन्धमें महर्षि पतञ्जलिने लिखा है — "ब्राह्मणा ब्राह्मणैः सह भुज्यन्ते क्षत्रियाः क्षत्रियैः" बेटीके सम्बन्धमें भगवान् मनुने लिखा है — 'पाणिग्रहण संस्कारः सवर्णासूपदिश्यते' इन सब प्रमाणोंसे कम से कम पञ्चगौड़ोंका रोटी-बेटीका सम्बन्ध अवश्य होना चाहिये। अब 'आठ कन्नौजिये और नौ चूल्हे' का समय नहीं है। पांचोंकी एकता होने से अनेक प्रकारके खान-पान विवाहादि सम्बन्धी संकटोंका जो बिना किसी शास्त्र प्रमाणके प्रचलित हो गये हैं निवारण होसकेगा। कुछ महानुभावोंका कथन है कि पञ्चगौड़ोंमें रोटी-बेटीके भिन्न २ सम्बन्धका मुख्य कारण मैथिल आदि कुछ ब्राह्मणों का मद्य मांसादि सेवन है। यह ठीक है, परन्तु इसका निवारण भी तो परस्पर संगठनसे हो सकता है। क्या यह सेवन उनके लिये कोई जातिधर्म है? जिसके न करने से पाप होगा? रोटी-बेटीका सम्बन्ध होनेसे मद्यमांससेवियोंको स्वयं जाति भय से बाध्य होकर छोड़ना पड़ेगा।

हम शीघ्रातिशीघ्र भारतकी राजधानी देहलीमें, एक 'अखिल भारतीय पञ्चगौड़ सम्मेलन' कर रहे हैं। जिसमें इन सब बातों पर पूरा-पूरा प्रकाश डाला जावेगा। ईश्वर हमारी इस पवित्र भावनाको पूर्ण करें।

श्रीराष्ट्रालोकावलोकनम्—

# २. वृषकेतु या धर्मध्वज

## [ अवलोकयिता — श्री रामानन्द शास्त्री सारस्वत साहित्यरत्न ]

( गताङ्क से आगे )

स्वराष्ट्र या वास्तविक राष्ट्रका दूसरा लक्षण है 'वृष केतु'। वृष केतु अर्थात् वृषके समान केतु वाला। शास्त्रोंमें वृषको धर्मका रूप कहा गया है। 'वृष केतु का दूसरा पर्याय 'धर्मध्वज' होता है। अर्थात् वास्तविक राष्ट्र वही है जो धर्मकी ध्वजाका प्रतीक हो। किसी भी संस्था या राष्ट्रके सिद्धान्तोंके प्रतीक रूप में जो चिन्ह विशेष होता है उसे ध्वजा कहते हैं। इस पताका या Flag ध्वजके दर्शन मात्रसे ही उस संस्था या राष्ट्र की विचारधारा एवं सिद्धान्तों का पता लग जाता है। अतः वह राष्ट्र धर्म का ध्वजा रूप होना ही चाहिये। भारतीय शास्त्रकारों की यह शैली रही है कि वे धर्म का पहले सम्मान करते हैं, इस श्लोकद्वारा भी आचार्य जी ने भी पहले धर्म को नमस्कार किया है। अब प्रश्न यह उठता है कि राष्ट्र का चिन्ह धार्मिक या सिद्धान्तोंका प्रतीक तो होता ही है, फिर उस राष्ट्रकेलिये 'धर्मध्वज' कहने की क्या आवश्यकता? क्या इससे बढ़ कर कोई और राष्ट्र का रूप नहीं हो सकता? इसका यह उत्तर है कि मंगलाचरण में राष्ट्रके आन्तरिक स्वरूपका पहले वर्णन किया गया है, इसके बाद बहिरङ्गका वर्णन होगा। अतः राष्ट्रकी जो सबसे आभ्यन्तरिक वस्तु है वह है धर्म। आज के इस वैज्ञानिक युग में भले ही राजनीतिज्ञ लोग इस बात का उपहास करते फिरें कि धर्म ही राष्ट्र का आधार है, किन्तु जरा विवेक से विचार करने पर उन्हें स्पष्ट प्रतीत होगा कि किसी भी राष्ट्र का समम्युदय केवल राजनीति से न होकर वहां की शिक्षा, भाषा, भूषा, कला कौशल और साहित्य से होता है। और देशों पर चाहे यह बात पूर्ण चरितार्थ न हो पर भारत सर्वदा से धर्म के आधार पर ही उन्नत हुआ है। यहांकी जनता के जीवन का नेतृत्त्व राजनीतिक नेताओं विक्रम, अशोक, चन्द्रगुप्त आदि के द्वारा न होकर सर्वदा से व्यास, वाल्मीकि, चाणक्य, कबीर, तुलसी, सूर और कालीदास प्रभृति साधुओं, सन्तों, परोपकारी ब्राह्मणों और साहित्यिकों द्वारा होता रहा है। किसी भी देश के इतिहासपर दृष्टि डालने से पता चलता है कि उस देशकी सभ्यता संस्कृति एवं सामाजिक परम्पराओंपर उस देशके धर्म गुरुओं का अक्षुण्ण प्रभाव पड़ता है। उदाहरणकेलिये हम मुसलिम राष्ट्र का स्वरूप इस्लाम परम्परा और अंग्रेज साम्राज्य का स्वरूप उनके पादरियों की विचार पद्धति ले सकते हैं। राष्ट्र के उत्थान पतन में वहां की सामाजिक उन्नति अवनतिका ही विशेष विचार किया जाता है। और इसीलिये अनवरत हिंसा और दुराचारको उन्नति का मूल मन्त्र समझे हुऐ विश्वके वे भयानक राजनैतिक हिंसक अब धर्मानुगामिनी राजनीति के भारतीय आध्यात्मिक सिद्धान्तको सर्वनाशसे बचने के हेतु नतमस्तक होकर मान रहे हैं। अतः राष्ट्र वहां की जनताकी धार्मिक (अर्थात् वह मूल भावना जो उनका संरक्षण करती है) प्रवृत्तियोंका प्रतीक होना सर्वथा उचित ही है। अब प्रश्न यह उठता है कि यहां 'वृषकेतु' क्यों कहा गया? यदि ग्रन्थकार का आशय धर्म से हो था तो 'धर्मकेतवे' भी हो सकता था? तथा 'धर्म' का चतुर्विध पुरुषार्थ में पहले ही जब ग्रहण हो चुका है तब पुनः 'वृष केतु' प्रयोग भाव पुनरुक्ति के साथ ही दोष पूर्ण भी है। इसका समाधान यह है कि 'वृष' शब्द मांगलिक है। वृष वैसे भी

मांगलिक है। स्वप्न में या प्रातः काल वृष का दर्शन अत्यन्त पुण्य कारक व लाभ दायक समझा जाता है। भारतीय लोग तो विशेष कर वृष का आदर करते हैं। जैसे मानव देह धारियों में ब्राह्मण उत्तम एवं वेद विद्याओं के आगार समझे जाते हैं उसी प्रकार पशुओं के वर्णधर्म में वृष ब्राह्मण संज्ञक है। शास्त्रों में वृष को बड़ा महत्व दिया है। वेद में अनेक स्थानों पर वृष' या 'वृषभ' का वर्णन आया है। अनेक उपमाओंमें वृष का बहुत सुन्दर प्रयोग किया गया है। देखिये अग्निके वर्णनमें क्यों ही सुन्दर 'वृषभ' का प्रयोग हुआ है:—

चत्वारि शृङ्गात्रयो अस्य पादा
द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।
त्रेधा बद्धो वृषभो रोरवीति
महादेवो मर्त्यांऽऽ आविवेश॥

इसके अतिरिक्त वृष धर्मका स्वरूप माना जा कर उसकी पूजा की जाती है और इसीलिये आशुतोष भगवन् श्री शङ्कर का वाहन होने से और भी अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। हिंदुओं में तो प्राचीन काल में वृषभ पौरुष का प्रतीक माना जाता था और राज्य चिन्हों एवं मुद्राओं तक में वृष का उट्टङ्कन किया जाता था। अब भी कहीं कहीं ऐसी ताम्र मुद्राएँ मिल जाती हैं। जिन्हें 'नादिये का पैसा' कहा जाता है। भगवान् शिव 'वृषध्वज' कहे जाते हैं, वे कल्याण की मूर्ति हैं, और सच्चिदानन्द स्वरूप होने से उनमें शास्त्रकारों ने सत्यं शिवं सुन्दरम् का चिरन्तन समन्वय माना है। अतः 'वृषकेतु' शब्द के प्रयोग से मंगलकारी राष्ट्र का ग्रहण किया गया है। श्री आचार्य जी की दृष्टि में कल्याणकारी राष्ट्र ही पूर्ण वास्तविक राष्ट्र है। मंगलमय राष्ट्र की अभिव्यञ्जना एवं सतत राष्ट्र के मंगल की कामना से ही यहां जान बूझकर 'वृषकेतु' पद रखा गया है। इसके अतिरिक्त चतुर्वर्ग में 'धर्म का ग्रहण हो जाने से 'धर्मकेतु' पद कुछ अप्रिय सा रहता फिर धर्म केतु रूप नहीं रहता है। केतु आकाश में उड़ा करता है, वह आकाशीय वस्तु है, किन्तु धर्म बद्धमूल सुदृढ़ रहता है। वह उड़ता नहीं। यद्यपि चतुर्वर्ग पुरुषार्थ में 'धर्म' का ग्रहण हो जाता है तथापि वह गौण रूप में है। वास्तव में राष्ट्रकी आत्मा वह मूल भूत सांस्कृतिक शक्ति है, जो उस राष्ट्र का सर्वविध संरक्षण करती है उसे ही दूसरे शब्दों में 'धर्म' कहा जाता है। क्योंकि –

'धारणाद् धर्ममित्याहु धर्मो धारयते प्रजाः।
यः स्याद् धारणसंयुक्तः स धर्म इति कथ्यते'॥

तथा

'तस्माद् धर्ममित्याहुर्धर्मो धारयते जगत्।'

आदि आप्त वाक्यों से जो इस लोक और परलोक में निःश्रेयस साधक हो, जनता की उस जीवन शक्ति का ही नाम 'धर्म' है। 'वृषकेतु' शब्द से राष्ट्र की उस सांस्कृतिक मूल शक्ति की हीओर इंगित किया है। वैसे वृष श्वेत रंग का होता है, इससे राष्ट्र की यशस्विता और वर्चस्विता की भी कामना की गई है। इसके अतिरिक्त 'वृषकेतु' से एक अभिप्राय यह भी है कि वृष एक अत्यन्त परोपकरी पशु है। इससे देश की व्यापारिक एवं आर्थिक स्थिति के सुधार में पर्याप्त सहायता मिलती है। इसका प्रत्यङ्ग लोकोपयोगी होता है। जीवन भर शस्यश्यामला वसुंधरा से वसुवृद्धि करता हुआ मरणान्त में अपना हाड़ मांस तक उपकारकेलिये छोड़ देता है। कौन नहीं जानता कि इसके चमड़ेसे जूते बनते हैं। मांस भक्षियोंको मांस देता है, पक्षित होने पर धान्य पैदा करता है। और तो और विधि पूर्वक त्याग दिये जाने पर उत्सर्ग स्वर्ग का कारण बनता है, गोबर की खाद बनाता है, अस्थियां इसकी अनेक दवाइयों में काम आती हैं, 'वृष शृंग' से किया गया रुद्राभिषेक अत्यन्त पुण्य कारक होता है गोबर तक इसका खाद्य ही बढ़ाता है। ऐसा उपयोगी राष्ट्रिय पशु जो जीता जागता राष्ट्र की शक्ति और पौरुष एवं आर्थिक स्थिति का सच्चा प्रतिबिम्ब है उसका ग्रहण करने से और भी विशेष सौन्दर्य बढ़ जाता है। सचमुच

'वृषकेतु' से यह भी आशय है कि जिस राष्ट्र में 'वृष' ही केतु स्वरूप अर्थात् शीर्ष स्थानीय या अधिक मात्रा में आदरणीय हों और रक्षणीय समझे जाते हों वही सच्चा राष्ट्र है। अतः राष्ट्र का दूसरा लक्षण कि राष्ट्र 'वृषकेतु' हो उचित ही है। इससे धार्मिक व्यापारिक और सामाजिक राष्ट्रियता का भी सहज ग्रहण हो जाता है। इसके अतिरिक्त 'केतु' अत्यन्त महत्व द्योतक है। अतः इसका यह भी अर्थ हो सकता है कि उस सर्व प्रकार महत्वशाली और समृद्ध राष्ट्र को जो कि चतुर्विध पुरुषार्थ का कारण है नमस्कार है। एक राष्ट्रप्रेमीके राष्ट्र के प्रति इससे सुन्दर और क्या उद्गार हो सकते हैं??? तथा 'वृषकेतु' से उस राष्ट्र की धार्मिक परम्परा का महत्व प्रकट करते हुए यह कामना की गई है कि इस राष्ट्र की धार्मिक परम्परा का सर्वत्र प्रसार हो या यह भी अर्थ माना जा सकता है कि उस स्वराष्ट्र के लिये नमस्कार है जो 'वृषकेतु' है अर्थात् जिसकी धार्मिक परम्परायें विश्व के सुविस्तीर्ण प्राङ्गण में विजय वैजयन्तीकी भांति फहरा रही हैं। केतु श्रेष्ठता का सूचक है। गोस्वामी तुलसीदास जीने श्रीरामचन्द्र जीको 'रघुकुलकेतु' कहा है। इससे यह भी विदित होता है कि 'वृष' प्रयोग से भारतीय राष्ट्रवाद के महान् आचार्यवर्य ने भारत की यशस्विता, वर्चस्विता एवं धार्मिक तथा आध्यात्मिक ज्ञानकी उस प्राचीन महत्ता का आरम्भ में ही पाठकों को स्मरण कराया है क्योंकि ऊपर लिखा जा चुका है कि श्री आचार्य जी ने उक्त ग्रन्थ का प्रणयन उस समय किया था, जब भारत पारतन्त्र्यपाशाबद्ध था, ऐसे समय में राष्ट्रियता लोगों में भरने के लिये यह आवश्यक था कि उन्हें उनकी प्राचीन महानता का पावन परिचय कराया जाय अतः प्रारभ में ही उनका परिचय कराते हुऐ, अगले ही तृतीय चरण में वे उसको स्वतन्त्र करने का सन्देश 'पितृपुण्यभू' शब्द में करा देते हैं, कि लोग इसके ऊपर प्राप्त अपना पैत्रिक पुण्याधिकार समझें और फिर स्वराष्ट्र बनाकर उसका नमन करें। राजनीतिक अर्थ गाम्भीर्य से परिपूर्ण राष्ट्रवाद के एक महान् ग्रन्थ में किसी राष्ट्रवादी सन्त का राष्ट्रियों के लिये इससे और सुन्दर उपदेश क्या हो सकता है? अब जब भारत स्वतन्त्र हो चुका है तो हमें इसका आशय यह लेना चाहिये कि हमारा राष्ट्र किसी समय 'वृषकेतु' था, अर्थात् धार्मिकाध्यात्मिक ज्ञान में सबसे अग्रेसर था, अतः इसे अब भी वैसा ही बनावें। क्योंकि सुयोग्य पुत्रों का यह कर्तव्य होता है कि वे अपने पिता के नाम को बढ़ावें, अतः आगामी 'पितृपुण्यभुवे' से इस अर्थ की संगति भी हो जाती है। अतः 'वृष केतु' से न तो भाव पुनरुक्ति ही होती है और न कुछ असंगति ही होती है प्रत्युत इस पर बार बार विचार करने से अधिकाधिक आनन्द ही प्राप्त होता है. इससे सुन्दर और राष्ट्र की क्या व्याख्या हो सकती है? तथा 'चतुर्णांपुरुषार्थानां' से मानव समृद्धि और 'वृषकेतु' से पशु जगत् की समृद्धि एवं 'पितृ' शब्द से उनका उचित परिपोषण व 'पुण्यत्त्व' से सबका समन्वय पूर्ण विकास के साथ प्रदर्शित करते हुए स्वराष्ट्र से उस राष्ट्र पर वहां के निवासियों का पूर्ण आधिपत्य हो यह सूचित होता है। परतन्त्र भारत के पारतन्त्र्यपाश छेदन के लिये ऐसी की गई राष्ट्रिय महापुरुष की यह कितनी ओजस्विनी शुभ कामना है। इसका मनन करते चकित होना पड़ता है।

---

# ग्रहण और उसका अशौच

[ ले०—पं० श्री दीनानाथ शर्मा शास्त्री सारस्वत, विद्यावागीश, विद्यानिधि, विद्याभूषण ]

सूर्यग्रहण एवं चन्द्रग्रहण असुर राहु-केतु द्वारा हुआ करते हैं—यह वेदादि सब शास्त्रोंका सिद्धान्त है। आजकलके अर्वाचीन विचार वाले व्यक्ति राहु-केतु ग्रहको माननेकेलिए उद्यत नहीं होते। कारण यह है कि—वे पाश्चात्योंके अनुगामी हैं। जो बात पाश्चात्य विद्वान् कह दें, वे उसे पत्थर की लकीर मानने लग जाते हैं; पर इस स्वराज्य के अवसर में यदि वे दास्यमनोवृत्ति नहीं छोड़ना चाहते; तो यह स्वतन्त्र भारतकेलिए परितापका विषय है। पहले हम इस विषयमें शास्त्रीय तथा वैदिक प्रमाण उपस्थित करते हैं।

जो लोग ग्रहणमें राहुका संयोग सर्वथा नहीं मानते, वे लोग प्रसिद्ध ज्यौतिष ग्रन्थ 'सिद्धान्त शिरोमणि' का निम्न वचन स्मरण रखें—

दिग्देशकालावरणादिभेदान्न
च्छादको राहुरिति ब्रुवन्ति।
यन्मानिनः केवलगोलविद्या
स्तत् संहिता-वेदपुराणबाह्यम्'।
( गोलाध्याय ग्रहण वासना १ )

राहुः कुभामण्डलगः शशाङ्कं,
शशाङ्कगश्छादयतीन ( सूर्य ) बिम्बम्।
तमोमयः शम्भुवरप्रदानात्,
सर्वागमानामविरुद्धमेतत् ( १० )

यहां पर राहु ग्रह द्वारा ग्रहण कहा गया है। पृथिवीकी छायामें स्थित होकर राहु चन्द्र-ग्रहण करता है, चन्द्रमामें स्थित होकर राहु सूर्य-ग्रहण करता है। जो लोग राहुको आच्छादक नहीं मानते, उनको श्री भास्कराचार्यने ज्यौतिष संहिता तथा वेद-पुराणसे अनभिज्ञ बताया है।

न केवल वेदाङ्ग ( ज्यौतिष ) ही राहु ग्रह द्वारा ग्रहण मानता है; प्रत्युत वेद भी ग्रहण में कारण 'राहु' को मानता है देखिये—

'यं वै सूर्यं स्वर्भानुस्तमसाऽविध्यदासुरः'
( ऋग्वेद ५।४०।६ )

यहां पर असुर 'स्वर्भानु' के द्वारा सूर्यका ग्रहण माना गया है। 'स्वर्भानु' राहुको कहते हैं, देखिये 'अमर कोष' — 'तमस्तु राहुः स्वर्भानुः' ( १।३ २६ ) कई आर्यसमाजीगण यदि हमारी बात न मानें; तो वे स्वामी दयानन्दजीकी साक्षी भी देख लें। 'उणादिकोष' (३।३२) सूत्र की व्याख्या में स्वामीजी ने लिखा है—'स्वर्भानुः राहुः' पृष्ठ ५५ )। इसमें आर्यसमाजके विद्वान् श्री प्रियरत्नजी आर्ष (अब स्वामी ब्रह्ममुनिजी ) की साक्षी भी देखें। 'वैदिक-ज्योतिष शास्त्र' ( पृ० १४०-१४१ में वे लिखते हैं—"वेद में सूर्य ग्रहणका वर्णन है - 'यत् त्वा सूर्य ! स्वर्भानुस्तमसाविध्यदासुरः' हे सूर्य ! स्वर्भानु नामक मेघ सदृश आच्छादक ने तुझे अन्धकार से ढक दिया... मन्त्र में 'स्वर्भानु' शब्द सूर्यके छादक राहुकेलिए आया है। ज्योतिष ग्रन्थोंमें भी सूर्यग्रहण करने वाले छादक राहु को 'स्वर्भानु' कहा है—'स्वर्भानोर्वेदतर्काष्ट' ( सूर्य सिद्धान्त १२।२६ ) 'वाल्मीकिरामायण' ने भी सूर्य-ग्रहण करने वाले छादक राहुको 'स्वर्भानु' नाम दिया है— 'स्वर्भानुरिव भास्करम्' ( १०२।३ )। 'ताण्ड्य महाब्राह्मण' में लिखा है—

'स्वर्भानुर्वा आसुर आदित्यं तमसा अविध्यत्'
( ४।६।१३ )।

जहां पर स्वर्भानु शब्द से राहु तथा उसके द्वारा ग्रहण आधुनिक-विद्वत्सम्मत है, वहां पर वेद को भी सम्मत है; यह पूर्व बताया जा चुका है। अब वेद की अन्य साक्षी भी देखिये—

'शं नो ग्रहाश्चान्द्रमसाः शमादित्यश्च राहुणा'
(अथर्ववेद १९।९।१०)

यहांपर राहु से ग्रस्त सूर्यका कल्याणकारी होना प्रार्थित किया गया है। 'ऋग्वेद' के उक्त मन्त्र में 'स्वर्भानु' तथा 'सूर्य' शब्द आये थे; पर 'अथर्ववेद' के इस मन्त्रमें उनके पर्यायवाचक 'राहु' तथा 'आदित्य' आये हैं। 'उणादिकोष' के 'दमनिजनि...रहिभ्यो उण्' (१।३) इस सूत्र के अर्थ में स्वा० दयानन्दजी ने "राहुः ग्रहविशेषः' (पृ० ५) यह लिखकर राहु को ग्रहविशेष मान लिया है।

उक्त आर्यसमाजके विद्वान् श्री ब्रह्ममुनिजीने उक्त मन्त्र का अर्थ इस प्रकार किया है—'चन्द्रमाके ग्रहण सुखदायक हों, राहु के साथ सूर्य भी सुखदायक हो। ... सर्व सूर्य ग्रहणका नाम 'स्वर्भानु' है; क्योंकि— सूर्यका सर्वग्रास होने से 'स्वः' द्युलोकमें 'भानु' अर्थात् सूर्य जिस छादकसे [ छन्न ] होता है; वह सर्व सूर्यग्रहण 'स्वर्भानु' कहलाता है, शेष सब प्रकार के सूर्यग्रहण -राहु' नामसे कहाते हैं।' आर्यसमाजी अथर्ववेदभाष्यकार श्री क्षेमकरणदास जी ने इसका अर्थ यों किया है—'सूर्य राहु—ग्रहविशेष—के साथ शान्तिदायक हों।'

'राहोश्छाया स्मृतः केतुः—इस शास्त्र के प्रमाण से 'राहु' से केतु' ग्रहका भी ग्रहण हो जाता है। स्वामी दयानन्द जी ने अपने 'उणादिकोष' (१।७४ सूत्र की व्याख्या) में लिखा है।—'केतुः—ग्रहः' (६.१८) अथर्ववेद के उक्त मन्त्र का उत्तरार्ध यह है—

शं नो मृत्युर्धूमकेतुः शंरुद्रास्तिग्मतेजसः'
(अ० १९।९।१०)

इसका अर्थ आर्यसमाजी भाष्यकार श्री जयदेव जी ने यों लिखा है —'जनों के मृत्यु के कारण धूमकेतु ग्रह हमारेलिये शान्त रहें। तीव्रप्रकाश वाले प्रजा के रुलाने वाले केतुग्रह... शान्त रहें।' इससे केतु' ग्रह भी वेदोक्त सिद्ध होता है, तब उससे ग्रहण भी वैदिक सिद्ध हुआ। अन्य भी सूर्य ग्रहण, चन्द्रग्रहण के विषय में बहुत से प्रमाण मिलते हैं, पर प्रधान ग्रन्थ वेदोंके प्रमाण आजाने से 'सर्वे पदा हस्तिपदे निमग्नाः' के अनुसार शेष पुस्तकों के प्रमाण उपस्थित करना आवश्यक नहीं समझा गया।

अब ग्रहणकालके अशौच पर लौकिक दृष्टि से विचार किया जाता है। जब सूर्य ग्रहण वा चन्द्रग्रहण होता है, तो उस समय दूरबीन या अणुवीक्षण आदि यन्त्रोंसे देखा गया है कि—कई सूक्ष्म कीटाणु जहां-तहां फैल जाते हैं। वे आंख, मुख नासिका आदि द्वारा हम लोगों के भीतर घुस जाते हैं। इसीसे हम अशुद्ध हो जाते हैं। इसी कारण 'मनुस्मृति' में 'राहोश्च सूतके' (४।११०) इस पद्य में राहु-दर्शनका सूतक (अशौच) माना गया है। उस समय यदि भोजन किया जाय, तो उन कीटाणुओंके बाहिर-भीतर व्याप्त होने से उदराग्नि विकृत होजाती है। इधर भोज्य वस्तुओं में भी कीटाणु स्थित होते हैं। उनके खाने से खाने वालेके शरीर, मन, बुद्धिकी हानि हुआ करती है। इसी कारण शास्त्रों में उस समय भोजनका निषेध किया गया है। जैसे कि—बृहद्विष्णु स्मृति में कहा गया है 'चन्द्राऽर्कोपरागे नाश्नीयात् (६८।१)'स्मृतिचन्द्रिका के आह्निककाण्ड में भी कहा है—

सूर्यग्रहे तुनाश्नीयात् पूर्वं याम चतुष्टयम्।
चन्द्रग्रहे तु यामांस्त्रीन् बालवृद्धातुरैर्विना'।

उसमें प्रमाण यह है कि—बादलों में ढकी वर्षा ऋतु में सूर्य मण्डल के बादलों से ढके होने से उसमें भी कीटाणु फैल जाते हैं, जिन्हें सूर्य नष्ट किया करता था। तेज 'उष्ण स्पर्श' वाला हुआ करता है, उससे कीटाणु नष्ट होजाते हैं; पर उस तेज में आवरण पड़ने

से ऊष्मा की कमी के कारण कीटाणुओं की व्यापकता अनिवार्य होजाती है। इसी कारण वर्षाऋतु में भी हमारी उदराग्निमें विकृति होजानेके कारण परिपाकशक्तिके न्यूनतावश भोजनादि करनेसे मलेरिया रोग फैल जाता है। इसीलिए ही हमारे संस्कृत साहित्यमें बादलोंसे ढके दिनका नाम 'दुर्दिन' मिलता है। 'दुष्टं दिनम्' यह इसका विग्रह है। दुष्टता यही है कि–मेघों द्वारा सूर्यके ढके होनेसे कीटाणु उत्पन्न होकर हमें हानि पहुंचाते हैं। इसी कारण उन दिनों हमारे शास्त्रकारोंने चातुर्मास्य व्रतोंका आयोजन किया है। व्रतोपवासों से हमारे शरीर में ऊष्मा बढ जाती है; जिससे भीतरके कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। इसीलिए कई हमारी वृद्धा माताएं जब तक सूर्य-दर्शन नहीं कर लेतीं; तब तक भोजन नहीं करतीं।

इसी प्रकार ग्रहणमें भी सूर्यके तेजके ढक जानेसे सूक्ष्म कीटाणु फैल कर हमारे शरीरको काटते हैं। जिससे हमारे शारीरिक वा मानसिक रोगकी आशङ्का रहती है। इसलिए हमारे वैज्ञानिक शास्त्रकारों ने उस समय भोजन निषिद्ध कर दिया है। इसी कारण हो हमारी धर्मनिष्ठ स्त्रियां रातको दीपककी साक्षी में भोजन कर रहे होने पर वायु से दीपक बुझ जाने पर भोजन को तत्काल छोड़ देती हैं। उसमें भी यही रहस्य है कि दीपकका प्रकाश भी तेज है, वह भी उष्णस्पर्शवाला होनेसे कीटाणुको नष्ट करता है। दिया बुझ जानेपर उष्णस्पर्श तेज हट जानेपर कीटाणुओंको उत्पत्ति होजानेसे वह अन्न भक्षणयोग्य नहीं रहता। इसीलिए ही जिस घरमें न कभी अग्नि जली हो, न सूर्यका प्रकाश आदि पहुंचता हो, न दीपक जलता हो, उस घर में भूतप्रेतों का प्रवेश होनेसे रहना भो उचित नहीं समझा जाता है।

ग्रहणके बाद शास्त्रकारों ने स्नानकी भी आज्ञा दी है, क्योंकि इससे बाहिर-भीतर को शुद्धि हो जाती है। 'अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति, (मनु० ५।११०) इसमें कारण यह है कि — स्नान करनेसे हमारे अन्दर गर्मी का उद्गमन होता है, जिससे शरीर के बाहिर-भीतर पहुंचे हुए कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। इस लिए जो लोग सर्दी में प्रातः स्नान नहीं करते, उनको सर्दी बहुत लगती है क्यों कि रात्रि में पूर्णऽयावमूल का कीटाणु हमारे शरीर को काट कर सर्दी लगवाते हैं। स्नान करने से अन्दर गर्मी का उद्गम होजानेसे वे कीटाणु नष्ट होजाते हैं। गर्मीमें यद्यपि स्नान करनेसे बाहिर शीत प्रतीत होती है परन्तु उस समय भी भीतर गर्मी का ही उपजन होता है, इसीलिए ही गर्मी में जो लोग अधिक नहाते हैं, उन को तापकी व्याधि हो जाती है।

यह भी सोचना चाहिए कि–रात को हमें मूर्छारूप नींद क्यों आती है? उसमें कारण यही है कि सूर्य के अदर्शन से इस प्रकारके कीटाणु निरन्तर उत्पन्न होते जाते हैं, जिनसे हमारे शरीर की दंशन क्रिया होने के कारण उस विषसे हम मूर्छित हो जाते हैं जिसकी परिभाषा 'निद्रा' होती है। सूर्योदय निकट होने पर उन कीटाणुओंकी शक्ति क्रमशः क्षीण होने लगती हैं, जिससे हमारी मूर्छा क्रमशः हट जाया करती है इसकी परिभाषा 'जागरण' है। सूर्य निकलने पर बाहिर के कीटाणु नष्ट होने पर भी शरीरान्तः स्थित कीटाणुओ को ऊष्मासे नष्ट करनेकेलिए प्रातः स्नान करना पडता है। मूर्छा होती है चेतना लुप्त होने पर। बुद्धिरूप चेतना को देने वाला सूर्य होता है, इस लिए सूर्य के तेज से—

'तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्' (यजुः ३।३५)

—बुद्धिकी प्रार्थना की जाती है।

'इनो विश्वस्य भुवनस्य गोपाः स मा धीरः (ऋ० १।१६४।२१)

इस मन्त्र में सूर्य को 'धीर' (धियं राति-ददाति) बुद्धिप्रद माना जाता है। इस प्रकार ग्रहण के समय भी भोजन नहीं किया जाता और स्नान किया जाता

है। सूर्यग्रहण रात्रि के परिमाण का बहुत समय तक तो नहीं होता, अतः वहां पर स्थूल मूर्च्छा तो नहीं हो सकती, पर बुद्धिप्रद सूर्य तथा हमारी बुद्धि में राहुका आवरण पड़ जानेसे मानसिक मूर्च्छा आशासित होती है। अतः उस समय व्रत-स्नानादि करना पड़ता है।

इस में हिन्दुओं का विज्ञान-ज्ञान ही कारण है कि वे तब भोजन नहीं करते और स्नान करते हैं। इस का ज्वलन्त उदाहरण अन्य लीजिये। किसी का कोई पड़ौसी मर जाय जब तक उसका शव घर में पड़ा है, तब तक कोई भी हिन्दू भोजन नहीं पकाता तथा खाता, चाहे रात भी हो जाय। शवके निकल जाने पर गली की जल से शुद्धि की जाती है। इसमें क्या कारण है ? इसमें कारण है हिन्दुओं को विज्ञान का ज्ञान। शव में आत्मा न होने से भीतर ऊष्मा न होने से कीटाणु उस शवपर आक्रमण करते हैं। वहांसे इधर-उधर फैल जाते हैं, इस लिए मुर्दे पड़े रहने तक कोई भोजन नहीं करता। जैसे शवसे कीटाणुओंका फैलाव हो जाता है, वैसे ही ग्रहण के समय सूर्य के ढ़के होने से कीटाणुओंके जहां-तहां फैल जानेसे शास्त्रकारोंने भोजन करना भी निषिद्ध कर दिया है। उस के बाद अपनी शुद्धि भी आदिष्ट की है।

शव के गली से निकल जानेपर लोग जलसे गली की शुद्धि क्यों करते हैं इस में भी रहस्य है। पृथ्वी के अन्दर भी ऊष्मा होती है। उसके ऊपर जल डालने से पृथ्वीसे भाप का उद्गम होता है, उस गर्मी से उस पर स्थित शवके कीटाणु नष्ट हो जाते हैं, इस प्रकार पृथ्वीकी शुद्धि हो जाती है। इसी कारण ही रात्रिकी समाप्तिके बाद पाकशालाकी भूमिकी शुद्ध्यर्थ जलयुक्त मिट्टी से लेप किया जाता है, जलयुक्त मिट्टी के लेप से पृथ्वी से निकली हुई गर्मी फैल जाती है, जिससे पाकशालाकी भूमिपर ठहरे हुए रात्रि मूलक कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। इसलिए वह भूमि पाकयोग्य हो जाती है। नहीं तो वहां कीटाणुओंके प्रेमसे मक्खियां बहुत बैठती हैं। सनातन धर्मकी सन्ध्या में जोकि गायत्री मन्त्रसे अभिमन्त्रित करके जलका वेष्टन किया जाता है जोकि प्रत्येक वस्तुके स्पर्शके समय हाथ धोए जाते हैं, जोकि सन्ध्यामें मार्जन तथा जलसे अङ्गस्पर्श वा इन्द्रियादि स्पर्श किया जाता है. सन्ध्या आदिके आरम्भ में जोकि पादप्रक्षालन किया जाता है, उन सबका रहस्य वही है जो बतलाया जा चुका है कि वैसा करनेसे भीतरसे ऊष्माका उद्गम होता है। जिससे तत्तद् अंग में स्थित कीटाणु नष्ट हो जाते हैं हमारे मुलतान की धर्मनिष्ठ स्त्रियां जब अपने छोटे लड़के को अस्पृश्य चाण्डालादिसे छुआ हुआ देखती हैं, तो उसकी शुद्धिकेलिए स्नानकी प्रयोजनीयता होने पर भी उससे शीतादि में हानि का विचार कर अपने कान के सुवर्ण भूषणसे जलको छूकर उस लड़केपर डालती हैं, और उसे पवित्र समझ लेती हैं। वहां भी रहस्य यही है कि सुवर्ण आकरज (खान से उत्पन्न होने वाला) होने से तेज का विषय है, उस तेजसे तथा कभी अपवित्र न होने वाले आकाश के अंशभूत दाहिना कान जिस में शास्त्रानुसार देवताओं का निवास माना जाता है—से स्पृष्ट जल पवित्र होनेसे उस लड़केके अस्पृश्यसे प्राप्त कीटाणुओंको पूर्वरीतिसे ऊष्मा द्वारा नष्ट कर देता है। फलतः ग्रहण के बाद शुद्ध्यर्थ स्नान करनेका यही रहस्य है।

रात प्रतिदिन आती है। उसमें असुर राहुका कोई सम्बन्ध नहीं इस प्रकार वर्षा ऋतु भी अपने समयपर आती है, अतः उसमें अप्राकृतिकता नहीं। तब उसमें लम्बा समय होनेसे भोजन-निषेध न भी किया जा सके, पर सूर्य आदिका ग्रहण तो सदा नहीं होता। इधर उस में असुर राहु का सम्बन्ध भी है, अतः वहां अप्राकृतिकतावश कीटाणु बहुत प्रादुर्भूत हो जाते हैं अतः उसमें भोजन सर्वथा निषिद्ध है। प्राकृतिक मैथुनमें उतनी हानि नहीं होती, जैसी अप्राकृतिक मैथुनमें। अतः ग्रहणके थोड़े से समयमें भोजन छोड़ा ही जा सकता है।

यदि कहा जाय कि सुधारक लोग ग्रहण के समय भोजन कर लेते हैं, स्नान भी ग्रहण के बाद नहीं करते, उनको तो हानि कुछ भी नहीं होती। इसपर जानना चाहिए कि उस समय के कीटाणु उन के शरीर वा मनपर भी अवश्य दुष्प्रभाव करते हैं। तभी तो उनमें अश्रद्धा, हठ, कुविचार आदिका आधिक्य होता है। भोजनका सम्बन्ध मनसे होता है। तभी तो कहा जाता है 'जैसा खावे अन्न वैसा होवे मन'। इसलिए 'छान्दोग्य उपनिषद्' में कहा गया है—'योऽणिष्ठः [ अन्नस्य भागः ] तन्मनः' ( ६।५।१ ) 'अन्नमयं हि सोम्य ! मनः' (छा० ६।५।४) 'अन्नस्य अश्यमानस्य योऽणिमा, स ऊर्ध्वं समुदीषति, तन्मनो भवति' ( ६ ६।२ ) 'यो मध्यमस्तन्मांसम्' ( ६।५।१ )।

यहां पर अन्नके स्थूल भागसे मांस तथा सूक्ष्म भागसे मनका निर्माण कहा गया है। तब सुधारक लोग ग्रहणादिमें भोजन कर लेनेसे मन तथा शरीर में मालिन्य हो जानेसे छल, अश्रद्धा तथा असत्य ग्रहणके स्वभाव वाले हो जाते हैं; तभी वेदादि शास्त्रोंके सत्य अर्थको छोड़कर छल-कल्पित असत् अर्थ करने लग जाते हैं।

ग्रहण के समय कुश आदि रखने तथा गुग्गल-धूपादि के धुंएं तथा रेशमी वस्त्रों के पहनने का यही रहस्य है कि जहां इनकी स्थापना होती है; वहां इस प्रकार के कीटाणु नहीं बैठ पाते। इनसे दूसरेकी विद्युत्का संक्रमण भी रुक जाता है। इसी लिए भगवान् कृष्णने ध्यान के समय 'चैलाजिनकुशोत्तरम्' ( गीता ६।११ ) ऐसा आसन माना है। उस समय गोबरसे लेपन भी करना पड़ता है; गोबरसे भी कीटाणुओंका नाश प्रसिद्ध है।

पीतल आदि धातुके पात्रोंमें ग्रहणादि के समय अग्नि इस कारण डाली जाती है जिससे तापवश कीटाणु वहांसे हट जाते हैं। इसी लिए वेदादिमें अग्निको भूत-प्रेत आदिको हटाने वाला माना गया है। मिट्टीके जूठे पात्रोंमें कीटाणुओं का अतिशय प्रभाव होता है; इस कारण अस्पृश्यतामें उन्हें गिरा दिया जाता है। उनकी अपेक्षा पीतल आदि के पात्रों में न्यून प्रभाव पड़ता है; इसलिए उनको भस्म तथा अग्निसे शुद्ध किया जाता है। सुवर्ण आदिके पात्र में उन कीटाणुओंका प्रभाव पड़ता नहीं। उसका प्रमाण यही है कि- शेरनीका दूध अन्य पात्रोंमें कीटाणुओंके प्रभाववश शीघ्र विकृत हो जाता है; परन्तु सुवर्णपात्रमें वह नहीं फटता, क्योंकि—उस पर कीटाणुओंका प्रभाव नहीं पड़ता। इसलिए सुवर्ण धारण करने वाले पुरुषकी आयु दीर्घ मानी गई है। देखिये इस पर 'अथर्ववेद'—

'नैनं रक्षांसि न पिशाचाः सहन्ते...यो बिभर्ति दाक्षायणं हिरण्यम्' ( १।३५।२ )। इसका कारण यह है कि वह सुवर्ण किसी अङ्ग से छुआ हुआ होता है; अतः वह कीटाणुओंको दूर करता है। स्त्रियोंपर इन अणुस्वरूप भूत प्रेतादियोंका प्रसवादि समयोंमें प्रभाव बहुत पड़ता है; अतः उससे बचावकेलिए सनातनधर्मानुसार उन्हें सुवर्ण भूषणोंके पहिरनेका अधिक अधिकार दिया गया है। यही लक्ष्य करके 'आपस्तम्बगृह्यसूत्र' में—

'छिद्रे सुवर्णम् उतरयाऽनाधाय उत्तराभिः पञ्चभिः स्नापयित्वा' ( २।४।८ ) इस प्रकार वधू का स्नान भी सुवर्णस्पृष्ट जल से बताया गया है। यही सुवर्ण जैसा प्रभाव कई मणियों का भी हुआ करता है। इसी लिए 'अथर्ववेद' में कई मणियोंका बहुत महत्व बताया गया है। इन्हीं कारणोंसे सुवर्ण तथा मणियां बहुमूल्य हुआ करती हैं। यही धातु पात्रोंकी शुद्धिमें तारतम्य है।

इस प्रकार कीटाणुओंका प्रभाव चन्द्रग्रहणमें भी जानना चाहिए। रातको यद्यपि सूर्यके न होनेसे कीटाणु हो जाते हैं, तथापि बहुतसे कीटाणुओंको चन्द्रमा

हटाता है, क्योंकि चन्द्रमा भी सूर्यकी एक किरणसे प्रकाशित होता है। कीटाणुओंका प्रसार अन्धेरेमें होता है। बहुतसे कीटाणु प्रकाश मात्र को देखकर मर जाते हैं चाहे वह प्रकाश सूर्यका हो, चाहे चन्द्रमाका चाहे अग्नि का चाहे दीपक वा बिजलीका। जब चन्द्रमाका ही स्वयं ग्रहण हो, तो कीटाणुओंका क्या कहना! जब पूर्ण चन्द्रग्रहण होता है तब ९८ प्रतिशत उसकी ऊष्मा हट जाती है। शेष दो भागों की ऊष्मा पूर्णग्रहणकी अन्तिम कोटि में नष्ट हो जाती है। तब कीटाणु खूब बढ़ जाते हैं। ज्यों ही चन्द्रमा राहु केतुकी छायासे बाहर आता है, त्यों ही उसकी ऊष्मा बढ़ जाती है। तो बाहर के कुछ कीटाणु नष्ट हो जाते हैं शेष भीतर बाहरके कीटाणु नष्ट करनेके लिए स्नान करना पड़ता है।

चन्द्रग्रहणके लिए यह जानना चाहिए कि 'चन्द्रमा मनसो जातः' (यजुः ३१।१२) 'चन्द्रमाः पातु ते मनः' (सुश्रुतसंहिता सूत्रस्थान ५।२७) 'मनसि तृप्ते चन्द्रमास्तृप्यति' (गोपथब्रा० १।२।२२) किमसुभिर्ग्लपितैर्जड ! (चन्द्र !) मन्यसे मयि (चन्द्रे) निमज्जतु भीमसुतामनः' (नैषधीयचरित ४।५२) इन प्रमाणोंसे मनका चन्द्रमासे सम्बन्ध सिद्ध होता है। सूर्यसे बुद्धिका सम्बन्ध होता है; यह पहले संकेतित किया जा चुका है। ग्रहण समयमें सूर्य-चन्द्रमा से बुद्धि एवं मानसिक शक्ति के आदान-प्रदान में कुछ व्यवधान हो जाने से हानिकी आशंकाका लक्ष्य करके शास्त्रकारोंने उस समयमें दान-ध्यानकी ओर प्रवृत्ति कराई है, जिससे आसुरी माया नष्ट हो जावे।

जिसकी जैसी प्रकृति हो, वहां वैसी विकृति हानि नहीं पहुंचाती। जैसे कि हम दुर्गन्ध प्राप्त करते हैं; तो नासिकाको घृणासे सिकोड़ लेते हैं। उसके कीटाणु हमारे मस्तिष्कको घृणित कर देते हैं; पर भंगी आदि विष्ठाकी, चमार चमड़ेको, मुसलमान मांस पकनेके समयकी गन्धसे वैसी हानि प्राप्त नहीं करते; जैसे कि हम। विषका कीड़ा विषसे नहीं मरता। इसलिए 'श्रीमद्भागवत' में भी कहा है—

> 'समानकर्माचरणं पतितानां न पातकम्।
> औत्पत्तिको गुणः सङ्गो न शयानः पतत्यधः'
> (११।२१।१७)।

अतः हम कृष्णपक्षकी रात्रिमें वैसी प्रकृति वाले होने से वैसी हानि प्राप्त नहीं कर सकते; जैसे कि ग्रहण के समय प्राप्त कर सकते हैं; क्योंकि राहु-केतुके सम्बन्धसे ही कीटाणुओंकी हानिजनकता विशेष हुआ करती है। स्वाभाविक अन्धकार अन्य होता है; राहु-केतुकृत अन्य। इससे यह भी सिद्ध होता है कि जो कभी भी स्नान नहीं किया करते, और दुर्गन्ध आदिसे ओत-प्रोत हैं; वे पहले से ही वैसे कीटाणुओं की स्थितिवश ग्रहणकालीन कीटाणुओंसे नयी हानि प्राप्त नहीं करते; जैसे कि हम।

ग्रहण में बाल, वृद्ध, आतुरों को जो कि अस्पृश्यतादोष नहीं लगाया जाता; उसमें भी रहस्य है। ग्रहण कीटाणु रक्त द्वारा ही शरीरको दूषित करते हैं। बच्चों और बूढ़ोंमें रक्ताणु अत्यन्त न्यून होते हैं; इस कारण वहां कीटाणु अपना प्रभाव नहीं डाल सकते। आतुर (बीमार) को स्नान कराया जाय; तो उसकी हानि आशंकित होती है; उपवास वह कर ही रहा होता है। स्वास्थ्य में उसने स्नान करना ही होता है। 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्' इससे पूर्व उसका विधिव्यतिक्रम सह्य होता है।

अब ग्रहण समयमें दान-पुण्य की कथा सुनिये—उस समय तमः के आवरणसे पापका साम्राज्य बढ़ रहा होता है; हमें उसे हटानेके लिए पुण्यका साम्राज्य बढ़ाना पड़ता है, जिससे पाप राज्यका दमन हो जाय। दान-ध्यान आदि से पुण्यका राज्य बढता है; यह सर्वसम्मत है; उसका प्रमाण यह है कि रातको पाप-राज्यके बढ़ने से हम प्रातःकाल उठकर स्नान करते हैं, फिर सन्ध्या करते हैं। इस प्रकार देवपूजनसे रात्रि

स्थित पापराज्य का निराकरण होता है; वैसे ग्रहणान्त में भी जानना चाहिये। ग्रहणके समयमें जो दान दिया जाता है; वह अशुद्ध होता है अतः उस समय शुद्ध ब्राह्मण तो नहीं लेते। या तो उसे शनिदानोपजीवी ब्राह्मण लेते हैं; या अंत्यज लिया करते हैं। इससे उनकी सहायता भी हो जाती है।

इधर ग्रहण समयमें कभी ग्रहोंके परस्पर आकर्षण-विकर्षण के समय आकर्षण-विकर्षण की शक्ति के सामंजस्य हट जाने से ग्रहों के पतन से प्रलयकी आशंका भी उपस्थित हो जाती है। बहुत से आकाशस्थ ग्रह हमारी पृथिवीसे भी बड़े हैं। यह बात निर्विवाद है। ग्रहण समय आकर्षण-विकर्षण स्वाभाविक होने से यदि उसमें असामंजस्य उपस्थित हो जाय; तो ग्रहके एक अंशके गिरनेसे भी पृथिवीमें खण्डप्रलय हो सकता है। ऐसी आशंकामें अपने इष्टदेव को स्मरण करना ठीक ही है। तभी वेद में 'शं नो ग्रहाश्चान्द्रमसाः शमादित्यश्च राहुणा' (अथर्व० १६।६।१०) राहु द्वारा ( चान्द्रमसा ग्रहाः चन्द्रग्रहणानि ) चन्द्रग्रहण तथा सूर्यग्रहण की शान्त्यर्थ प्रार्थना की गई है। ऐसे भयावह कालमें थोड़ा किया हुआ भी दान-ध्यानादि माङ्गलिक हो जाता है। दुर्जनतोषन्याय से ग्रहण हानिकारक न भी माना जाय; तो उस समय का किया हुआ स्नान, दान, ध्यान कभी व्यर्थ तो नहीं हो सकता; तब इससे सुधारकोंके पेट में पानी क्यों पड़ता है?

एक यह भी किन्हीं का दुराग्रह हुआ करता है कि ये ग्रहणादिक तथा अन्य नियम क्या हिन्दुओंको ही दुःख दिया करते हैं। दूसरोंको तङ्ग नहीं करते? इसका उत्तर प्रकारान्तर से 'न्यायदर्शन' में दिया है— 'अभ्युपेत्य कालभेदे दोषवचनात्' ( २।१।५८ ) अर्थात् जो नियम परम्परा से स्वीकृत कर लिये गये हों; उनके न पालने पर दोष हुआ करता है। क्या कारण है कि हिन्दु चाचे की लड़की से विवाह करता हुआ डरता है, और मुसलमान निडर होकर उसे अपनी अङ्कशायिनी बना लेता है? इसमें वही स्वनियम-पालन मानना पड़ेगा। जबकि हमारे पूर्वजों की सौ में नव्वे बातें सत्य सिद्ध हो रही हैं तो अवशिष्ट अज्ञात नियम भी उनके रहस्यपूर्ण हैं—यह मानना पड़ेगा। उनका आचरण हमें कर्तव्य है ही। जैसे कि हिन्दु धर्म में यह प्राचीन नियम हैं कि अपने गोत्रमें विवाह न करना, शिखा रखना; यज्ञोपवीत पहनना इत्यादि, पर मुसलमान लोग अपने गोत्रमें विवाह करते हैं, शिखा-यज्ञोपवीत धारण नहीं करते; तथापि उनकी कोई हानि नहीं होती, यह सोचकर हमें उक्त अपने नियम छोड़ नहीं देने पड़ते। बहुत विचार करनेपर हिन्दू धर्मके सभी नियम रहस्यपूर्ण सिद्ध होते हैं; परन्तु खेदका अवसर है कि सुधारक लोग इनको तब मानते है जब कि उस पर पाश्चात्योंकी मुहर लग जाय। यह पाश्चात्योंकी मानसिक-दासता इस पूर्ण स्वराज्यके समयमें अब हट जानी चाहिये।

फलतः सिद्ध हुआ कि ग्रहण राहु-केतुकर्तृक है; उसकी अशुद्धि भी समूल है; उस समय का दान-ध्यान स्नानादि भी प्रयोजनीय है, संशयात्माओंको इस पर विचार कर अपना सशय दूर कर देना चाहिये।

# हिन्दू कोडबिलका शास्त्रीय खण्डन

[ ले०—श्री पं० छज्जूरामजी शास्त्री विद्यासागर, अध्यक्ष—संस्कृत महाविद्यालय, देहली ]

माननीय हिन्दुबन्धुओं, यह तो आपको विदित ही है कि निकट भविष्य में 'हिन्दू कोड बिल' असेम्बली में पास होने जा रहा है। कुछ महानुभाव, बिना ही जनमत लिये शास्त्रों की दुहाई देकर उसको पास कराने में तुले हुए हैं। और अन्य समस्त जनता उसका विरोध कर रही है। अब हम यहां वेदादि शास्त्रों के द्वारा यह निर्णय करेंगे कि यह बिल केवल डा० अम्बेडकर के ही मस्तिष्क की सूझ नहीं बल्कि हमारे प्राचीन आचार्यों ने इस पक्ष को उठाकर खण्डित किया है। देखिए—वेदप्राय निरुक्तग्रन्थ के तृतीयाध्याय में भगवान् यास्क ने इसका यह निर्णय किया है:—

पूर्वपक्ष—

"अविशेषेण पुत्राणां दायो भवति धर्मतः।
मिथुनानां विसर्गादौ मनुः स्वायम्भुवोऽब्रवीत्॥

अर्थात् लड़का और लड़की दोनों ही समानरूप से धर्मानुसार दाय ( पितृद्रव्य ) के अधिकारी हैं। यह बा० सृष्टि के आरम्भमें ही मनुजीने कही है। उत्तरपक्षमें यास्क लिखते हैं—

'न 'दुहितरः' तस्मात्पुमान्दायादोऽदायादास्त्रीति विज्ञायते, स्त्रिय जातां परास्यन्ति न पुमांसमिति, ( नि० ) अर्थात्—पुरुष ही दाय का अधिकारी है, दुहिता ( स्त्री ) नहीं, क्योंकि वह विवाहकाल में अन्य के लिए दे दी जाती है। और "पितृधनंपुत्रगामी-निमिताद्दाराकारः। अभ्रातृमतीवाद इत्यपरम्। ( नि० ) कुछ विद्वान् कहते हैं कि जिस लड़की के भाई नहीं है उसको पिता के द्रव्य का अधिकार है। वीरमित्रोदय में यही लिखा है—पितृधनाधिकारी पुत्रस्तदभावेदुहिता पुत्रवती, पुत्रहीना नाधिकारिणी। जिस कन्याका भाई है वह तो "न जामये तान्वो-रिक्थमारैक् चकार गर्भं सनितुर्निधानीम्"। ( ऋग्वेद ) अपनी बहन को पितृधन में से कुछ भी हिस्सा नहीं देता उसका पालन पोषण करके विवाह कर देता है। यही निर्णय अनादि परम्परा से आजतक चला आरहा है। श्री १०८ करपात्री जी महाराज का कहना है-कि यदि बहन को भी पैतृकधनमें से हिस्सा मिलने लग जावेगा तो भाई बहनों में कलह की वृद्धि होगी और हिन्दू कोड के द्वारा 'असवर्ण' 'सगोत्र' आदि विवाह होने से वर्णसांकर्य फैल जावेगा। "अपागूहन्न मृती मर्त्येभ्यः कृत्वी सवर्णामदधुर्विवस्वते" ऋग्वेद के इस मन्त्र में अपनी सवर्णा कन्या के साथ विवाह करने का आदेश है। इसी मन्त्र के आधार पर—'पाणिग्रहण संस्कारः सवर्णासूपदिश्यते' 'असपिण्डा च या मातुरसगोत्रा च या पितुः" इत्यादि मन्वादिवाक्य हैं।

"यत्रत्वेते परिध्वंसा जायन्ते वर्णदूषकाः।
राष्ट्रिकैः सहतद्राष्ट्रं क्षिप्रमेव विनश्यति॥ इस श्लोकमें मनु जी कहते हैं जिस देश में इस प्रकार के वर्ण दूषक असवर्ण विवाह होते हैं। वह राष्ट्र शीघ्र ही नष्ट हो जाता है क्योंकि धर्म के बिना राजनीति विधवा है वह अकेली कोई भी सन्तति अर्थात् उन्नति नहीं कर सकती। भारत का त्यागी बालक स्वामी विवेकानन्द जब वर्षों तक धर्म प्रचार करके और सारी अमेरिका की जनता को मन्त्र मुग्ध-सी बनाकर भारत को वापस आने लगा। तब एक लेडी १ करोड़ का चिक चरणों में रखकर बोली कि मुझे आप की 'धर्मपत्नी' कहने का सौभाग्य प्राप्त हो जावे, विवेकानन्दजी कहने लगे देवी, सारी अमेरिका का साम्राज्य देकर भी कोई धर्म विरुद्ध कार्य मुझसे करवाना चाहे तो मैं उसको ठुकरा दूंगा। धन्य है भारत तेरे सपूतों को। तलाक

# दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र

## भारतीय गणराज्य—प्रजातन्त्रका भविष्य

### सं० २००७ की ग्रहपरिषद्का संसारपर प्रभाव

[ श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य ]

माघ शु० ८ ता० २६ जनवरी १९५० ई० को हमारा चिरभिलषित स्वतन्त्रताका सूर्योदय हुआ। इसी दिन 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' इस उद्घोषके प्रवर्तक स्व० श्री लोकमान्य तिलक का सुख-स्वप्न भी सफल हुआ। किन्तु अभी तो हमने 'स्वराज्य' ही प्राप्त किया है और वह भी केवल राजनैतिक दृष्टिसे ही कहा जा सकता है। स्वराज्यको 'सुराज्य' बना देने पर हमें वैराज्यादि उच्च भूमिको प्राप्त करनेका वैदिक आदर्श सदा अपने सम्मुख रखना चाहिए। हमारे महर्षिगण सृष्टिके आदिकालसे ही स्वराज्य, वैराज्य आदि संसारके लिए कल्याण कारक हों और ससमुद्रा सम्पूर्ण पृथ्वी पर एक आर्य विश्वराज्यकी स्थापना हो। यथा

ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात्सार्वभौमस्सर्वायुषान्तादापरार्धात्। पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति तदप्येषश्लोकोऽभिगीतो- मरुतः परिवेष्टारो मरुतस्यावसन् गृहे॥

ईश्वर करे हम शीघ्र ही इस वेदवाणीको क्रियात्मक रूप देनेमें समर्थ हो सकें। अब हम ज्योतिर्विज्ञानकी दृष्टिसे इस अपने प्रथम प्रजातन्त्र गणराज्य—स्थापनाके सम्बन्धमें कुछ शास्त्रीय विचार व्यक्त करते हैं।

ता० २६ जनवरी गुरुवारको प्रातः १०।१८ पर दिल्लीमें भारतीय जनतन्त्र (गणराज्य) की स्थापना हुई और राष्ट्रके प्रतिनिधियों द्वारा नवनिर्मित विधानको वैधानिक रूपमें प्रचलित किया गया, अतः यह समय भारत ही नही समस्त संसारके लिए महत्वपूर्ण ऐतिहासिक समझा गया। विगत १५ अगस्त १९४७ को भारतीय उपनिवेशके जन्म-लग्न पर जो विस्तृत विवेचन हमने 'श्रीस्वाध्याय' और अन्य पत्रोंमें प्रकाशित किया था, उसमें उल्लिखित घटनाओंके अक्षरशः सत्य सिद्ध होनेपर अब जनताका ज्योतिर्विज्ञान की ओर आकर्षण अधिकाधिक होता जा रहा है। विज्ञ

---

बिल के पास होने से श्रीरामचन्द्रजी जैसे एक पत्नी व्रतधारी, और सीता अनसूया जैसी पतिव्रताएं भारत में न मिल सकेंगी। महारानी विक्टोरिया को जब दूसरा विवाह करनेके लिए कहा, तब बोली कि मैं इङ्गलैंड की ही महारानी नहीं बल्कि उस भारतवर्ष की भी महारानी हूँ जहां कि स्त्रियों का यह धर्म है--

"न द्वितीयश्च साध्वीनां क्वचिद्भर्तोपदिश्यते"

अर्थात् - पतिव्रता स्त्रियों का दूसरा पति हो नहीं सकता। अतएव पूर्ण आशा है कि हमारे देश के कर्णधार पूज्य राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद जी, पण्डित नेहरू जी प्रभृति नेता, इधर पूर्ण ध्यान देंगे और ऐसे अशास्त्रीय तथा साम्प्रदायिक बिलों को कभीभी पास न होने देंगे।

विवेचकों और ज्योतिर्विज्ञानानुरागी पाठकोंके लिए हम यहाँ जनतन्त्रका जन्मलग्न देकर नीचे कुछ विवेचन करेंगे ।

पहले समाचार पत्रोंमें इस उत्सवके आरम्भ या गणराज्यके जन्मका समय २६ जनवरीको प्रातः ६ से ६॥ बजे तकका घोषित किया था । किन्तु हमने अपने पत्र 'श्रीस्वाध्याय' द्वारा उक्त समयका निषेध किया था, यह पाठकोंको विदित ही है । ज्योतिर्विज्ञानानुरागियोंको यह जानकर सन्तोष हुआ होगा कि गण-राज्य-स्थापनाका यह ऐतिहासिक समय २६ जनवरी को प्रातः १० बजकर १८ मिनट पर साधा गया ।

श्रीशुभ सं० २००६ शकः १८७२ माघ शु० ८ गुरुवासरे दिल्ली नगरे भारतीय स्टैंडर्डटाइम १०।१८ श्रीसूर्योदयादिष्टघट्यादि ७।३७, सूर्यः ६।१२, लग्नम् ११।१२ अश्विनी नक्षत्रस्य चतुर्थचरणे भारतीय गण-राज्यजन्मलग्नम्—




इस गणराज की स्थापना उत्तरायण और सर्वार्थसिद्धियोगमें हुई, यह राज्यको चिरस्थायी एवं अन्तमें यशस्वी बनाने वाला शुभयोग है । अश्विनीका चतुर्थचरण भी गणराज्यको यशस्वी बनाने वाला है । लग्नेश गुरु लाभमें, बुध केन्द्र (राज्य) में और शनि छठे हैं, ये सब प्रकारके षड्यन्त्रों और अनार्य शत्रुओंको परास्त करते हुए आर्य गणराज्यको सुदृढ़ एवं चिरस्थायी बनानेमें सहायकसिद्ध होंगे ।

'एकादशगस्तनुपतिः सुजीवितं सुतसमन्वितं विदितम्'

केतुकी महादशामें इस गणराज्यका जन्म हुआ है; इसके केवल ४ मास २८ दिन शेष हैं । आगे शुक्र की महादशा प्रारम्भ होगी, वह भी शुभ नहीं है । अतः इस अवधिमें गुप्त शत्रु कई उत्पन्न होंगे और आरम्भमें ही अनेक प्रकारकी उलझनें आती दिखाई देंगी । राजनैतिक, सामाजिक, साम्प्रदायिक और आर्थिक प्रश्नोंको लेकर अनेक स्थलोंमें अप्रिय प्रसंग उपस्थित किये जायेंगे, परन्तु शनि मंगल इन्द्र (नेपच्यून) विरोधी तत्वोंको दबाकर शांतिस्थापना में सहायक होंगे ।

## आरम्भिक पाँच वर्ष कठिनाईके

पाठकोंको स्मरण होगा कि १५ अगस्त १९४७ को भारतीय उपनिवेशके जन्म-लग्न पर विवेचन करते हुए हमने स्पष्ट लिखा था कि 'सं० २००८ से २०१२ तक सारे देश में अराजकता फैलेगी । भारतमें सं २०१५ वि० से पूर्ण सुख शान्तिका साम्राज्य स्थापित होगा ।'

अब इस गणराज्यके जन्मलग्नकी ग्रहस्थिति भी दो वर्ष पूर्व प्रकट किए गए हमारे उक्त विचारकी पुष्टि कर रही है ।

यहाँ गण-राज्यका जन्म केतुकी महादशा में हुआ है । ४ मास २९ दिनके उपरान्त शुक्र महादशा आरम्भ होगी । शुक्र अष्टमेश तृतीयेश होकर लग्नेश षष्ठेशके साथ अस्तप्राय है अतः शुक्र महा दशामें शुक्रान्तर (३ वर्ष ४ मास का समय) और आगे एक वर्षका सूर्यान्तर इस गणराज्यके सामने अनेक विषम समस्याएं उत्पन्न करके कठिन अग्निपरीक्षाका समय उपस्थित करेगा । अष्टमेश लग्नेश राज्येश षष्ठेशके साथ अशुभ योग होनेसे इसी अवधि में गणराज्यके किसी महान् शासकका निधन योग भी बन रहा है । साम्यवादी, समाजवादी एवं साम्प्रदायिक लोगोंका विरोध तीव्ररूप धारण करेगा । भ्रष्टाचार बढ़ेगा । अन्नादि जीवनोपयोगी वस्तुओंकी समस्या निकट-भविष्यमें नहीं सुलझेगी । प्रभावशाली नेताओंमें तीव्र मतभेद होगा । स्वार्थपरता, हठवादिता, पारस्परिक मतभेद,

दोषारोपण और वैयक्तिक वैमनस्यका विषाक्त विस्फोटक कांग्रेसके राष्ट्रीय शरीरको जर्जरित कर डालेगा। यदि राष्ट्र के कर्णधार कुशल चिकित्सकोंने इस विस्फोटककी सावधानी से उचित चिकित्सा न की तो यह सारे राष्ट्र-शरीरके लिये घातक सिद्ध होगा। जनतंत्रके जन्मलग्नसे कांग्रेसका जन्मलग्न व्ययमें गया है, तथा कांग्रेसका जन्मलग्नेश शनि छठे और भाग्येश शुक्र अस्त हो रहा है अतः इस शुक्रान्तरमें ही कांग्रेस की लोकप्रियता उत्तरोत्तर न्यून होती जायगी। भारत पाकिस्तानके सम्बन्ध अधिक बिगड़ेंगे। काश्मीरमें एक बार पुनः आततायियों द्वारा रक्तपात एवं जन-धनका विनाश होगा। पश्चिमोत्तरीय सीमाप्रान्त, तिब्बत, दक्षिणप्रदेश तथा पूर्वमें उत्पात अधिक होंगे। परन्तु गणराज्यकी ओरसे इन सबका साहस पूर्वक प्रतिरोध करते हुए विघ्नों पर विजय प्राप्त की जायेगी।

## द्वादश भावफल

(१) लग्नमें राहु मंगलसे दृष्ट है और लग्नेश निर्बली है अतः आरम्भमें भारतीय सर्वसाधारण जनताकी शारीरिक एवं मानसिक स्थिति सन्तोषप्रद न रहेगी। कई प्रान्तोंमें विरोधियोंकी ओरसे शासन शकटके सामने भारी रोड़े अटकाये जानेकी कुचेष्टाएं की जावेंगी, किन्तु लग्नेश गुरु लाभमें है यह उच्च-राशि कर्कमें जानेपर ( पांचवर्ष बाद ) आर्य-नीति द्वारा राष्ट्रको उत्तरोत्तर स्वस्थ एवं समृद्ध बनाने लगेगा।

(२) धनेश मंगल केतुके साथ है और केमद्रुम योग भी बन रहा है अतः आरम्भमें भारतकी आर्थिक स्थिति सन्तोषप्रद न रहेगी। भौमदृष्टिके कारण कई प्रान्त (राज्य) ऋण ग्रस्त होंगे। जनसाधारण दरिद्रता के पाशसे मुक्त न हो सकेगा। राज्यके सामने आर्थिक संकट उग्ररूपमें उपस्थित होगा। दुर्भिक्ष और करों ( टेक्सों ) के बोझसे जनता प्रपीड़ित होकर महर्षि व्यासके "दुर्भिक्ष कर पीड़िताः" शब्दकी सत्यताका प्रत्यक्ष अनुभव करने लगेगी। धनभावमें बलवान् चन्द्रमा स्वनवांशमें होनेके कारण भारत भविष्यमें अपने उद्योगसे आर्थिक स्थितिको सुधार लेगा। दो वर्ष के उपरान्त स्थिति सम्हल जायेगी।

(३) तृतीयेश शुक्र लाभमें लग्नेशके साथ है अतः भारतके उद्योग, व्यवसाय, यातायातके साधन रेल, तार, डाक मोटर एव विदेशी व्यापारमें महत्वपूर्ण कार्य होंगे। पराक्रमेश जलचर राशि में है अतः समुद्री व्यापार एवं जहाजरानी पर भारत का पूर्ण अधिकार होगा। मोटर रेलके इञ्जिन आदि बनानेके कारखाने यहां खुलेंगे।

(४) चतुर्थेश बुध राज्य स्थान ( केन्द्र ) में है अतः खेती बाड़ी तथा भूमि सम्बन्धी कार्योंमें पर्याप्त प्रगति होगी। कृषि एवं उपज-वृद्धिके लिए नयी योजनाएं बनेंगी। नये-नये बान्ध एवं सड़कोंका विस्तार होगा। किन्तु चतुर्थेश मंगल हर्शलसे दृष्ट है। अतः आगामी दो वर्षों तक पूर्ण प्रयत्न करने पर भी भारतका कृषि उद्योग पूर्णरूपेण विकसित व समाधान कारक न बन सकेगा। कहीं अवर्षण तो कहीं प्रकृतिप्रकोपसे फसलमें हानि होकर अन्न-संकट बना रहेगा। गृह-विभाग यशस्वी होगा।

(५) पंचमेश चन्द्रमा बलवान् है और पंचमभाव सू० गु० शु० से दृष्ट है अतः बौद्धिक विकास तथा विज्ञानमें भारत पर्याप्त उन्नति करेगा। शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण परिवर्तन होंगे। शुक्रमहादशामें ही भारतीय वैज्ञानिक परमाणु-शक्तिका अनुसन्धान करेंगे और उस में उन्हें पर्याप्त सफलता मिलेगी। नवविधान में बहुत बाधाएं उपस्थित होंगी और विरोधीतत्व विधानकी अवहेलना करके जनतामें असन्तोष भड़कायेंगे।

(६) षष्ठेश सूर्य लग्नेशके साथ लाभमें मंगलसे त्रिकोण योग बना रहा है, अतः भारत की जल, स्थल, नभ सेनाओंमें पर्याप्त सुधार होगा। सैनिक संगठन सुदृढ होगा। लग्नेश षष्ठेशका योग आरम्भमें अनेक

शत्रु उत्पन्न करने वाला है। बाह्य एवं आन्तरिक शत्रु गणराज्यको हानि पहुंचानेकी ताक में रहेंगे, किन्तु शासक-वर्गकी सतर्कतासे वे अपने दुष्प्रयत्नमें सफल न हो सकेंगे।

(७) सप्तमेश केन्द्र में है अतः विदेशोंसे भारतका सम्बन्ध सहानुभूति पूर्ण रहेगा। वाणिज्य व्यवसायमें उन्नति होगी। इधर बुध सौम्य-स्वभाव बालसुलभ प्रकृतिका ग्रह राज्य में गया है और उधर महान् कूटनीतिज्ञ नेपच्यून मंगलके साथ सप्तममें पड़ा है यह भारत को शान्तिके आवरण वा राजनैतिक भूल-भुलैयां में डाल कर प्रच्छन्नरूपेण कूटनीतिज्ञ अनार्य लोगोंके स्वार्थ-साधनका केन्द्र बनानेकी कुचेष्टा करेगा, अतः मंगल नेपच्यूनके वैदेशिक षड्यन्त्रोंसे भारत को सदा सतर्क रहना होगा।

(८) अष्टमेश लग्नेशके साथ निर्बल है अतः अभी भारतमें रोग, दुर्भिक्ष, उपद्रवादि के द्वारा मृत्यु संख्यामें कमी न होगी। आरम्भिक शुक्रान्तर में ही किन्हीं दो प्रमुख राजपुरुषों के निधनसे भारत को आघात पहुंचेगा।

(९) भाग्येश मंगल नेपच्यून व केतुसे पीड़ित हैं और गुरु भी नीचका है, अतः आरम्भ में धार्मिक आर्य-प्रकृतिके लोगों पर अनेक आपत्तियां आयेंगी। धर्मका ह्रास होगा! एक बार भारतमें धार्मिक सामाजिक क्रान्ति होगी। तदनन्तर सं०२०१२ से आगे भारत पूर्ण रूपेण सुखी एवं समृद्ध हो सकेगा।

(१०) राज्येश गुरु नीच और निर्बल है तथा राज्य भावमें बाल-स्वभाव नपुंसक ग्रह बुध बैठा है, अतः गणराज्यके बाल्यकाल में (विशेषकर पांच वर्ष तक) अनेक आपत्तियां आवेंगी। इन बालारिष्ट योगों से निकलनेके उपरान्त यह राज्य यशस्वी एवं सफल होगा। वैधानिक राजनियमोंमें पर्याप्त परिवर्तन होगा। केन्द्रिय एवं प्रान्तीय मन्त्रि-मण्डलोंमें अकल्पित उलट फेर होंगे।

(११) लाभेश शनि छठे और लाभभावमें गुरु शुक्र निर्बल हैं, अतः आरम्भमें भारतीय आय या उत्पादन-शक्ति सन्तोषजनक न रहेगी। औद्यौगिक मामलों में व्यय विशेष होगा। जन-साधारण वर्ग अपनी आय से जीवनस्तरको उन्नत न बना सकेगा।

(१२) व्ययेश शनि छठे हैं, अतः व्यापारिक औद्यौगिक यांत्रिक एवं सुरक्षाके सम्बन्ध में व्यय अधिक होगा। मंगल से द्विर्द्वादश योग होने के कारण पड़ोसी राष्ट्र (पाकिस्तान) से आन्तरिक आर्थिक सम्बन्ध सन्तोषजनक न होंगे। सीमा विवाद बढ़ेंगे। गुरुके कुम्भ में आने पर कुछ समय के लिये चाहे भले ही शान्ति दिखाई दे पर वह अस्थायी होगी। शनि अनार्य जनता के अन्तःकरण को कभी शुद्ध न होने देगा।

अन्त में हम यह भी बता देना चाहते हैं कि इस वर्ष ता० २६ जनवरी को भीष्माष्टमी का पुण्य पर्व भी था। इसी दिन भारतीय गणराज्यके प्रथम राष्ट्रपति तथा अन्य अधिकारियों ने प्रतिज्ञा ग्रहण की, अतः राष्ट्रपति एवं मंत्रिमण्डल की प्रतिज्ञा में 'भीष्म-प्रतिज्ञा' की भांति ही दृढता व सत्यनिष्ठा रहनी चाहिए। संसार की बड़ी से बड़ी कोई भी शक्ति उन्हें अपनी प्रतिज्ञा से विचलित न कर सके। महाभारत के महारथी भीष्मपितामह के समान तप त्याग नीति-नैपुण्य और कष्टसहिष्णुता हमारे राष्ट्रनायकों के जीवन का व्रत हो, यही इस शुभावसर पर हमारी मंगल-कामना है।

## संसार चक्र पर सं० २००७ की ग्रहपरिषद् का प्रभाव

सं० २००७ की ग्रहपरिषद् के दशाधिकारियों में ५ अधिकार शुभ और पांच पापग्रहोंको प्राप्त हुए हैं। इस वर्ष के सर्वाधिकारी वा सम्राट् सूर्य और प्रधानमंत्री गुरुदेव हैं वर्षप्रवेश लग्न में सूर्य चन्द्र राहु से युक्त

छठे भाव में मंगल केतु से दृष्ट है और इन्हीं सम्राट् सूर्य से व्यय में प्रधानमंत्री गुरुदेव नपुंसक बुध के साथ बैठे हैं, शनिमहाराज की इन पर वक्र दृष्टि भी है। और आश्विन कृष्ण ३० को कन्या राशि में षड्ग्रही योग एवं आगे माघ फाल्गुन में कुम्भराशि में दो बार पञ्चग्रही योग होगा। वर्षारम्भ में ही शनि मंगल वक्री और गुरु अतिचारी हैं। सम्राट की आत्मा और वर्ष के अधिनायक सूर्यदेव राहु से पीड़ित हो रहे हैं, तथा प्रधानमंत्री गुरुदेव भी शनि राहु के कुप्रभाव में फंसे हैं। इन सब योगों का सम्यक्तया विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि यह वर्ष संसार के लिए अनेक प्रकार की उलझनें, आर्थिक संकट, धार्मिक सामाजिक और राजनैतिक क्रान्ति युद्धभय रोग दुर्भिक्ष आंधी तूफान, अवर्षण अतिवर्षण, उत्पात अग्निकाण्डादि अनेक अप्रिय अकल्पित घटनाओं को लेकर आ रहा है। विश्वकी महाशक्तियों के सामने अनेक विषम-समस्याएं उत्पन्न होंगी। समस्त संसार की राजनैतिक और आर्थिक स्थिति सङ्कटापन्नावस्था में हो बनी रहेगी। छोटे-बड़े राष्ट्रों और प्राणिमात्र में पारस्परिक स्नेह सद्भावना तथा विश्वासका अभाव रहेगा। गुरु शनि राहु के कुप्रभाव में होने के कारण आर्यजनता और सज्जन प्रकृति के लोगों पर विशेष आपत्तियां आयेंगी। खाद्यपदार्थ और वस्त्रादि आवश्यक पदार्थों की विशेष सुलभता न हो सकेगी। शनि मंगल के कारण इस वर्ष संसार के सभी शक्तिशाली राष्ट्र शस्त्रास्त्र-निर्माण, सैन्य संगठन में संलग्न रहेंगे। अणुबम से भी भयानक नवीन प्रलयङ्कर अस्त्रों का आविष्कार होगा। कन्या का मंगल और शनि संसार में युद्धभय, दुर्भिक्ष और काश्मीर में पुनः विग्रह कारक है। तथा–

> कर्कमीनमृगस्त्रीषु शनिभौमौ यदा स्थितौ।
> तदा युद्धाकुलापृथ्वी धनधान्य विवर्जिता ॥
> 'काश्मीरं याति नाशं हयखुरदलित विग्रहं तत्र कुर्यात्।'

कन्या के मंगल केतु नेपच्यून और आगे कन्या राशिस्थ शनि तथा पञ्चग्रही षड्ग्रही योग के प्रभावसे भारत टर्की अफगानिस्तान पाकिस्तान मिश्र तिब्बत चीन नेपाल बर्मा हिन्देशिया हिन्दचीन स्पेन पुर्तगाल यरूसलम ब्राजील इङ्गलैंड मध्यएशिया मध्य-पूर्व फ्रांस इटली श्याम और मलायामें राजनैतिक साम्प्रदायिक उत्तेजना तथा आधिदैविक आधिभौतिक उत्पातोंसे अशांति बढ़कर यत्र-तत्र श्रेणि संघर्ष छिड़ जाएगा। संक्रामकरोग फैलेंगे, अग्निकांड होंगे, आंधी बवण्डर और समुद्री तूफान आवेंगे, यान दुर्घटनाएं होंगी। सैनिक व्यय बढ़ेगा। वर्षका सम्राट सूर्य शत्रु भावमें राहुसे पीड़ित और मगल केतु इन्द्रसे दृष्ट होनेके कारण संसारके किसी महान् शासककी दुर्घटनासे मृत्यु होगी। पौषसे वैशाख सं० २००८ तक संसारके कई भागोंमें भूकम्प ज्वालामुखीस्फ़ोट वा प्राकृतिक उपद्रव से हानि होगी। गतवर्षके पञ्चांगमें पृष्ठ ३४ पर हमने स्पष्ट लिखा था कि—'सिंहके शनिमें संसार भरमें रूसीसाम्यवाद या कम्युनिज्मका भय बढ़ता जाएगा।' आगे पृष्ठ ४० में लिखा था कि 'वर्षारम्भमें मीन रशि में पञ्चग्रह योग चीन और च्यांगके लिए दुर्भाग्य पूर्णस्थिति उत्पन्न करने वाले हैं। वर्षारम्भमें ही च्यांग का पतन हो जाय और भाद्रपद तक प्रायः समस्त चीन कम्युनिस्ट प्रभाव क्षेत्रमें चला जाए तो कोई आश्चर्य नहीं।'

गतवर्षकी लिखी हुई उक्त पंक्तियां अक्षरशः सत्य सिद्ध हो चुके हैं। पूर्वी भारत (कलकत्ता बंगाल आदि) और दक्षिणमें विशेष रूपसे तथा सामान्यतया सर्वत्र ही साम्यवादियों (कम्यूनिस्टों) द्वारा जो षड्यंत्र एवं विनाशक कार्यवाहियां भारतमें हो रही हैं उनसे पाठक परिचित ही हैं। अब शनि कन्याराशिमें इन्द्र (नेप्च्यून) के साथ योग करेगा और वरुण (हर्शल) से केन्द्रयोग बनावेगा। अतः इस वर्षमें भी साम्यवादका प्रभाव बढ़ता जायेगा। इन्द्र (नेप्च्यून) और केतुके साथ कन्याके मंगलमें ही सौर श्रावणमास (जुलाईके

अन्त तक तिब्बत कम्यूनिस्टोंके प्रभावमें चला जाए तो कोई आश्चर्य नहीं। आगे कन्याके शनिमें पूर्वोत्तर से साम्यवादियोंकी गति विधि पश्चिम दक्षिणकी ओर क्रमशः बढ़ने लगेगी। सं० २०१५ वि० तक भारत और संसार रूसी साम्यवादके भय से मुक्त न हो सकेगा।

## भारत

गत माघ शु० ८ ता० २६ जनवरीको भारत पूर्ण रूपेण सर्वतन्त्रस्वतन्त्र जनतन्त्रात्मक गणराज्य बन गया है। इसकी जन्मकुण्डली और भविष्यविचार आरम्भ में ही दिया जा चुका है। सं० २००७ की भारतीय चान्द्रवर्ष प्रवेश कुण्डली में वर्षराज सूर्य और राज्येश चन्द्रमा शत्रुभाव में राहु से पीड़ित हैं, तथा जगल्लग्न से राज्येश सूर्य भी शत्रुभाव में गया है, इस ग्रहस्थितिको देखते हुए हमें प्रतीत होता है कि भारत के गुप्त शत्रु एवं विरोधीतत्व इसकी प्रगति में बाधा डालने के लिए सभी उपयों का अवलम्बन करेंगे। भारत साम्प्रदायिकता प्रान्तीयता और साम्यवाद ( कम्यूनिज्म ) रूपी तीन दैत्यों से आक्रान्त होगा। अतः भारत के शासन-सूत्र-सञ्चालक प्रधान पुरुषों को जागरूक रहकर सदसद्विवेक बुद्धि से पूर्ण सतर्क एवं सावधान रहने की आवश्यकता है। यद्यपि वर्षलग्न और जगल्लग्न कुण्डलियों में भारत तथा दिल्लीकी राशियां शुभस्थानमें गयी हैं और प्रधानमन्त्री श्री नेहरूजीका जन्मलग्न और राशि दोनों कुण्डलियों में केन्द्रत्रिकोणस्थ हैं, एवं राष्ट्रपतिका वर्ष बलवान् है, अतः इस वर्ष गणराज्य सभी प्रकारकी आपत्तियोंका सबल हाथोंसे प्रतीकार करता हुआ भारतको उन्नतिकी ओर अग्रसर करेगा इसमें सन्देह नहीं। तथापि इस वर्ष में विशेषकर वर्षारम्भ से श्रावण (जुलाई) मास तक और फिर पौष (जनवरी १९५१) से आगे का समय भारतीय राजनीतिमें सङ्कटका द्योतक है। मध्यम-श्रेणी श्रमिकवर्ग एवं राज्य-कर्मचारियोंमें असन्तोष बढ़कर कई कारखानों, यातायात एवं मनोरञ्जनके उद्योगों तथा राजकीय विभागोंमें एकाधिकार गतिरोध (हड़तालादि) का भय उपस्थित होगा। मजदूर नेता स्वेच्छाचारी होंगे। नेताओंके भरसक प्रयत्न करने पर भी चोर-बाजारी और भ्रष्टाचार का अन्त नहीं हो सकेगा। अनेक राजनैतिक साम्प्रदायिक-दलो (कांग्रेस साम्यवादी और आर्य-संस्कृति प्रधान हिन्दू संगठनों) में परस्पर विरोध होकर नये विधान (कानून) के प्रति उपेक्षा बढ़ेगी। आर्थिक क्षेत्रमें मुद्रास्फीति अपना कुप्रभाव दिखावेगी। भारत-पाक सम्बन्ध बिगड़ कर टूटनेकी स्थितिमें पहुंचेंगे। भारतकी सीमाओं पर पकिस्तान द्वारा छोटेमोटे आक्रमण होंगे। सीमाप्रदेशकी जनता लूटमारके भयसे सन्त्रस्त रहेगी। आन्ध्र बंगाल उड़ीसा और आसाममें तीव्र रोग-विस्तार वा पारस्परिक विद्रोहसे अशांति फैलेगी। वीर्य सम्बन्धी रोग और व्यभिचारकी मात्रा बढ़ेगी। दलबन्दी श्रेणीसंघर्ष अव्यवस्था और स्वार्थपरताका बोलबाला रहेगा कुछ लोग अन्न वस्त्र एवं आश्रयस्थानके अभाव एवं बेकारोसे और कुछ साम्प्रदायिकताके शिकार बनकर अपना तथा राष्ट्रका अहित करेंगे। किसी एक केन्द्रीय बड़े अधिकारी वा गवर्नर और एक राजप्रमुख एवं किसी सेनापतिके निधन अथवा आकस्मिक आपत्ति में फंसनेका योग बन रहा है, सावधान रहें। वर्षलग्न में धनेश मंगल व्ययमें हैं और जगल्लग्नमें धनभाव पर मंगलको दृष्टि है अतः इस वर्ष भारतकी आर्थिक-स्थिति सन्तोषप्रद न रहेगी। मंगलके कारण खनिज-पदार्थ, उत्पादन; निर्माण-कार्य सुरक्षा तथा सैनिक संगठनमें व्यय विशेष होगा। दोनों कुण्डलियोंमें गुरु शुक्र केन्द्र (चतुर्थ) त्रिकोण में गये हैं, अतः खेती बाड़ी तथा भूमि सम्बन्धी कार्योंमें प्रगति होगी। कृषि एवं उपज वृद्धिके लिए नई नई योजनाएं बनेंगी। चतुर्थेश शनि शत्रु राशिस्थ होनेके कारण भारतका कृषि उद्योग पूर्णरूपेण समाधान कारक न हो सकेगा। कई प्रान्तोंमें अवर्षण अतिवर्षण वा प्रकृतिप्रकोपसे दुर्भिक्ष जैसी स्थिति बनी रहेगी।

चैत्र वैशाख मासमें रक्तविकार विषूचिकादि रोग

भय अन्न वा फल पुष्पोंकी हानि, आर्थिक संकट और राजनैतिक सामाजिक धार्मिक आन्दोलन अधिक होंगे, काश्मीरको स्थिति गम्भीर बनेगी, प्रजामें विग्रह एवं युद्धका भय बढ़ेगा। ज्येष्ठमें आंधी तूफान अग्निकाण्डादि उपद्रव होगे, सांसर्गिक रोग फैलेगा, कारखानोंमें विस्फोट होगा, गरमी भयानक होगी। प्रथम आषाढ़में देश की स्थिति सुधरती दीखेगी, खनिज पदार्थके भावोंमें अस्थिरता रहेगी। द्वितीय आषाढ़में वायवीय उत्पात होगा। दोनों आषाढ राजनैतिक स्थितिके लिए उत्तम नहीं हैं। पूर्वोत्तरमें क्रांति होगी। श्रावणमें गृहकलह, खण्डवृष्टि, पूर्वीय भागोंमें उपद्रव या रोगवृद्धि। भाद्रपद आश्विनमें आर्थिक संकट दुर्भिक्षसे प्रजामें असन्तोष, जलप्लावन, भयंकर हत्याकाण्ड वा आधिभौतिक उत्पात, किसी प्रभावशाली व्यक्तिका देहावसान, जनपीड़न और पूर्वी प्रदेशसे जनताके गृहत्यागका योग बन रहा है, सम्भवतः उक्त अवधिमें पूर्वीय पाकिस्तानसे हिन्दुओंको बड़ी संख्यामें भागना पड़े। कार्तिक मार्गशीर्षमें देश भरमें शान्तिका वातावरण बनानेके प्रयत्न होंगे, धार्मिक जागृति होगी, आरम्भमें शुभ लक्षण दिखाई देंगे। पौष माघ—राजनैतिक हलचलें दूषित होंगी, दोनों मास शान्तिकी दृष्टिसे शुभ नहीं है, राजकीय योजनाएं कार्यरूपमें परिणत होंगी। हिन्दू संगठन सुदृढ़ होगा, वर्षा हिमपात वा ओलोंसे फसल में हानि होगी। फाल्गुन चैत्र—राजनैतिक और आर्थिक क्रांति होगी, अकल्पित घटनाएं घटेंगी।

भारतीय कांग्रेस　कांग्रेस का जन्म लग्न कुम्भ है, इसका स्वामी शनि इस वर्ष गोचरभ्रमणसे अष्टम जन्मराशिमें जा रहा है, यह कांग्रेसकी प्रतिष्टा एवं लोकप्रियताके लिए अनुकूल नहीं है। कन्याके शनिमें ही कांग्रेसके किन्ही दो ख्यातिप्राप्त वयोवृद्ध व्यक्तियों का निधन होगा। पूर्व और दक्षिण प्रदेशोंमें कांग्रेस का प्रभाव बहुत न्यून होता जायेगा। पारस्परिक फूट और अनुशासन-भङ्गसे शासन कार्योंमें बहुत कठिनाइयां आवेंगी। कई प्रांतों के सत्तारूढ़ कांग्रेसियो पर जनताकी ओरसे भयकर आरोप लगाये जायेंगे। कांग्रेस नेताओंकी वाणी और कर्ममें सामञ्जस्य नहीं रहेगा। शनि कांग्रेसज्नोंमें दुर्बलता पदलोलुपता स्वार्थपरता द्वेष और चरित्रहीनताको बढ़ाने वाला है। कुम्भका गुरु कांग्रेसके लग्नमें आ रहा है. यह कांग्रेसका नष्टप्राय प्रतिष्ठाको कुछ कालके लिए पुनः जीवनदान देनेमें सहायक होगा। किसो प्रभावशाली वयोवृद्ध नेता के सत्प्रयत्नसे वर्ष के उत्तरार्ध में कांग्रेसमें सुस्थितिका निर्माण होकर दृढ संगठन होगा। भावो चुनावोंमें कांग्रेसकी ओरसे पूर्णप्रयत्न और प्रचारके फलस्वरूप कुछ बहुमतसे सफलता मिलेगी। अभी कुम्भ और मीनका गुरु ( दो वर्ष तक ) कांग्रेस की प्रतिष्ठाको सर्वथा नष्ट होनेसे-बचा लेगा कुछ प्रान्तोंमें विरोधी दल को भी सफलता मिलेगी और वहां संयुक्त शासन ( मिली जुली सरकार ) बनेगा।

काश्मीर — गतवर्ष के पंचांग में हमने लिखा था कि—'काश्मीर की समस्या इस वर्ष नहीं सुलझेगी जटिल समस्याओं के कारण जनमत स्थगित हो जायेगा।" तदनुसार जो हुआ वह पाठकों के सामने ही है। अब सं० २००७ के ग्रहयोग भी काश्मीर के लिए उत्तम नहीं हैं। यह प्रश्न इस वर्ष में भी शीघ्र और सरल मार्ग से नहीं सुलझेगा। काश्मीर का प्रश्न एक बार सारे विश्व में हलचल मचा देगा। मध्यस्थ या सुरक्षापरिषद शांति पूर्ण ढंग से समझौता कराने में सर्वथा असमर्थ रहेंगे। कन्या के शनि में काश्मीर में भयानक विग्रह और जन धनका विनाश होगा। लिखा भी है—"काश्मीरं याति नाशं हयखुरदलितं विग्रहं तत्र कुर्यात्।" वर्षारम्भ में कन्या के मंगल केतु द्वन्द्व ( नेपच्यून ) योग में ही काश्मीर में लोहा बजने की स्थिति उत्पन्न हो जाये तो कोई आश्चर्य नहीं। मंगल शनि के कारण वहां किसी बड़े सेनापति वा नेता की हत्या होना सम्भव है। शेख अब्दुल्ला और

उनकी सरकार को पाकिस्तानी गुण्डों के षड्यन्त्रों से सदा सतर्क रहना चाहिए।

प्रान्त और राज्यसंघ—बंगाल आसाम पंजाब बिहार बृहद्राजस्थान और मध्यभारत की राजनैतिक आर्थिक स्थिति सन्तोषजनक न रहेगी। पंजाब और राजस्थान पर शनिका कुप्रभाव होने से इन प्रान्तों में शासन सम्बन्धी अनेक कठिनाइयां आवेंगी। मन्त्रि-मण्डल डांवाडोल होंगे। साम्प्रदायिक संघर्ष और चोरी डाके हत्याकांड आदि अधिक होंगे। राजस्थान और पंजाब की पश्चिमोत्तरीय सीमाओं पर शत्रु द्वारा छोटे-मोटे आक्रमण होंगे। राजस्थान के शास्त्री-मन्त्रि-मडल और पंजाब के भार्गवदल के विरुद्ध जनता में तीव्र असन्तोष फैलेगा। मध्यभारत बंगाल आसाम बिहार और पटियाला संघ के पदाधिकारियों में आन्त-रिक कलह से उन्नति में बाधा होगी। बम्बई संयुक्त प्रान्त ( उत्तर प्रदेश ) सौराष्ट्र मद्रास और हिमाचल प्रदेश में कृषि-सुधार खनिज पदार्थों की खोज और शिक्षा सम्बन्धी कार्यों में प्रगति होगी। राजस्थन तथा पूर्व और—दक्षिणी प्रदेशों में दुर्भिक्ष के साथ ही कई जगह अराजकता फैलेगी।

पाकिस्तान गतवर्ष के पञ्चांगमें पाकिस्तानकी गतिविधिके सम्बन्धमें पर्याप्त प्रकाश डाल चुके हैं। तदनुसार निकट भविष्यमें ( सं० २०१० से पूर्व ) विस्थापित लोगोंको पुनः अपने घरोंमें जानेकी आशा नहीं रखनी चाहिये। इस वर्ष पाकिस्तान सैनिक तैयारी और शस्त्रास्त्रोंमें वृद्धि विशेषरूपसे करेगा। भारतके साथ कुटिलता का व्यवहार करेगा। भावना निरन्तर युद्धकी रहेगी। अन्नादि पदार्थकी न्यूनता न होनेपर भी आर्थिक संकट रहेग। रोग फैलेगा। जनता गवर्नमेंटके विरुद्ध रहेगी। प्रभावशाली अधिकारीकी मृत्यु होगी। सीमाप्रांत का कुछ भाग पाकिस्तानसे निकल जाएगा। आन्तरिक विद्रोह और अफगानिस्तान आदि पड़ौसी राष्ट्रोंसे मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध न होनेसे पाकिस्तानकी नींव हिलने लगेगी।

व्यापार—वर्षलग्न और जगल्लग्नमें व्यापारेश छठे भावमें गया है अतः व्यापारकी स्थिति इस वर्षमें भी सन्तोषजनक न रहेगी। जीवनोपयोगी आवश्यक वस्तुएं जनता को सस्ते भावमें सर्वसुलभ न हो सकेंगी। अन्नादि पदार्थोंसे कन्ट्रोल पूर्णरूपेण नहीं हटेगा। राज-कीय नियन्त्रण वा कन्ट्रोलका लाभ उठाकर अधिकांश व्यापारी एवं निम्न अधिकारी कालाबाजार एवं घूस-खोरीसे जनताके कष्टोंका कारण बनेंगे। वर्षके उत्तरार्ध में भयानक क्रांति होगी। जो व्यापारी अपनी ग्रहदशा के अनुकूल कार्य करेंगे वे ही लाभमें रहेंगे। प्रतिकूल स्थिति वाले भयानक स्थिति में फंसेंगे। वर्षके उत्तरार्ध में अन्न धान्य और रुईके भाव बहुत नीचे गिरेंगे। विदेशोंसे आयात अधिक होगा। रुईमें वर्षके उत्तरार्ध में ४०) ५०) टूट जाय तो कोई आश्चर्य नहीं। श्रावण शुक्ल और फाल्गुन मास में रुईमें ३०) से ५०) तेजी मंदी आजाना सम्भव है। पहली फसल साधारण रहकर दूसरी फसल अच्छी होगी। तिल तेल अलसी सरसों अरण्डा लोहा चांदी सोना और चणाके भाव भाद्रपदसे कार्तिक तक तेज रहकर आगे बहुत मंदे होंगे। शेयर बाजार प्रथम आषाढ़ तक मंदीमें चलेगा। कार्तिक मार्गशीर्ष में अलसी विशेष मंदी होंगी। वैशाख ज्येष्ठमें तक एकबार सोना चांदी में मंदीका झटका आवेगा। गेहूं घृत गुड़ वर्षारम्भमें ज्येष्ठ तक कुछ मंदे रहेंगे आषाढ़ श्रावण में विशेष तेज होंगे। माघ फाल्गुनमें भी गेहूं आदि अन्न रस पदार्थ तेज रहेंगे। कहीं अनावृष्टि और कहीं शीत ओले आदि से फसलमें हानि होगी पूर्वी भारत पश्चिमी राजस्थान और दक्षिण में अन्न संकट रहेगा। पौष से आगे लाल रंगकी वस्तुएं तेज होंगी। वर्षारम्भमेंही तृण घास का संग्रह लाभप्रद है। इस वर्षमें कई वस्तुएं अचानक मंदी होंगी. किन्तु यह मंदी अस्थायी होकर फिर भाव ऊंचे चढ़ जावेंगे।

## भारत का वायुमण्डल वर्षा आदि

इस वर्षके ग्रहयोग देशके वायुमण्डल और पर्जन्य के लिए शुभ नहीं है। वर्षारम्भ में ही केतुके साथ

मंगल और शनिका वक्रावस्थामें द्विर्द्वादशयोग ऋतुवैपरीत्यका सूचक है। चैत्रसे आषाढ़ तक वायु जोर से चलेगा, आंधियां आवेंगी, अग्निकांड होंगे और कहीं कहीं वर्षा भी होगी। इस वर्षमें भारतके पूर्वी तटपर जलप्लावन और पश्चिमी तटपर १५ से २५ अक्षांश के मध्यवर्ती नगरों में आंधी बवण्डरों से बहुत हानि होगी। आषाढ़ से कार्तिक तक भूकम्प और प्राकृतिक उत्पात अधिक होंगे। श्रावण आश्विन तक कहीं खण्डवृष्टि और वायु बादलोंके तूफानसे हानि होगी। अनेक नदियोंमें बाढ़ आवेगी। सिन्ध गंगा कृष्णा नर्मदा और गोदावरीकी बाढ़से विशेष हानि होगी। उत्तरीय भारतमें शीत अधिक पड़ेगा। वर्षके उत्तरार्धमें वायुविकार और सांसर्गिक रोग अधिक फैलेंगे।

धार्मिक—वर्षलग्नमें धर्मेश बुध त्रिकोण गुरुसे युक्त और जगल्लग्नमें धर्मेश चन्द्र केन्द्रमें गुरु शुक्रसे युक्त होनेके कारण इस वर्षके पूर्वार्धमें भारतीय जनता की धार्मिक प्रवृत्तियां बढ़ती हुई दिखाई देंगी। यज्ञानुष्ठान दान जपादि होंगे। सनातन धर्म और आर्यसंस्कृतिका सुदृढ़ संगठन होगा। वर्षके उत्तरार्धमें हिन्दू महासभा रा० स्व० संघ और धर्मसंघ विशेष बलशाली बनेगा। इनकी ओरसे धर्मविरोधी साम्यवादी प्रचार को रोकनेके सफल प्रयत्न होंगे। धर्मप्रेमी आर्यजनता रूसी साम्यवाद के आदर्श को स्वीकार नहीं करेगी। हिन्दुकोडबिलके सम्बन्ध में हमने गतवर्ष के पञ्चांग में पृष्ठ ३६ पर स्पष्ट लिखा था कि—

'हिंदूकोडबिलका प्रबल विरोध होने पर भी इसके तथाकथित प्रजातंत्रीस्रष्टा अवधि आगे बढ़ाते २ कुछेकसंशोधनोंके आवरणमें हठात् एक बार तो समस्त हिंदू जनता पर लादने का दुस्साहस कर ही बैठेंगे।'

हमारी उक्त पंक्तियां अक्षरशः सत्य सिद्ध हो चुकी हैं। अब इस वर्ष में कोडबिल सरकारकी ओरसे तो वैधानिक रूपमें प्रचलित कर दिया जाएगा, किन्तु भारतीय आर्यजनता इसे अविकल रूपमें स्वीकार नही करेगी। संस्कृतभाषा और भारतीय संस्कृतिकी ओर जनता की अभिरुचि बढ़ेगी। अनुदार अकाली सिक्खों की ओरसे इस वर्ष भी पंजाबमें भाषादि साम्प्रदायिक संकुचित प्रश्नोंको लेकर अशांति फैलने का विफल प्रयास किया जाएगा। त्रिविधतापों से सन्तप्त जनता सत्य सनातनधर्म की शरणमें आने लगेगी। जगल्लग्न और वर्षलग्न कुण्डलियोंमें राज्येशसे धर्मेशका कोई सम्बन्ध नहीं है, अतः इस वर्ष राज्यकी शासन व्यवस्थामें धर्मका कोई स्थान न रहेगा। वर्षलग्नेश शुक्र (स्त्रीकारक) केन्द्रमें है और जगल्लग्नसे सप्तमेश शुक्रभी नवमेश चन्द्र गुरुके साथ केन्द्रमें है। अतः इस वर्षमें शिक्षाकला व्यवसायादि प्रत्येक क्षेत्रोंमें स्त्रियां अग्रसर होंगी और पुरुषोंकी अपेक्षा स्त्रियोंमें धार्मिक भावना अधिक रहेगी, तथा दो पतिव्रता स्त्रियां सती होकर आदर्श आर्य ललनाओंके पतिव्रत धर्म का गौरव बढ़ायेंगी।

## राष्ट्रके कर्णधार

श्री डा० राजेन्द्रप्रसादजी—३ दिसम्बर १९५० तक आपको ६६ वां वर्ष रहेगा। इसमें आप अपने प्रभाव एवं नीतिकुशलतासे भारतको समुन्नत बनानेका पूर्ण प्रयास करेंगे। संसार में आपका गौरव बढ़ेगा। इस वर्ष आश्विनमासमें आपके राज्यभावमें षडग्रही योग बन रहा है, अतः आरम्भके दो मास और आश्विन से आगे भारतकी केन्द्रीय एवं प्रांतीय समस्याएं आपके लिए चिन्ताका कारण बनेंगी। दिसम्बर १९५० से प्रारम्भ होने वाला ६७ वां वर्ष आपके स्वास्थ्यके लिए विशेष चिन्ताका सूचक है। उस वर्ष के उत्तरार्ध में आपको स्वास्थ्य अथवा अन्य कारण विशेष से विश्राम लेना पड़ेगा।

श्री नेहरूजी—अन्तर्राष्ट्रीय जगत् और राष्ट्र-संघसे आपका गौरव बढ़ेगा। देशकी लम्बी यात्रा होगी। पराक्रम स्थान में आने वाला कन्या का शनि

आपके बल साहस और शौर्य को बढ़ाने वाला है। वर्षारम्भ में अष्टम गुरु मंदाग्नि उदर-विकार और गुप्त शत्रु उत्पन्न करने वाला भी है । वैशाख आश्विन पौष और माघ फाल्गुन स्वास्थ्य के लिए उत्तम नहीं हैं। माघ फाल्गुन में कुम्भ राशि में पंचग्रह योग आपके अष्टम स्थान में हो रहा है, वहां किसी दुर्घटना, शत्रु आक्रमण वा किसी प्रकार के षड्यंत्र द्वारा आपके शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्यको धक्का लगने की सम्भावना है। अतः उक्त अवधि में आपको विशेष सतर्क रहना चाहिए। वर्ष के पूर्वार्ध में ही आपको सुदूर पूर्व की यात्रा करनी होगी। वर्ष के अनिष्टग्रहोंका शांति विधान आपके तथा राष्ट्रकेलिए हितावह सिद्ध होगा।

श्री सरदार पटेल—यह वर्ष स्वास्थ्यके लिए उत्तम नहीं है। वैशाखसे आश्विन और आगे माघ फाल्गुनमें वायु विकार उदरव्याधि शोथ, शैथिल्य हृद्रोग (हार्ट ट्रबल) होनेकी सम्भावना है। स्वास्थ्य निर्बल होते हुए भी यह लोहपुरुष भारत को शत्रुके षड्यन्त्र से बचानेमें समर्थ होगा। भारतमें आपकी लोकप्रियता बढ़ेगी ।

श्री गो० गणेशदत्तजी—धार्मिक और राजनैतिक क्षेत्र में आपका गौरव बढ़ेगा। भाद्रपद में आपको अष्टमशनि आवेगा ( ढैया प्रारम्भ होगी ) अतः भाद्रपद आश्विन और आगे माघ फाल्गुन में वायुविकार उदर व्याधि एवं आंतरिक चिन्ताओं से स्वास्थ्य में निर्बलता व्यापेगी। आरम्भ में ही शनिका पूजनार्चन और लोह-सेवन उत्तम रहेगा।

श्री गोलवलकर—भाद्रपद में कन्या का शनि आपके दशम स्थान में आ रहा है, यह आपके प्रभाव और महत्वाकांक्षाओं को बढ़ाने वाला है। आपकी नीति-कुशलता से राष्ट्रीय स्वयं सेवक-संघको पर्याप्त बल मिलेगा और इस संस्था की ओर जनता का आकर्षण बढ़ता जयेगा। सं० २०१० में तुला का शनि उच्च राशि में श्री गोलवलकर के राज्य और लाभ स्थान में रहेगा, वहां आपको राजनैतिक सफलता मिलकर भारत का उच्च नेतृस्थान प्राप्त होगा।

राजस्थान के महाराज प्रमुख—बृहद् राजस्थान के महाराज प्रमुख श्री महाराणासाहब उदयपुर का जन्मलग्नेश शनि इस वर्ष में गोचरभ्रमण से अष्टम जा रहा है, यह आप के स्वास्थ्य के लिए विशेष चिन्ता जनक है। वायु-विकार मंदाग्नि शोथ शैथिल्य वा उदर-विकार से आपकी शारीरिक स्थिति सहसा बिगड़ने की सम्भावना है। आश्विन मास और इस वर्ष का उत्तार्ध विशेष कष्टप्रद प्रतीत हो रहे हैं। अतः फाल्गुन से प्रवेश होने वाले ६७ वें वर्ष के आरम्भ में ही भगवान् श्रीएकलिङ्गजी ( श्रीमहामृत्युञ्जय ) का पूजनार्चन और शनि गुरु राहु की शांति पूर्ण रूपेण होना परमावश्यक है।

## एशिया अमेरिका और यूरोप

चीन और जापान—सुदूरपूर्व में चीन और जापान की आर्थिक दशा खराब रहेगी। चीन में प्रत्येक वस्तु के मूल्य बहुत ऊंचे जायेंगे इस वर्ष चीन में पूर्ण रूपेण सुख शान्ति का साम्राज्य नहीं रहेगा। दक्षिणी भाग में गुरिल्ला युद्ध चलेगा । साम्यवादी चीन में पुनः आन्तरिक विद्रोह होगा। उच्च राजवर्ग में सहसा परिवर्तन और माउत्सेतुंग पर आक्रमण की सम्भावना है। जापान में भूकम्प से हानि होगी। उद्योग व्यवसाय का विस्तार होगा। वर्तमान गवर्नमेंट अप्रिय होगी। सम्राट् हिरोहितोके लिए वर्ष अच्छा नहीं है, दुर्घटना या षड्यन्त्र में फंसेंगे ।

ब्रह्मदेश, हिन्देशिया, हिन्द-चीन, मलाया और आस्ट्रेलिया—के लिए यह वर्ष शान्ति का नहीं है। आन्तरिक विद्रोह, कम्यूनिष्ट उपद्रव, सैनिक संघर्ष, रोग, दुर्भिक्ष, चोरी, डाके और रक्तपातसे प्रजा त्रस्त रहेगी । वर्ष मध्य तक हिन्दचीन पर कम्यूनिष्ट

चीनका आक्रमण तथा वीएतनाम और फ्रेंचोंमें युद्ध छिड़ जाने की सम्भावना है। हिन्देशिया और मलयमें अराजकता फैलेगी। कन्याका शनि आस्ट्रेलिया और फिलीपाइन्सके प्रधान पुरुषों केलिए अपघातकारक है।

मध्यपूर्व—भाद्रपदमें शाह फरुख और शाह ईरानको साढ़सती प्रारम्भ होगी, यह उनको शारीरिक मानसिक और राजनैतिक कष्ट देने वाली है। मिश्रमें अकल्पित राजनैतिक घटनायें घटेंगी। किसी प्रभावशाली नेताकी हत्या होगी। यहूदियोंका भविष्य उज्ज्वल है। इजराइल जीवनके सभी क्षेत्रोंमें उन्नति करेगा। इजराइलका सीमा विस्तार भी होगा, सम्भव है कि वह मिश्रके किसी भूभागको अपना अंग बनाले। रूस और ईरानके सम्बन्ध अधिक बिगड़ेंगे। तेहरानमें आन्तरिक मतभेद बढ़ेंगे।

अमेरिका—युद्ध सामग्री और सैन्यसंगठनमें व्यय विशेष होगा। भारतसे मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध रहेगा। कन्याके शनिमें रूससे सम्बन्ध अधिक बिगड़ेंगे। मजदूरोंका प्रभाव बढ़ेगा। यातायात उद्योगोंमें हड़तालें और खान एवं वायवीय दुर्घटनाएं होंगी। गुरु ट्रूमैन केलिए अनुकूल रहेगा।

रूस-विज्ञान शस्त्रास्त्र निर्माण और सैन्यसंगठन में पर्याप्त प्रगति करेगा। इस वर्ष का उत्तरार्ध रूसके लिए अच्छा नहीं है, वहां आन्तरिक कलह होगा और श्री स्टालिन का स्वास्थ्य बिगड़ेगा। अमेरिकासे सम्बन्ध तने रहेंगे। पश्चिमी देशोंके साथ निश्शस्त्र युद्ध चलता रहेगा यूरोप और एशियामें रूसप्रेरित साम्यवादियोंके षडयन्त्र बढ़ेंगे। जर्मनीके लिए रूस और पश्चिमी प्रजातन्त्रमें समझौता न हो सकेगा।

इंगलैण्ड—वर्षारम्भमें ही कन्याराशिमें मंगल केतु नेपच्यूनका योग इगलैन्ड की जनताको असन्तुष्ट और परिवर्तनवादी बना रहा है। श्रमिकवर्गमें असन्तोष बढ़कर हड़तालें होंगी इस वर्षमें मजदूर नेताओंको अपना नेतृत्व स्थिर रखना कठिन होगा आर्थिक संकट और जीवनमें कठोरताके कारण एटली सरकारका अस्तित्व सन्देहमें पड़ जाएगा। विदेशियोंके कारण बहुतसे बाजार हाथसे निकल जायेंगे। चर्चिल की लोकप्रियता बढ़ेगी पर स्वास्थ्य उत्तम न रहेगा।

फ्रांस, जर्मनी—सरकार और जनतामें संघर्ष बढ़ेगा। मन्त्रिमण्डलमें परिवर्तन होगा व्यापार बढ़ेगा जनरल डी० गालका प्रभाव बढ़ेगा। कन्याके शनिमें जर्मनीकी आर्थिक दशा अस्थिर रहेगी। नाजी अन्दोलन जैसाही कोई नया अन्दोलन उठेगा। वैशाख ज्येष्ठमें हड़तालों से रूहर प्रदेशके कारखाने बन्द होंगे आगे उद्योग विस्तार होकर जर्मनीका प्रभाव बढ़ेगा।

इटली, स्पेन, यूनान, और तुर्की—इटलीमें कम्यूनिष्टोंका प्रभाव बढ़ेगा। ट्रीएस्ट झगड़ेका स्थान बन जायेगा। राजनैतिक परिवर्तनकी सम्भावना है। स्पेन में फ्रेंको सरकार विरोध होकर अन्तमें आर्थिक सुधार होगा। यूनानमें खाद्य संकट रहेगा। रोग दुर्भिक्षसे मृत्यु संख्या बढ़ेगी। वर्षके पूर्वार्धमें ही तुर्कीमें भूकम्प होगा। कन्याके शनिमें किसी प्रभावशाली व्यक्तिकी मृत्यु होगी। तुर्की और रूसके सम्बन्ध आगे उत्तरोत्तर अधिक बिगड़ने की सम्भावना है।

प्रिय पाठकवृन्द ! राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय जगत् से सम्बन्धित आगामी वर्षमें घटित होने वाली घटनाओंका ज्योतिर्विज्ञानकी दृष्टिसे यथाशक्ति सूक्ष्म पर्यवेक्षण करके यहां उल्लेख किया गया है। आगे "कर्तुमकर्तुं समर्थ" श्रीजगदीश्वर ही हैं; उनकी प्रबलमाया शक्तिके सामने सभी विज्ञान धरे रह जाते हैं, फिर मुझ जैसे अल्पज्ञ व्यक्तिकी तो बात ही क्या है। 'तत्वंज्वात्रेश्वरो वेत्ति नाहं वेद्मि कदाचन'।

( श्रीविश्वविजय पञ्चाङ्ग से )

———

# पानी वाले बाबा

[ लेखक—श्री विद्याधर विद्यालंकार ]

[ गताङ्क से आगे ]

## सिद्ध भाषा

एक दिन कालकासे कसौली को पैदल मार्ग पर जाते हुए पानी वाले महाराजने एक चट्टानको साफ करने को कहा। उसे साथ चलने वालोंने साफ कर दिया। तो उस पर अक्षर लिखे हुए निकले। बड़ी विलक्षण लिपि थी। उसे महाराज ने पढ़कर सबको सुनाया और कहा कि अनेक स्थानों पर सिद्ध भाषा में बहुत सी भारतके लाभकी बातें लिखी हुई हैं। जब भारत में हिन्दू राज्य होगा तब सिद्ध लोग उस भाषा को पढ़ कर स्थान २ पर दबे हुए अनेक रत्न भण्डारोंका लाभ भारतको बतलायेंगे।

## दूध पिलाना

एक दिन शिवजी पर स्त्रियां दूध चढ़ा रही थीं। महाराज ने कहा, तुम जो इनपर दूध चढ़ाती हो क्या ये पीते हैं? स्त्रियों ने कहा 'महाराज यह परम्परा से चला आता है। हम चढ़ाती हैं ये पीते तो नहीं हैं।'

वहां से महाराज घर आए। 'स्त्रियोंने कहा महाराज आप दूध पिलाकर दिखायें' महाराज ने एक गड़वा मांज धोकर मंगाया। उसमें दूध भरकर और ऊपर कटोरी से ढककर रख दिया उस स्थानपर एक शीशेकी अलमारीमें एक छोटी सी श्री कृष्णजीकी तस्वीर चौखटे में जड़ी रखी हुई थी। महाराज आसनपर बैठे थे। दो मिनट चुपचाप रहकर कहने लगे। 'इस दूधको आप पी जावें, थोड़ासा चरणामृत लेने को छोड़दें।' कटोरी उठा कर देखी तो आधा दूध समाप्त हो गया था। इसपर महाराज ने कहा 'अभी तो बहुत पड़ा है। आप एक चुल्लू भर चरणामृत को छोड़कर शेष पी जावें।' इस पर कटोरी उठाकर देखा तो वह एक घूंट छोड़कर शेष सारा ही दूध समाप्त हो चुका था। वह दूधका घूंट चरणामृत रूपमें पास में चारों ओर बैठे हुए स्त्री-पुरुषों में बांट दिया गया। महाराज ने कहा; 'देखो हमसे तो दूध पीलेते हैं। देखो पीलिया या नहीं?'

## पानी बतलाना

महाराज चलते २ पानी जहां जहां धरती के अन्दर उन्हें दीखता बतलाते जाते हैं। इसी प्रकार सोलन कालका, तथा अन्य स्थानों पर चलते २ बतलाते जाते हैं। कहां पर कितनी गहराई में कितनी मोटी धारा पानीकी बहरही है। वह मीठा है या खारा; गर्मीमें सूख जाएगा या बारह महीने रहेगा ये सब बातें महाराज ऐसे ही बतला देते हैं। उन्हें हस्तामलकवत् ये दिव्य दर्शन; दिव्यरस; दिव्य मापतोल सब ज्ञात हो जाता है। कभी २ चलते २ वह रुककर कहते हैं; 'देखो यहां से इतने नीचे पानी की धारा इधर से उधरको जा रही है.' एक दिन हृषीकेशमें हम सब गरुड़ चन्डी जा रहे थे महाराज ने चलते २ रुककर कहा, 'वहां पंप खोदा जा रहा है पर उसमें गंगा के स्रोत का पानी आ घुसा है। ५० कदम चले तो कुआं गंगा की ओर किसी ने खुदवाया था। महाराज ने वहां गंगा का जल ही उस कुएं में जाता दिखला दिया। वह गंगाका छिपा हुआ स्रोत देख रहे थे। हमें भी दिखलाया।'

## तिनकों पर पत्थर जमना

गरुड़चन्डी के ऊपर एक जल प्रपात है उस में तिनकों और लकड़ियों पर पत्थर के सदृश एक ठोस पदार्थ जम जाता है। एक वार इन तिनकों और लकड़ियों को देखकर स्वर्गीय महेश चरण सिंह एम०

एस० सी० प्रो गुरुकुल कांगड़ी ने यह दोहा लिख कर उन पर लगवाकर गुरुकुल प्रदर्शनी में रख दिया था –

'लकड़ी जम पत्थर भई, तृण जम भए पाषाण ।
प्रभुकी महिमा देखिए; भए आन से आन ॥'

लोगोंमें यह प्रसिद्ध था कि यही शैलोदक है। अर्थात् इस जलमें जो वस्तु डालो वही पत्थर की हो जाती है। वास्तवमें यही प्रत्यक्ष दीखता था। पर रसायन शास्त्री भी पानीका विश्लेषण करके जान न सके थे कि वास्तवमें पानीमें दोष या गुण है या कोई और ही भेद है।

महाराज भी वहां गए। उन्हें तो भूमिके अन्दरका सब कुछ दीखता था। उन्होंने देखा, स्वयं परीक्षा की और फिर वैद्य ज्ञानचन्द जी सनातन धर्म फार्मेसी हरिद्वार को भी वहां पर पैर धरवाकर प्रत्यक्ष करवा दिया कि महाराज जी को ही बात सत्य है। बात यह थी कि १२०० फिट नीचे एल्यूमोनियम की खान है। वहां उसका धुंआ उठकर बाहर निकल रहा है। इस जलधारा के नीचे तीन स्थानों पर पैर रखकर उसकी वाष्प से होने वाला कम्प तथा शरीरकी कार्यक्षमता स्पष्ट प्रतीत की जा सकती है। तब पूर्व निश्चय करके महाराज ने आकर गोस्वामी गणेशदत्त जी को जो साथ ही गए हुए थे, यह बात स्वयं बतलायी कि पता लगा लिया है कि वहां १२०० फिट नीचे से एल्यूमोनियम धातुके वाष्प उठकर जलमें से होकर निकल रहे हैं। वहां पर वेही तिनके लकड़ी आदि पर जमकर पत्थरके समान बन जाते हैं। यह बात न किसी ने सोची थी न जानी थी।

## चाबी ढूंढ़देना—

महाराज कालका से दो मील पर पानी बतलाने जा रहे थे। जब बतला कर लौटे तो महाराज को शौच जाने की इच्छा हुई। वहां खेत में एक मकान था प्याऊ लगा हुआ था। आते समय प्याऊ वाला ताला लगा कर घर चला गया था। संध्या हो गयी थी। गांव वाले भी महाराज के साथ थे। घर के चारों ओर तलाश की पर चाबी उन्हें नहीं मिली। निराश होकर उन्होंने महाराज से कहा कि चाबी पता नहीं कहां रख गया। अब ताला कैसे खोलें। तब महाराज ने कहा 'अच्छा उस स्थान पर देखो'। देखते ही चाबी वहां से मिल गयी। जल लेकर महाराज शौच गये। हम साथ ही थे।

## होटल का बिल—

शिमले में दो मित्रों ने चाय पीकर होटल वाले से बिल मांगा तो महाराज जी भी एक कुरसी पर कुछ दूरी पर बैठे हुए थे। बिल लाकर मित्रों को दिया ही था कि दूसरी ओर दूरी पर बैठे महाराज ने कहा—''चलो चलें। बिल के २।=) दो रुपये छः आने दे दो और चलो। बिल इतने का ही था।

## दूर की बातें जानना—

महाराज मन की बात, दूर में की हुई किसी भी काल की बातें बतला देते हैं। वे भूत की ही नहीं भविष्यकी बातें भी बतला देते हैं। पर उनकी इच्छा हो तो। ऐसी अनेक बातें हमारे सामने हुई पर हम यहां लिखना नहीं चाहते।

## सुभाषबोस तथा हिटलर—

पूछने पर महाराज ने ४७, ४८ सन् में हमें बतलाया कि दोनों जीवित हैं। सुभाष ४७ ई० अप्रेल मास में जापान में थे, हिटलर रूस में थे। सन् ४८ में मार्च में कहा कि दोनों रूस में हैं। एक दिन सन् ४७ ई० अप्रेल में रात के दो बजे उठकर महाराज ने अपने आतिथेय ( मेंजबान ) को जगाकर कर कहा, पंडित ! उठो देखो हम स्पष्ट देख रहे हैं इस समय हिटलर

एक पर्वत कंदरा में बैठा हुआ अपने पास बैठी हुई एक स्त्री को कुछ लिखवा रहा है। वह लिख रही है।

महाराज ने २५ अप्रेल सन ४७ में हमें अनेक बार कहा था पाकिस्तान निश्चित बन जायेगा। जितना जिन्ना मांगता है उतना तो नहीं मिलेगा पर बहुत कुछ मुसल्मानों को मिल जायगा। और उत्तर भारत में खून खराबा होगा। इत्यादि जो अक्षर २ ठीक निकला। सभी ने देखा पाकिस्तान भी १३ अगस्त १९४७ को बन गया और हत्याकाण्ड भी हुआ। इस से बढ़कर भविष्य को कोई क्या कहेगा। अब भी महाराज कह गये हैं कि "पाकिस्तान में परस्पर लीडरों में विरोध हो जायेगा। आपस में भी लड़ेंगे, भारत से भी लड़ाई होगी और अन्त को पाकिस्तान समाप्त हो जायेगा। भारत में हिन्दुराज्य हो जायेगा।

## जल निकालना—

महाराज ने कहां २ जल निकलवाकर लोगों का कल्याण किया है यह वही बतला सकते हैं। तो भी हमें जो कुछ निश्चित पता है वह यह है कि आपने जामनगर, काठियावाड़ में, पटियाले में और पं० जवाहर लाल नेहरू जी के साथ जाकर फरीदाबाद में तथा अन्य कई स्थानों पर देहली की पड़ौसी बस्तियों में मधुर जल के अटूट स्रोत बतलाये हैं, जिनको निकाल ने पर सभी जगह सत्य बातें सिद्ध हुई हैं। श्री इन्दिरा नेहरू ने महाराज से पूछा कि 'महाराज! आप भूमि के अन्दर बहने वाले जल को कैसे देख लेते हैं?" महाराज ने उत्तर दिया:—"जैसे तुम हमें देख रही हो ऐसे ही हम जल को प्रत्यक्ष देखरहे होते हैं।"

## रूप बदलना—

महाराज साधारण गुजराती वेश में रहते हैं। रन्तु कभी २ उनकी एक दम लम्बी दाढ़ी श्वेत बालों से भरी हुई क्षण भर में निकलती लोगों ने देखी है। कभी शेर के समान मुख मूंछें अयाल सब कुछ क्षण भर में निकलते और दूर होते देखे हैं। महाराज का स्वभाव सरल. हंसमुख, मिलनसार है। वे तर्क वादियों, अमीरों, गर्वितों तथा धर्मद्वेषियों से आवश्यक नहीं कि सब बातें ही खोलकर करें। कभी २ उनको टालने के लिये और अपना पीछा छुड़ाने के लिये भी कुछ की कुछ बातें किया करते हैं जो ठीक नहीं होतीं। उनको झूठी समझ वे लोग फिर उनके पास नहीं जाते। पर जो धर्मात्मा हैं उनसे कुछ छिपाते भी नहीं। वास्तव में वे सिद्ध पुरुष हैं और भारत की प्राचीन विभूति हैं।

———

भारत काश्मीर और पाकिस्तानके सम्बन्धमें—

# महर्षि व्यासकी भविष्यवाणी

हमारे त्रिकालदर्शी महार्षियोंने अपने योगबल और ज्योतिर्विज्ञानके आधार पर किसी निश्चित समय विशेषका ही नहीं प्रत्युत आकल्पान्त सृष्टिका सहस्रों वर्ष पूर्व हस्तामलकवत् प्रत्यक्ष चित्र अङ्कित कर दिया था। अनेक प्राचीन ऐसी अक्षरशः सत्य उतरने वाली भविष्यवाणियोंको कई अश्रद्धालु लोग प्रक्षिप्त कहने लग पड़े थे, किन्तु आज हम श्रीमद्भागवतकी एक ऐसी भविष्य-वाणी पाठकोंके सामने प्रस्तुत करते हैं जो अभी-अभी अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई है। पाकिस्तान-निर्माणके सम्बन्धमें महर्षि व्यासने हजारों वर्ष पूर्व स्पष्ट संकेत कर दिया था और भारत तथा पाकिस्तान इन दोनों राष्ट्रोंके लिए लिख दिया था कि भारत धर्म रहित राज्य हो जायगा और पाकिस्तान असत्य प्रधान रहेंगा। तदनुसार भारतको तो वैधानिक रूप से "धर्म-निरपेक्ष-राज्य" घोषित कर दिया गया है। पाकिस्तान यद्यपि अपनेको 'सत्यहीन—अनृतपरक राष्ट्र' न कहता है, न कह ही सकता है, पर यह प्रत्यक्ष है कि उसका प्रत्येक कार्य असत्यपूर्ण है। सत्य और पाकिस्तान का ३६ का सा विरोध है। काश्मीरके लिए भी लिखा है कि एक बार तो वह म्लेच्छोंके शासन में जायगा (पाकिस्तानमें मिलेगा) किन्तु अन्तमें यवन लोग आपसमें ही लड़ मरेंगे। पारस्परिक संघर्ष और वैमनस्य पाकिस्तानकी जड़को उखाड़ देगा और अन्तमें आर्य राज्यकी स्थापना होगी। इस भविष्यवाणीमें इस बात का भी उल्लेख कर दिया गया है कि कौन कौनसे देश पाकिस्तानमें सम्मिलित होंगे और पाकिस्तान-निर्माण के समय किस प्रकार निरीह बालकों, स्त्रियों आदिका वध और धन का अपहरण होगा। श्रीमद्भागवत के २१ वें स्कन्ध के प्रथम अध्याय के निम्न श्लोकोंको पढ़ते हुए यह चित्र आंखोंके सामने नाचने लगता है।

अनुगङ्गामाप्रयागं गुप्तां भोक्ष्यति मेदिनीम्।
सौराष्ट्रावन्त्याभीराश्च शूद्रअर्बुदमालवाः॥
व्रात्याद्विजा भविष्यन्ति शूद्रप्राया जनाधिपाः।
सिन्धोस्तटं चन्द्रभागांकौन्तीं काश्मीरमण्डलम्॥
भोक्ष्यन्ति शूद्राव्रात्याश्च म्लेच्छाश्चाब्रह्मवर्चसः।
तुल्यकाल इमे राजन्! म्लेच्छप्रायाश्च भूभृतः॥
एतेऽधर्मानृतपराः फल्गुदांस्तीव्रमन्यवः।
स्त्रीबालगोद्विजघ्नाश्च परदारधनाहृताः॥
उदितास्तमितप्राया अल्पसत्वाल्पकायुषः।
असंस्कृताःक्रियाहीना रजसातमसावृताः॥
प्रजास्ते भक्षयिष्यन्ति म्लेच्छराजन्यरूपिणः।
उदितास्तमितप्राया हर्षशोकादिविह्वलाः॥
तत्राथास्ते जनपदास्तच्छीलाचारवादिनः।
अन्योऽन्यतो राजभिश्च क्षयं यास्यन्ति पीडिताः॥

अर्थात् "पूर्वमें गङ्गा-सागर (कलकत्ता) और पश्चिममें सौराष्ट्र तथा अर्बुदाचल (राजस्थान) तकके भूमि-भाग पर शूद्र-प्राय शासकवर्ग शासन करेंगे। उधर काश्मीर सिन्ध व झेलम और चनाब तकके पंजाबके प्रदेश पर ब्राह्मण-द्रोही व्रात्य म्लेच्छ (मुसलमान) शासन करेंगे। ये शासक भयंकर क्रोधी तथा एक 'अधर्मपरक' तो दूसरे 'असत्य—परक' होंगे। पाकिस्तानी म्लेच्छ लोग स्त्री बालक गौ ब्राह्मणोंका निर्मम सहार करने वाले तथा दूसरेकी स्त्री व सम्पत्ति का अपहरण करने वाले होंगे। किन्तु वे कभी शक्ति-शाली न हो सकेंगे। इस लिए उनका राज्य उदित होते ही अस्त हो जायगा अर्थात् पाकिस्तान बहुत समय तक स्थायी रूपसे न रह सकेगा। यह संस्कार से हीन रजोगुण और तमोगुण से भरे हुए मुसलमान शासक प्रथम तो प्रसन्न होंगे और फिर शोकातुर होकर, उत्पन्न होनेके कुछ काल पश्चात् ही नष्ट हो जाएंगे। अतःमें वहांके प्रजागण आपस में लड़कर या एक शासन दूसरे पर आक्रमण कर नष्ट हो जायेंगे।

इस प्रकार समय आने पर सम्पूर्ण भारतमें फिर धर्म का एकच्छत्र राज्य स्थापित हो जायेगा।"

महर्षिव्यासकी उक्त भविष्यवाणीका पूर्वार्ध अक्षरशः सत्य सिद्ध हो चुका है। अब पाकिस्तानके लोगोंका आपसमें लड़कर या मुसलमान शासकोंके विग्रहसे पाकिस्तान राज्यकी समाप्तिकी भविष्यवाणी भी अवश्य सत्य सिद्ध होगी। उसके लक्षण तो अभी से दिखाई देने लगे हैं। इस भविष्यवाणीके आधार पर काश्मीरका जितना भाग पाकिस्तानमें चला गया है उसके निकट भविष्यमें भारतमें मिलने की अभी आशा नहीं है।

हमने प्राचीन महर्षियोंकी भविष्यवाणियोंकी सत्यता सिद्ध करनेके लिए यह एक छोटा-सा निदर्शन उपस्थित किया है। शास्त्रोंमें ऐसे अनेकों महत्वपूर्ण वैज्ञानिक तथ्य विद्यमान हैं जो सदा सत्य सिद्ध होते हैं। जनतामें उनकी सत्यताको प्रकट करनेके लिए प्रचार और प्रयत्नकी परमावश्यकता हैं, किन्तु इसके लिये हमारे जैसा अकेला व्यक्ति-विशेष कुछ नहीं कर सकता। अतः राष्ट्र के श्रीमन्तोंका कर्तव्य है कि वे विद्वान् अन्वेषकोंकी सामूहिक रूपसे सहायता कर इस महत्वपूर्ण कार्यको सफल बनावें।

——

# कुम्भ महापर्व हरिद्वार

स्वतन्त्रभारत में प्रथमवार हरिद्वार का कुम्भमहापर्व आगामी वैशाखमास ( अप्रैल १९५० ई० ) में आ रहा है। बारहवर्ष के अनन्तर जब देवगुरु (बृहस्पति ) की स्थिति कुम्भराशि में हो तब सूर्य के मेष में जाने पर मेषसंक्रान्ति वा वैशाखी के दिन हरिद्वार में कुम्भमहापर्व का योग बनता है। यथा—

पद्मिनीनायके मेषे कुम्भराशिगते गुरौ।
गङ्गाद्वारे भवेद्योगः कुम्भनामा तदोत्तमः॥
वसन्तेविषुवे चैव घटे देवपुरोहिते।
गङ्गाद्वारे च कुम्भाख्यः सुधामेति नरो यतः॥
कुम्भराशिगते जीवे यद्दिने मेषगे रवौ।
हरिद्वारे कृतं स्नानं पुनरावृत्तिवर्जनम्॥

## कुम्भस्नान का समय

इस वर्ष कुम्भमहापर्व का मुख्य स्नान वि० सं० २००७ वैशाख कृष्णा १२ गुरुवार ता० १३ अप्रैल १९५०ई० को मध्यान्होत्तर ४ बजे होगा। पुण्यकाल मध्यान्हके पश्चात् स्टेण्डर्ड टाइम ३।१९ से प्रारम्भ होता है। मुख्यपुण्यकाल तो ३।१९ सायंकाल ६।४५ तक रहेगा किन्तु गौणरूप से मध्यान्ह १० बजे से रात्रिके १२ तक भी पुण्यकाल माना जाता है। इस वर्ष कुम्भपर्व के पांचवें दिन वैशाख कृष्णा अमावस्य ता० १७ अप्रैलको सोमवती अमावस्या का पुण्यपर्व आजानेसे महत्व और भी बढगया है। कुम्भपर्व और सोमवती पर्व पर भगवती भागीरथी के तट पर स्नान दान जप यज्ञादि करने से अक्षयपुण्य की प्राप्ति होती।

## कुम्भराशिस्थ गुरुका फल

कुम्भराशि गते जीवे मेघस्वल्पाम्बु वर्षति।
कृषिनाशं च दुर्भिक्षं पूर्वदेशे महर्घता॥

कुम्भराशि के गुरुमें स्वल्पवर्षा कृषिनाश दुर्भिक्ष और पूर्वोत्तरीय देशोंमें उत्पात अधिक होते हैं। यहा कुम्भराशिस्थ गुरुपर शनिकी दृष्टि है और राहुसे द्विर्द्वादश योग बन रहा है। अर्थात् आगे मीन में राहु होने से निकट भविष्यसे ही गुरु चाण्डाल योग बनने वाला है। अतः यह योग समस्त संसार और विशेषकर भारत के लिए सुख शान्ति कारक नहीं है, क्योंकि ससार की सुख शान्ति और ज्ञान (विवेक) का अधिपति गुरु है— 'जीवो ज्ञानसुखे'। यदि गुरु पापाक्रान्त वा पापदृष्ट हो तो संसार की शान्ति और सुख सन्देह में पड़ा रहता है। आज से १२ वर्ष पूर्व सं० १९९५ सन् १९३८ में गुरु कुम्भराशि पर था; उस समय हरिद्वार कुम्भ महापर्व के समय गुरु और मेषराशिस्थ सूर्यका अशुभ ग्रहों से सम्बन्ध बना था, गुरु शनिका द्विर्द्वादश था फलस्वरूप दो वर्ष के अन्दर ही सितम्बर १९३९ में द्वितीय महायुद्ध प्रारम्भ हो गया और तत्पश्चात् आज तक भूमण्डल पर जिस रूपमें अशान्ति का अकाण्ड ताण्डव हुआ वह विश्वविदित ही है। अब कुम्भस्थ गुरु और सं० २००७ के मेष संक्रमणक कालीन स्थिति को देखते हुए हमें आगे आने वाले ६ वर्ष संसार के लिए संकट पूर्ण दिखाई दे रहे हैं। यह हम अपने गतवर्ष सं० २००६ के श्री 'विश्वविजय पञ्चाङ्ग' पृष्ट ३६ पर स्पष्ट लिख चुके थे कि—

"तथा कथित साम्यवाद ( कम्यूनिज्म ) का मूलस्रोत रशियनभूभाग कुम्भ राशि के प्रभाव में है, अतः सिंहके शनि में संसारभर में रूसी साम्यवाद वा कम्यूनिज्म का भय बढ़ता जायेगा।'

तदनुसार इसी सिंह के शनि ही में चीन और एशिया में साम्यवादियों की गति विधि जिस तीव्रता से बढती जा रही है वह सर्वविदित ही है। अब इस कुम्भ के गुरु में रूस प्रेरित साम्यवादियों की गतिविधि संसार को अधिक आतङ्कित करेगी।

पूर्व और पश्चिम उत्तरीय भारत, काश्मीर, तिब्बत नेपाल, भूटान और पाकिस्तान में क्रांति होगी। अन्न वस्त्र और जीवन निर्वाह की समस्या जनसाधारण के लिए कठिन बनेगी। राजनैतिक धार्मिक आर्थिक सामाजिक वातावरण अशान्त रहने से प्रजा में क्षोभ बढ़ेगा। कहीं अति वृष्टि कहीं अनावृष्टि से दुर्भिक्ष पड़ेगा। वायु का उपद्रव अग्निकाण्ड रोगभय और भ्रष्टाचार में वृद्धि होगी।

## राशिफल

कर्क सिंह कन्या कुम्भ और मीन राशि वाले व्यक्तियों को कौटुम्बिक क्लेश, आर्थिक चिन्ता अपयश और विघ्न बाधाओं का सामना करना पड़ेगा अतः इन लोगों को यह आरम्भिक संक्रांति काल शान्ति पूर्वक अध्यात्मचिन्तन एवं तीर्थ सेवन में बिताना चाहिए। उक्त राशियों के प्रभाव में जो राष्ट्र व प्रान्त आयेंगे उन पर भी बुरा प्रभाव पड़ेगा।

अब हम यहां इस कुम्भ महापर्व के इतिहास और इस की धार्मिक सामाजिक एवं राष्ट्रीय महत्ताओं पर अगले लेख में कुछ प्रकाश डाला जा रहा है —

———

# खग्रास चन्द्रग्रहण

चैत्र शुक्ला १५ रविवार ता० २ अप्रैल १९५० ई० को होगा। यह ग्रहण भारतमें सर्वत्र पूर्णग्रस्त दिखाई देगा। इसका भारतमें स्टेण्डर्डमानसे स्पर्शादिकाल और मध्यकालीन आकृति ( ग्रहणका स्वरूप ) नीचे दी जा रही है।




| रात्रौ | स्पर्श | सम्मी० | मध्य | उन्मी० | मोक्ष | पर्व |
|---|---|---|---|---|---|---|
| घं० | ० | १ | २ | २ | ३ | ३ |
| मिं. | ३८ | ५८ | १३ | २६ | ४८ | १० |

ग्रहणका सूतक (वेध)—इस ग्रहणका वेध मध्याह्नोत्तर स्टे० टा० ३।३८ पर प्रारम्भ होता है बाल वृद्ध रोगियों को ग्रहण वेधमें भोजनादिका निषेध नहीं है।

दृश्यग्रहणे कृत्यम्—ग्रहण स्पर्श होनेपर स्नान करके जपादि प्रारम्भ करें। मध्यमें हवन, देवपूजन, मध्यके बाद दान और मोक्ष के बाद पुनः स्नान करना चाहिए।

ग्रहण फल—यह ग्रहण हस्त नक्षत्र और मिथुन कन्या तुला कुम्भ राशि वाले व्यक्तियों तथा देशोंको पीड़ा भय शोक चिन्तादि अशुभफल कारक है। वृषभ सिंह मकर मीन राशियोंको मध्यम और मेष कर्क वृश्चिक धनुः राशिवालों को शुभफल कारक है। भारतकी राजनैतिक और आर्थिक स्थिति पर इस ग्रहणका बुरा प्रभाव पड़ेगा। साम्यवादी और विरोधी तत्वोंके उपद्रव बढ़ेंगे। चोरी, डाके, अग्निकाण्ड और अपराध अधिक होंगे। काश्मीरमें रक्तपात होगा। भारत पाकिस्तानमें युद्धस्थितिका निर्माण होगा। पूर्व और पश्चिमोत्तरीय भारतमें उत्पात अधिक होंगे। तुषधान्य ( चावल चणा यवादि ) और सुवर्णका भाव तेज रहेगा।

# कुम्भ पर्व क्यों किसलिए ?

भारत विश्वको संक्षिप्त प्रतिकृति होते हुए भी सर्वथा अलौकिक है। संसार भरके जितने भी देश हैं। उन सबकी सम्पूर्ण विशेषताएं भारत में एक साथ लक्षित होती हैं। इस लिए संसारके किसी देशकी कोई भी वस्तु भारतके लिए नवीन अथवा आश्चर्य कारक नहीं। विपरीत इसके भारतमें अनेकों ऐसी विशेषताएं हैं जिनके कारण सारा संसार इसे आदर्श और श्रद्धा की दृष्टिसे देखता चला आ रहा है। इसके अनेक दिव्य कार्य अत्यन्त प्राचीन— इतने पुराने हैं कि आज का वैज्ञानिक ऐतिहासिक उनका तिथिक्रम भी निश्चित नहीं कर पाता। और वह उन्हें प्रागैतिहासिक कह कर छोड़ देते हैं। ऐसा होते हुए भी वे नित्य नवीन हैं। उनका महत्व आज भी उतना ही है जितना कि लाखों वर्ष पूर्व था। कुम्भ महापर्व भी भारत के ऐसे ही अत्यन्त उपयोगी और महत्वपूर्ण अलौकिक आयोजनों में से एक है।

## कुम्भ पर्व की ऐतिहासिकता

आजके मानवका तार्किक मस्तिष्क प्रत्येक वस्तु को तर्क और विज्ञानकी कसौटीपर कस कर परखनेका अभ्यासी होगया है। जहां उसे कोई सीधी शृङ्खला नहीं मिलती वहां वह अपने आप पर झुंझलाता हुआ उस कार्य को अवैज्ञानिक या अनैतिहासिक कहता हुआ यहां तक कहने का साहस करता है कि प्राचीन भारत में इतिहास नाम वाली कोई वस्तु थी ही नहीं। स्थूल दृष्टि से देखने पर यह कथन सत्याभास तक पहुंचता हुआ प्रतीत होता है। पर ऐसे विचार वास्तविक सत्य से कोई सम्बन्ध नहीं रखते। हमारी सौंदर्य प्रिय कलात्मक रुचि एवं आध्यात्मिक भावनाओं ने हमें जड़ क्षण-भंगुर, ईंट पत्थर या कागज के टुकड़ों पर अपने कार्यों का ऐसा लेखा जोखा रखने से दूर रखा जो गणितके सिद्धान्तोंके समान स्थिर सत्य और एकान्ततः नीरस है। हम में तो अपने इतिहास तथा सम्पूर्ण जीवन को कलात्मक रूप देनेकी नैसर्गिक प्रवृत्ति थी। इसी प्रवृत्ति ने इतिहासको काव्य का रूप दे दिया। उन काव्यों से भी अधिक हमारा इतिहास पूर्वजनोंने अपने प्रत्येक कार्य और विध विधान में अंकित कर रखा है। भारतीयोंका प्रत्येक कार्य और संस्कार अपनी प्राचीन परम्परा (जो जीवित इतिहास ही है) का परिचय देती है। कुम्भ महापर्व के सम्बन्ध में भी यह सिद्धान्त अक्षरशः चरितार्थ होता है। कुम्भ महापर्व किस वर्ष आरम्भ हुआ है, इसकी इदमित्थ गणितकी भांति ध्रुव रुत्य तिथिका निर्धारण न किया जा सकना ही भारतीय संस्कृति और धर्मका अनादित्व सूचित करता है। यहांकी प्रत्येक वस्तु

'यथापूर्वमकल्पयत्'

के अनुसार अनादि कालसे प्रवाह रूपमें चली आ रही है। इस प्रकार भौतिक ऐतिहासिक की दृष्टिसे अपनी विवशता से असफल और निराश होने वाले अन्वेषक (रिसर्च स्कालर से हम कहेंगे कि कुम्भ पर्व का क्या इतिहास है वह तो स्वयं एक जीवित जाग्रत इतिहास है जो रूप उसका दिखाई दे रहा है वही तो इतिहासका इतिहास होगा। जिन्होंने कुम्भ पर्व के दर्शनका सौभाग्य प्राप्त किया है वे सर्वसम्मतिसे स्वीकार करते हैं कि इसका कहीं ओर छोर दिखाई नहीं देता। संसारके अन्य देशोंमें भी समय समय पर बड़ी बड़ी भीड़ें इकट्ठी की जाती हैं, किन्तु वे अनादि अनंत नहीं होतीं। उनका ओर छोर और केन्द्र स्थान सहसा पाया जा सकता है। पर कुम्भ पर्वका कहीं

आदि अन्त नहीं। जिधर देखो उधर ही लाखों नर-नारी आते जाते दिखाई देते हैं। कुम्भ पर्व का यह स्वरूप अपनी प्रवाहात्मकता को प्रकट करता हुआ अपने इतिहासको स्वयं प्रत्यक्ष उपस्थित कर रहा है। साथ ही साथ भारत की पुरातन ऐतिहासिक रुचिकी ओर संकेत करता रहता है। अस्तु।

इस प्रकार इस पर्वके अनादि कालसे प्रवाह रूपमें प्रवर्तित सिद्ध हो जाने पर भी इसके साथ कुछ एक ऐतिहासिकताएं भी सम्बद्ध हैं। जिनमें से निम्न दो मुख्य हैं—

(१) 'विष्णु याग मीमांसा' और 'योग सार संहिता' तथा 'धर्मसाधन' के अनुसार गंगा स्थिति समय मीमांसा आदि ग्रन्थोंमें ऐतिहासिक दृष्टि से इस प्रकार विवेचन मिलता है कि—

समुद्र मंथनसे अमृत कुम्भके निकलने पर असुर उसे छीनने के लिए देवताओं पर टूट पड़े, किन्तु इन्द्र का पुत्र जयन्त उस अमृत के घड़े को लेकर निकल गया। शुक्राचार्य के कहनेसे दैत्य उसके पीछे दौड़े। उन्हें देख वह भी आगे २ भागने लगा। यह भाग दौड़ दिव्य १२ दिन (मानुष १२ वर्ष) पर्यन्त चलती रही इन दिव्य १२ दिनोंमें चार स्थानोंपर चार बार दैत्यों ने जयन्तको पकड़ा और उससे अमृत कुम्भ छीनने का प्रयत्न किया किन्तु उसी समय सूर्य चन्द्र और बृहस्पतिने उन चारों स्थानों पर जयन्तका साथ देकर अमृत घटकी रक्षा की। इस छीना झपटीमें अमृतकी कुछ बून्दें उन चारों स्थानों पर गिरीं। वे चारों स्थान प्रयाग, हरिद्वार गोदावरी और अवन्तिका (उज्जैन) क्षेत्र हैं। रक्षा के समय गुरु सूर्य चन्द्रमा जिस स्थिति (राशियों) में थे उसी राशिपर इन तीनों के होने पर अब तक उक्त चारों पुण्य क्षेत्रोंमें कुम्भ महापर्वका स्नान होता है। गुरुदेव (बृहस्पति) ने दैत्यों से अमृत कुम्भकी रक्षा की, सूर्यने घड़ेको फूटनेसे बचाया और चन्द्रमाने घटस्थ अमृतको गिरनेसे बचाया इसी कारण इन तीनों का कुम्भ महापर्व से विशेष सम्बन्ध है। यथा—

विवादे काश्यपेयानां यत्र यत्रावनिस्थले।
कलशोन्यपतत्तत्र कुम्भपर्व तदोच्यते ॥
गुर्विन्द्वर्कैस्वपुत्रैश्च कुम्भोऽरक्षि निपातितः
कलहाक्रान्तचेतोभिर्दैत्यैः शुक्रप्रचोदितैः।
चन्द्रः प्रस्रवणाद्रक्षां सूर्यो विस्फोटनाद्दधौ।
दैत्येभ्यश्च गुरु र्रक्षां सौरिर्दैत्येन्द्रजाद्भयात् ॥
सूर्येन्दुगुरुसंयोगस्तद्राशौयत्रवत्सरे।
सुधाकुम्भान्वितेस्थानेकुम्भोभवति नान्यथा ॥
देवानांद्वादशाहोभिर्मर्त्यैर्द्वादशवत्सरैः।
जायन्ते कुम्भपर्वाणि तथा द्वादशसंख्यया ॥

इसके अतिरिक्त भगवत्पाद श्री स्वामी शङ्कराचार्य जी के साथ भी इन कुम्भोंका ऐतिहासिक सम्बन्ध है—

श्री स्वामी शंकराचार्य जी महाराज जब अपने विरोधियों को परास्त करने के लिए भारत भ्रमण कर रहे थे और उनकी शिष्य मण्डली दिन दूनी और रात चौगुनी बढ़ रही थी तो उन्होंने उन लाखों अपने उत्साही शिष्योंको आज्ञा दी कि तुम लोग सब देशके कौने कौने में पहुँचकर धर्म प्रचार का कार्य सम्पन्न करो। स्वामीजी के इस आदेश से शिष्य मण्डली ने उदास होकर जिज्ञासा की कि अब हम श्री चरणोंका साक्षात्कार फिर कब कैसे और कहां प्राप्त कर सकेंगे ? साथ ही अपने सहयोगी सहपाठी संन्यासी वर्गसे भी फिर कैसे साक्षात्कार हो सकेगा ? इस पर स्वामीजी ने उत्तर दिया कि प्रति तीसरे वर्ष हरिद्वार; प्रयाग, गोदावरी और उज्जैन के कुम्भ पर्वों पर आप सब एकत्रित हो सकते हैं। तदनुसार संन्यासी मण्डल अपने प्रचार कार्यमें निरत होकर प्रति तीसरे वर्ष इन निश्चित स्थानों पर एकत्रित होने लगे।

उक्त दोनों ऐतिहासिक कथाएं भी कुम्भपर्वके साथ सम्बद्ध मात्र हैं। उसकी मूल स्रोत नहीं। मूल तो

उसका अनादि ही है। देवासुर संग्राम की कथाके भी ऐतिहासिक तथा आधिभौतिक आध्यात्मिक और आधिदैविक तीनों अर्थ हैं। ऐतिहासिक अर्थों से ऐसा प्रतीत होता है कि भारतलक्ष्मी को प्राप्त करनेके लिए देवताओं और असुरों में सदा संग्राम छिड़ा रहता था। देवनायक इन्द्र और उनके सुपुत्र जयन्त इस संग्राम का नेतृत्व करते थे। जब जब देवताओं की संगठन शक्तिमें चीणता आने लगी तब तब हरिद्वार, प्रयाग, आदि चार स्थानों पर उन्हें पुनः संगठित किया गया। वह संगठन भी कुम्भ पर्वसे सम्बद्ध है।

## कुम्भ का सामाजिक महत्व

कुम्भ पर्व का प्रचलन उस प्रचीनतम युगमें हुआ जब मनुष्य को वैज्ञानिक यन्त्रोंने अपना दास नहीं बनाया था। पत्रपत्रिकाएं प्रेस; विज्ञापन आदि न प्रकाशन के साधन थे, न प्रचार के। प्रचार के द्वारा कोई सम्मेलन (कांफ्रेन्स) या किसी सभा का अधिवेशन होना अत्यन्त कठिन था। परन्तु उस युगके मनीषी भी ऐसे आयोजनों की महत्ताका स्पष्ट अनुभव करते थे। जिसमें सम्पूर्ण भारतके प्रतिनिधि इकट्ठे होकर परस्पर परिचय प्राप्तिके साथ सामाजिक समस्याओं पर विचार और उनका समाधान भी कर सकें। यह कार्य क्रान्तदर्शी, महामेधावी महर्षियों ने अनायास ही कर डाला। बिना किसी प्रचार या प्रोपेगन्डे के पंचांग (तिथिपत्र) की एक पंक्ति मात्रसे लाखों नर नारियों को एकत्रित करने का आयोजन सच मुच अनुपम और अनुकरणीय है। एक बार हरिद्वार के कुम्भपर्व पर आए हुए एक योरोपियन अथिति ने स्वर्गीय महामना मालवीय महाराज से पूछा कि इतने विशाल जन समूहको इकट्ठा करनेका आयोजन कितने समय पहले बनाया और इसके प्रचारमें भारतका कितना रुपया व्यय हुआ। उत्तरमें श्री महामना मालवीय जी महाराज ने पासमें रखा हुआ एक पंचाग उठा कर उसमें लिखी एक छोटी सी पंक्ति (कुम्भमहा पर्व हरिद्वार) दिखाकर कहा कि तीन मास पूर्व लिखी गई इस पंक्ति से यह लाखोंका जन समूह एकत्र हुआ है। इसके लिए न तो भारतका एक पैसा व्यय हुआ और न पहले कोई प्रचार ही करना पड़ा। यह सुनकर वह विदेशी यात्री अवाक् रह गया। यूरोप आदि पाश्चात्य देश वासी भारतकी इसस्वभाविक संगठन शक्तिको देख कर मन्त्रमुग्ध से रह जाते हैं। उनके देशोंमें जो कार्य करोड़ों रुपया के व्यय और अथक परिश्रमके पश्चात् भी सम्पन्न नहीं हो सकता वही कार्य यहां एक भी पैसा व्यय किए बिना ज्योतिषियोंकी कलमकी एक नौकसे अनायास ही सम्पन्न हो जाता है। धनुषकोटि से लेकर अमरनाथ और बद्रीनाथ तकके उधर जगन्नाथ पुरी और गंगा सागर से लेकर द्वारका और कुभा नदी (काबुल) तकके राष्ट्र प्रतिनिधि लाखोंकी संख्यामें प्रति तीसरे वर्ष एकत्रित हो अपना ऐहिक और आमुष्मिक कल्याण करते हुए इस लोक को ही नहीं परलोक को भी बनाते हैं।

कुम्भ पर्व हमारे समाजिक संगठन के साथ भौगोलिक ऐक्य का भी प्रतीक है। धर्म, समाज, आदि राजनैतिक दृष्टियों से तो यह महान् राष्ट्र सदा से एक रहा ही है। साथ ही भौगोलिक भेद भाव को भी इस ने कभी स्वीकार नहीं किया। इसलिए काश्मीर सरीखे उत्तरीय प्रान्तों का निवासी गोदावरी तक दक्षिण में सहर्ष पहुंचता है। उधर कुमारी अन्तरीप के समीप रामेश्वर में रहने वाला भारतीय भाई उत्तर में अवस्थित राष्ट्र के रक्षक प्रहरी हिमालय के पावन पाद-पद्मों को छूकर तथा पतित पवनी गंगा माता का पयः पान कर उसकी गोद में बैठ कर अपने दोनों लोक बना लेता है। इस प्रकार कुम्भ पर्व सामाजिक एकता के साथ ही साथ भारत की भौगोलिक एकता का भी प्रत्यक्ष प्रतीक प्रमाणित होता है। हमारे पूर्वजों ने किसी भी कार्य में संकीर्ण दृष्टि से विचार नहीं किया। वे प्रत्येक परिस्थिति और कार्य पर व्यापक विचार करते थे। उनके जीवन के प्रत्येक क्षण में धार्मिक सामाजिक और सांस्कृतिक भावनाओं

का समन्वय रहता था। धर्म, अर्थ, काम मोक्ष चारों ही उनके जीवन के लक्ष्य रहे हैं। कुम्भ पर्व भी इन चारों के पूरक प्रयत्न । धर्म और मोक्ष के तो ये स्पष्ट साधन हैं ही। वेद ( गायत्री मंत्र ) के समान ही गंगा भी हमारे जीवन की सर्वतोमुखी उन्नति की प्रतीक है। इसीलिए हम पृथ्वी माता और गौ माता के साथ गंगा माता का उल्लेख करते हैं। राष्ट्र का कल्याण करने वाली वस्तुओं को माता से बढकर और कोई, पवित्र और पूज्य उपाधि नहीं दी जा सकती। शास्त्रों ने गंगा की महिमा खूब गाई है। कहीं २ तो उस में अतिशयोक्ति की भी झलक दिखाई देती है, किन्तु

"जाकी रही भावना जैसी,
प्रभु मूरति देखी तिन तैसी।"

के अनुसार भावुक भक्तजनों श्रद्धालुओं का तो वह सचमुच नाम लेने मात्र से भी कल्याण कर देती है। इसके विपरीत जो लोग सात्विक श्रद्धा से हीन होकर अपने और राष्ट्र की कल्याण कामना से नहीं, प्रत्युत अपने वैयक्तिक भौतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए गंगा स्नान के लिए जाते हैं, उन्हें केवल स्नान का ही फल मिल सकता है, तीर्थयात्रा का नहीं। जैसे कि 'शंखस्मृति' में स्पष्ट कहा—

तीर्थप्राप्त्यानुषङ्गेण स्नानं तीर्थे समाचरन्।
स्नानजं फलमाप्नोति तीर्थयात्रा फलं न तु॥

अर्थात् तीर्थयात्रा के प्रसंग से श्रद्धा के बिना जो व्यक्ति किसी तीर्थ पर स्नान करते हैं उन्हें स्नान का फल तो अवश्य मिलता है, पर उसके महात्म्य में वर्णित तीर्थ यात्रा का फल नहीं।

सात्विक और सदाचार प्रवृत्तियों के साथ श्रद्धा पूर्ण हृदयों से तीर्थ की यात्रा करने पर पूरा फल मिल सकता है। प्राचीन युगों के व्यक्ति सैकड़ों कोसों से पैदल चल कर सदाचार और संयम का पालन करते हुए सात्विकता के साथ तीर्थों पर पहुंचते थे। तीर्थ प्राप्ति मात्र से वे तृप्त हो जाते थे। उक्त सात्विक प्रवृत्तियों के कारण उनकी आत्मा पूततम हो जाती थी। तीर्थ प्राप्ति से वह पावनता और भी निखर जाती थी। ऐसी अवस्था में उन का सब प्रकार का कल्याण स्वाभाविक ही था।

किन्तु आज तो परिस्थिति सर्वथा परिवर्तित हो गई है। लोगों ने तीर्थों को अपनी वासनापूर्ति का स्थान और साधन बना रखा है। ऐसे लोगों का कल्याण कैसे हो सकता है ? जो तीर्थ सरीखे स्थान पर आकर भी अपनी दुष्प्रवृत्तियों का परित्याग नहीं करता, प्रत्युत वहां भी पापाचरण भी करता है, वह अवश्य ही कल्प कल्पान्तरों के लिए नर्क ही में जायगा। लिखा भी है—

अन्यक्षेत्रे कृतं पापं तीर्थक्षेत्रे प्रणश्यति।
तीर्थक्षेत्रे कृतं पापं वज्रलेपो भविष्यति।

अतः तीर्थ यात्री के लिए सत्य प्रवृत्ति, सदाचार और संयम परमावश्यक है। इसके विना कुछ लाभ नहीं हो सकता जैसे कि महाभारत में स्पष्ट लिखा है—

यो लुब्धः पिशुनः क्रूरो दाम्भिको विषयात्मकः।
सर्वतीर्थेष्वपि स्नातः पापो मलिन एव सः॥

अर्थात् जो व्यक्ति लालची है; कपटी है। अपनी दुष्प्रवृत्तियों से परिपूर्ण हैं वह सब तीर्थ स्थानों में स्नान कर लेने पर भी पापी और मलीन ही रहेगा। वह स्वर्ग सुख का अधिकारी कभी नहीं हो सकता। इसी प्रकार वायु पुराण में लिखा है।

अश्रद्धानः पापात्मा नास्तिकोऽच्छिन्न संशयः।
हेतुनिष्ठश्च पञ्चैते न तीर्थफलभागिनः॥

जो व्यक्ति श्रद्धालु नहीं है, पापी है, नास्तिक है, जिस के मन में दुविधा भरी हुई है, वह रुपया पैसा

कमान के लिए अथवा अपनी अन्य स्वार्थ सिद्धियों के लिए तीर्थों पर जाता है, उसे तीर्थ यात्रा का फल कभी नहीं मिल सकता।

## हरिद्वार कुम्भ पर यात्रियों का कर्तव्य

इस लिए यात्रियों को सदाचार और श्रद्धा से ही समन्वित हो कर कुम्भ पर्वों पर पहुंचना चाहिए। वहां पहुंच कर प्रातः सायं जितनी बार चाहें गंगा माता के सुकोमल जल की गोद में स्नान कर अपने पापों का प्रक्षालन करते हुए परलोक पथ का निर्माण करना चाहिए। साथ ही सुविधा के साथ शेष समय को प्रभुस्मरण और समाज संगठन आदि सत् कार्यों में लगाना चाहिए। विभिन्न सभा संस्थाएं और सन्त महन्त सन्यासी गण बड़ी बड़ी सभाओं के द्वारा धार्मिक, सामाजिक आदि विविध विषय के व्याख्यानों का प्रबन्ध करते हैं। यात्रियों को उन सब में क्रियात्मक भाग लेकर अपने समाज और राष्ट्र की ऐहिक उन्नति के लिए भी प्रयत्न शील होना चाहिए। विद्वान् सन्यासी और साधुओं को भी चाहिए कि वे भी जनता और यात्रियों के अधिक से अधिक कल्याण का प्रयत्न और प्रबन्ध कर अपने कर्तव्य का पालन करें।

## कुछ आवश्यक सुधार

मेलों पर प्रायः सैंकड़ों लुच्चे लफंगे धन जनका अपहरण करते रहते हैं। स्त्रियों और बच्चों को बहकाने वालों की भी वहां कमी नहीं रहती। भगवें वेश धारियों में भी ऐसे दुराचारियों की एक बड़ी संख्या छिपी रहती है। तीर्थ पुरोहित उचित और अनुचित उपायों से यात्रियों को ठगते रहते हैं। मठ और मन्दिर भी अनाचार की वृद्धिमें सहायता कर रहे हैं। प्राचीन युगमें सदा नग्न तपस्या करने वाले महात्मा तीर्थस्नान के लिए आते थे। यह तो कुछ अनुचित न था। परन्तु आज सदा कपड़े पहने रहने वाले साधु तीर्थ पर आकर नंगे हो जाते हैं और अपनी बड़ी २ शाहियां निकालते हैं। नंगे साधुओं की शाहियों के विरुद्ध जनताको तीव्र आन्दोलन करना चाहिए। भिखारियोंको भी सड़कों पर भीख मांगने से हटाना चाहिए। ऐसे ही समाज सुधार सम्बन्धी कार्योंको क्रियात्मक रूप देने से हमारे राष्ट्र का कल्याण हो सकता है। सदाचार और श्रद्धा पूर्वक हरिद्वार कुम्भकी यात्रा करने वाले यात्रीको महान् फल मिलता है, इसमें कोई सन्देह नहीं जैसा कि लिखा है—

तत्र गच्छति यो योगे सोऽमृतत्वायकल्पते।
देवा नमन्ति तत्रस्थान् यथा रङ्काधनाधिपान्।
कुम्भराशिगते जीवे यद्दिने मेषगे रवौ।
हरिद्वारे कृतं स्नानं पुनरावृत्ति वर्जनम्।

जो व्यक्ति ऐसे कुम्भपर्व पर हरिद्वार आता है वह जन्म मरण के बन्धनों से रहित होकर स्वर्ग प्राप्तिका अधिकारी हो जाता। कुम्भपर्व में उपस्थित यात्रियोंके सम्मुख देवता भी उसी प्रकार नम्र हो जाते हैं। जैसे धन हीन दरिद्र लोग धनवानोंके सम्मुख। जब बृहस्पति कुम्भराशिमें और सूर्य मेष राशिमें हो ऐसे पव समय पर हरिद्वार का स्नान मोक्ष देने वाला है। व्रत, दान, तप, जप आदि शुभ कर्म गंगा के तट पर किए जाने से करोड़ गुणा फल देते हैं।

इसलिए कुम्भपर्व पर उपस्थित यात्रीगण व्रत, तप, जप आदि शुभ कर्मोंके द्वारा अपना और राष्ट्रका ऐहिक औ पारलौकिक कल्याण करें यही हमारी जनता जनार्दन से प्रार्थना है।

———

# चन्द्रग्रहण फल विचार

[ ले०—श्री पं० कृष्णदत्त शर्मा ज्योतिष रत्न ]

सं० २००७ चैत्र शुक्ल पूर्णिमा रविवार ता० २ अप्रेल को १२ बजकर ३४ मिनट पर खग्रास चन्द्रग्रहण का स्पर्श होता है और मोक्ष ३ बजकर ४४ मिनट पर होगा। इस का फल यह है—पौंड्र, आंध्रक, कैकय, कलिंग, अश्मक, पूना, नागपुर, तथा मध्यदेश और दक्षिण दिशा में युद्धभय, दुर्भिक्ष, महामारी, तथा चौर अग्नि आदि उपद्रवों से पीड़ा हो। गवादि पशुओं का दूध कम तथा गवादि चतुष्पदों को कई प्रकार के रोग हों वर्षा का नाश, धान्य की उत्पत्ति कम, वर्षा काल में कई स्थानों पर अनावृष्टि और अतिवृष्टि आदि दैवी प्रकोप से दुर्भिक्ष आदि का भय हो। वायुका वेग अधिक रहे। सोना, काँसा कतरी आदि व्यापार की वस्तुओं का भाव तेज हो। चावल, चने, अलसी मटर, कुलथ, मूंग, मोंठ, गेंहु और तुश वाले धान्य तथा किराने की समस्त वस्तुएँ और रुई कपासादि के भाव तेज रहें। अफीम और चांदी मंदी होवे अतः पहिले से ही बेच देनी चाहिये। ग्रहण को बुध की दृष्टि होने के कारण शहद, तैल, घृत, मक्की आदि पीला धान्य सोना तथा पीतलादि पीली धातु का नाश और राजाओं को कष्ट हो।

राशि फलः—मेष वालों को रोग वृष को मान क्षय मिथुन कार्य सिद्धि, कर्क को लाभ, सिंह को हानि, कन्या को घात, तुला को हानि, वृश्चिक को धनाप्ति धनु को विध्वंस, मकर को चिन्ता, कुम्भ को सौख्य, और मीन राशि वालों को स्त्री वियोग।

नक्षत्रफलः—रोहिणी वालों को कर्म हानि, हस्त को शारीरक पीड़ा, स्वाति के मन में विकलता, अनुराधा के मित्रजनों की पीड़ा, धनिष्ठा वालों के कुटुम्बियों को कष्ट।

ग्रहण जिसके जन्म नक्षत्र पर है उन व्यक्तियों तथा नगरों व राष्ट्रोंको दुःख, शोक तथा आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक कष्ट हों। जिस देश, नगर व व्यक्ति की जन्म राशि व जन्म लग्न की राशि पर हो उनके लिए अनेकों प्रकार के दुःख और विषम स्थिति उत्पन्न होंवे। परन्तु उसकी शान्ति कर देनेसे फिर पीड़ा दूर हो जाती है। यह चन्द्र ग्रहण हस्तनक्षत्र और कन्याराशि में हो रहा है अतः हस्त नक्षत्र तथा कन्या राशि व कन्या जन्म लग्न वाले व्यक्तियों को अवश्य शान्ति कर देनी चाहिए।

## साधारण शान्ति

अनिष्ट ग्रहण की शान्ति के लिए सरसों, कूठ, दारु हल्दा, लोध्र; लाजा, सफली और सुरामांसी—इन औषधियों को जलमें डाल कर स्नान करनेसे ग्रहणके अनिष्ट कारक फल का नाश होकर सूर्यादि सम्पूर्णग्रह शुभ फलकारक हो जाते हैं।

सुवर्णनिर्मितं नागं सतिलंकांस्यभाजनम्।
सदक्षिणं सवस्त्रंच ब्राह्मणाय निवेदयेत्॥
सौवर्णं राजतं वापि बिम्बं कृत्वा स्वशक्तितः।
उपरागभवे क्लश च्छिदेविप्रायदापयेत्॥

यथा शक्ति सुवर्ण का सर्प तिल पूरित कांस्यापात्र पर रखकर सवस्त्र और दक्षिणायुक्त ब्राह्मणों को देवें, सोने वा चान्दी का स्वशक्ति के अनुसार बिम्ब बनाकर ब्राह्मणको दान करने से अनिष्ट ग्रहण का फल दूर होता है।

## दान देने का मन्त्रः

तमोमय महाभीम सोम सूर्यविमर्द्दन ।
हेमतार प्रदानेन ममशान्तिप्रदो भव ।।
विधुन्तुदनमस्तुभ्यं सिंहिका नन्दनाच्युत ।
दानेमानेन नागस्य रक्ष मां वेधजाद्भयात् ।।

## ग्रहणोपरान्त उत्पात दिवस फल विचारः—

ग्रहण मोक्ष होने के बाद ७ दिन के भीतर निम्न-लिखे निमित्तों से प्रत्येक का पृथक पृथक फल होता है—आंधी आवे तो अन्न का क्षय, धूहर पड़े तो रोगोपद्रव भूकम्प हो तो श्रेष्ठ नेता की मृत्यु, उल्का-गिरे ( नानावर्ण के तारा टूटें ) तो राज्य मन्त्री का नाश, अनेक वर्ण बादल हों बहुत मेघ गाजे तो मेघ के गर्भ का नाश, बिजली चमके तो राजा तथा सर्प सूअरादि दांतों वाले जन्तुओं का भय परवेष ( सूर्य चन्द्र के कुण्डल ) हों तो रोगों की पीड़ा, दिग्दाह हो ( चारों ओर बहुत तेज से सन्ध्या फूले ) तो राजा तथा अग्निका भय हो, रूक्ष वायु बहुत तेजी से चले तो प्रबल चोरों का उपद्रव, निर्घात, ( बिना बादल गाजे ) अथवा इन्द्र धनुष दंड का चिन्ह हो तो दुर्भिक्ष का भय पराये राजा की सेना के अनेकोपद्रव, और ग्रह युद्ध हो ( भौमादिशनि पर्यन्त ग्रहों में कोई ग्रह समीप आवे ) अथवा केतु का उदय हो ( धूमकेतु वा चोटी वाला तारा दीखे ) तो राजाओं का परस्पर युद्ध हो ।

---

# त्रैमासिक चांदी, सोना, रुईकी अनुभूत रिपोर्ट

[ लेखक — ज्योतिर्भूषण दैवज्ञभूषण श्री पं० गिरिधारीलालजी शर्मा ]

प्रथम सप्ताह—ता० २५ मार्च तक। रुई तो अवश्य मंदी होगी, परन्तु घटबढ बहुत होगी, इस लिये घबराता नहीं, केवल ता० २८ को तेजी होगी। चांदी में घटबढ होगी, अखांर में २।।) रुपया तेज रहेगा–ता० २९ को-अच्छी मंदी को संभावना है। ता० ३० को रूई चांदी एक बार तेज होगी बेचो अवश्य-और अचूक लभा होगा यदि विशेष द्रव्य वाले नहीं हो तो ता ३० को दोतरफा लगा के कार्य करो।

द्वितीय सप्ताह— ता० १ से ७ अप्रैल तक। रूई की मंदी कोई नहीं रोक सकता, ईश्वर से डर के कहते हैं सोने में तेजी चांदी में घटबढ रहेगी। ता० ३ रुई फीचर मंदा चांदी कुछ तेज। ता० ४ के ४ बजे से ता० ५ के ४ बजे तक चांदी में बड़ी उथल पुथल होगी। चढे या घटे मंदी का धड़ाका होगा। ता० ६–७ को दो तरफा लगावो ता० ६ को–३ बजे बड़ी घटबढ़ होगी।

तृतीय सप्ताह—ता० ८ से १७ अप्रैल तक। ता० १३ से १७ तक पिछले २ दिन तेज पीछे मंदी होगी। ता० १३–१४ को अच्छी घटबढ़ होगी। ता० १४–१५ तेजी। ता० १६–१७ मंदी ता० ७-१० में भी अधिक मंदी को संभावना है।

चौथा सप्ताह—ता० १८ अप्रैल से रुई में मंदी होगी, १–२ दिन या २४ तारीख तक पीछे अच्छी तेज होगी। चांदी सोना सामान्य रहेगा या कुछ मंदा रहेगा। ता० १८–१९ में एक दिन रूई अच्छी मंदी, चांदी सोने की धारणा मंदी, ता० २० को दो तरफा लगावो ता० २२ को २० घडी दिन बीतने पर हरेक वस्तु में घटबढ़ चलेगी।

पंचम सप्ताह – ता० २५ अप्रैल से २ मई तक अच्छी घटबढ होगी रूई में पहले मंदी होके तेज होगी। ता० २९ को रुई तेज होवे तो ता० २९ तक तेज, मंदी हो तो मंदी। ता० १ को या २ को चांदी में अच्छी घट बढ होगी, १ तेज १ मंदी होगी। ता० ३० को बंद बजार में कई एक व्यापारी उथल पुथल हानि लाभ में आजायेंगे। यहां कुछ उत्पात भी होंगे। ता० २८ २९ को दो तरफा लगावो। मंगलवार चंद्र दर्श और पूर्णिमा रुई में अग्नि कांड करेगीं।

छठा सप्ताह—ता० ३ से ९ मई तक। चांदी सोने में घटबढ होगी। घटे भाव पर देना अच्छा है। ता० ३-४ में एक मंदी का झटका लगेगा वहां खरीदना अच्छा है। ता० ५ को घटे वहां खरीदते जावें चांदी में २) सोने में १) १।। रूई में १०) १५) रु० बढ़ेगा। ता० ८ को रूई मंदी चांदी तेज। ता० ९ को अवश्य घटबढ़ रहेगा। कुछ कुछ बूंदा बांदो का भी योग बनेगा। घटबढ़ का सप्ताह है।

सातवां सप्ताह—ता० १० से १६ मई तक। ता० १३ तक तो तेजी रहेगी। ता० १४-१५-१६ को घटबढ़ से मंदी होगी। ता० ११ को प्रातः से ही तेज बाजार रहेगा। ता० १२ को मछली की सी चपलता रहेगी। कभी इधर कभी उधर। ता० १४ को बंद बाजार में रात्रि के ८ बजे घट्बढ होगो। ता० १५ के ३ बजे चांदी वेचना अच्छा है।

अष्टम सप्ताह—ता० १७ से २५ मई तक। चाहे कितना ही घटबढ़-होवे अन्त में बेचना ही अच्छा है। ता० १७-१८को रूई में एक अच्छा तेजी का उछाला आवेगा। वहां बेचो। यहां व्यापारों में कुछ उत्पात होगें। ता० २२-२३ में अच्छी मंदी दोनों नहीं तो भी १ अवश्य

होगी।ता० २५ को दोतरफा लगा सकते हो ता० २५ की सांयकाल तेज रहेगी । ता० २३ को जैसा बजार वैसा ही बजार भविष्य में ता० ३१ मई तक समझना।

नवम सप्ताह—ता० २६ से ३१ मई तक। रूई चांदी जरूर तेज होगी। ता० २८–२९ को अच्छी घटबढ़ से तेज। ता० २८ को रूई अवश्य मंदी। ता० २९–३०–३१तीनों तेज नहीं भी तो दो अचूक तेज रहेंगी।

दशम सप्ताह—ता० १ से ७ जून तक। रूई में तो अवश्य तेजो। चांदी सोना साधारण स्थिति में रहेंगी। ता० १ को रूई तेज रहे तो निश्चय आगे तेजी। ता० ५ को चांदी सोना अवश्य तेज ता० ६ को घटबढ से रूई तेज सोना चांदी मंदा रहेगा। ता० ७ को १२ बजे के बाद कार्य करो। ता० ६ को घटबढ का ज्यादा जोर है रूई में यहां उत्पातों का जोर है।

एकादश सप्ताह—ता० ८ से १५ जून तक। घटबढ रहेगा, साधारण सी तेजी होगी। ता० ८ को दो तरफा लगावो या घटे भाव खरीदो। चांदी में घटबढ़ रहेगी। ता० ९, १० घटबढ़ में रहेगा। ता० १२ को सामान्य तेजी। ता० १३ को चांदी मंदी रूई तेज। ता० १४ को २ बजे से रूई की मंदी रहेगी। ता० १६ तक चांदी में घटबढ़ होगी।

बारहवां सप्ताह—ता० १६ से २४ जून तक। रूई सोना मंदा, चांदी में ता० २० के ४ बजे से २४ तक अचूक तेजी, परन्तु ता० २१ को तेजी रहे तो पक्की तेजी समझना नहीं तो घटबढ़ सा रहेगा। ता० २० तक ही नई मंदी समझना, आगे नहीं है। ता० २२–२३ को दो तरफा लगावो या बढे घटे भाव बेचो। ता० २४ को हरेक वस्तु तेज।

## ज्योतिष के कुछ अनुभूत योग

(१) सूर्य नीचका होवे और सूर्य से दूसरे पर में कोई ग्रह नहीं होवे तो निश्चय दरीद्री योग होता है।

(२) जिस समय सप्तमेश और लग्नेश के अंक जोड़ने से जो राशि उसको गोचर में गुरु आवे तब निश्चय विवाह होता है।

(३) इसी प्रकार पंचमेश लग्नेश की अंक राशि में गुरु आता है तब संत्पन होती है।

सायन सिद्धान्तानुसार ग्रहों के योगायोगों का प्रभाव व्यापारी क्षेत्र में जो होगा उसका विवेचन संक्षेप से इस लेख में किया गया है, कुछ आधार नवांशों का भी लिया है। इस लेख का उद्देश्य व्यापारी क्षेत्र के जनतंत्र को सही मार्ग पर चलाने का है, जिससे व्यापार क्षेत्र के विचरने वाले यात्री पथ भ्रष्ट न होवें। यह लेख वैज्ञानिक सूचना के आधार पर लिखा गया है जिससे पाश्चात्य Imagination कहते हैं। पाठक इसका सदुपयोग करके लेखक के उत्साह में संवर्द्धन का काम करेंगे। यदि इस लेख का आधार परिस्थिति से विपरीत प्रमाणित हो उसकी सूचना देने वाले सज्जन लेखक के अन्वेषण में सहयोगी समझे जावेंगे–किन्तु इसके आधार पर कार्य रूप में परिणित होने पर हानि लाभ का उत्तरदायित्व लेखक के अधिकार से परे है। अगर प्रत्येक व्यक्ति अधिकार परायण रहकर ही अपना कदम आगे बढायें। यह संक्षेप वृत्त है।

## अप्रेल १९५० ई०

अप्रेल मास में चांदी सोने का बाजार शुरू में तेज रहेगा और तारीख ५ के बाद सब में एक बार अवश्य मंदी आवेगी और चांदी सोने में फिर ९ को तेजो का प्रभाव होगा तथा बाजार शनैः२ लेवल पर आजावेगा, याने प्रथम सप्ताह में चांदी सोने में अच्छी तेजा आवेगी यह प्रभाव साधारणतया लगभग २५ तक

चल सके। गुड-घी-कांकड़े-अलसी आदि में तेजी आवेगी-अनाज के बाजार में कुछ मंदी आवेगी इस मास के प्रथम सप्ताह में रूई के बाजार में काफी मंदी आवेगी और ता० १५ से गुड़० घी० शक्कर के बाजार में भी परिवर्तन होंगे, यह मास बड़े परिवर्तन का है, इस में व्यापारी क्षेत्र में मोटे रूप में परिवर्तन होंगे।

## मई० १९५० ई०

मई मास व्यापार क्षेत्र के लिये अति महत्व का है। प्रारम्भ में चांदी सोने के बाजार स्टेडी में रहेंगे और शनैः २ मास अंत तक काफी गिर जावेंगे। यह स्थिति मास के मध्य काल के २-३ दिन पूर्व या पश्चात् आवेगी और मास के अंत में भली प्रकार प्रभाव करेगी। घृत-तेल-गुड तिल कांकडे आदि भी मंदे होंगे. इस मंदी में खरीदने पर अच्छा लाभ मिलेगा। और मास के अंतिम दिनों में प्रत्येक वस्तु मंदी होगी विशेष चांदी सोना आदि। ता० १६ से २५ के बीच में काफी रद्दाबदल होंगे गेंहू चने जौ आदि इस मास में सस्ते होंगे मई मास १९५० का ऐतिहासिक होगा।

## जून १९५० ई०

इस १९५० के जून मास में चांदी संभवतः कई वर्षों के पूर्व की स्थिति में आवेगी, इसी प्रकार सोना भी ; अनाज भी सस्ता रहेगा। इस मास में प्रकृति की परिवर्तन शील शक्ति का प्रभाव अच्छे रूप में होगा रूई कपास बिनोले-गुड-शक्कर-चांदी-सोना-कपड़े आदि के भावों में अच्छी मंदी आवेगी यह संक्षेप विवेचन ग्रह योगों के आधार पर है विशेष विवेचन मंगाने पर प्रत्येक वस्तु का पूरा हाल जान सकेंगे।

---

## रुई, चांदी, सोना, गुड़ की दैनिक घटाबढ़ी

# व्यापार का अनुभूत भविष्य

[ लेखकः—श्री पं० कृष्णदत्त शर्मा ज्योतिष रत्न ]

### (१) सौर वैशाखमास ( मेष संक्रान्ति ) १३ अप्रैल से १३ मई तक।

यह मास स्वास्थ्य की दृष्टि से मध्यम है, परन्तु फिर भी प्रजा में यत्र तत्र विषूचिका ( हैजे ) का प्रकोप ज्वर बाधा तथा रक्तातिसारादि रोग व्यापक रूप से दृष्टि गोचर होंगे। बालको का भूतादि की बाधा और युवावस्था की स्त्रियों को कष्ट हों। सूर, भद्र, कलिंग बंग, मगध आदि पूर्व के देशों में उपद्रव प्रजा को कष्ट व क्लेश, दक्षिण में दंगे फिसाद अधिक हों, पश्चिम तथा उत्तर दिशा में परस्पर युद्धादि का भय हो और ईशान कोण में कई प्रकार की हलचलें होती दृष्टि गोचर होंगी। विदेशों में रहने वालों को विदेशी लोगों को और वादविवाद में तत्पर रहने वालों को व व्यभिचारियों और नशे बाजों को अनेकों प्रकार की यातनायें मिलें। पिशाचों का नाश म्लेच्छों को कष्ट तथा परशियादि देशों में कई प्रकार की हानि होवे। वैष्णवों को दुःख। जगत में कई स्थानों पर दुर्भिक्ष तथा चौरादि का उपद्रव हो। छोटे राष्ट्र बड़े राष्ट्रों को आत्मसात् करने पर तत्पर हुये दृष्टि गोचर होंगे। गवादि चतुष्पादों को कष्ट तथा इनका मूल्य बढ़े। विधर्मियों को पीड़ा। प्रजा में गुरूजनों तथा अतिथियों व पूजनीयों को सन्मान मिले। जगत् में विवाहादि मंगलकार्य अधिक हों जिससे आनन्द तथा उत्साह की वृद्धि हो। धान्य की उपज सुन्दर होने से धान्य का भाव कुछ मंदा हो।

मीन की संक्रान्ति से मेष संक्रान्ति तृतीयवार तथा चतुर्थ नक्षत्र और रात्रि में लगने के कारण धान्य आदि का भाव मन्दा तथा सुभिक्ष होवे ।

तूर्येधिष्णयेच पूर्वस्मात् यदि वारे तृतीयके ।
संक्रान्ति निशि सूर्यस्य सुभिक्षं स्यात्तदोत्तमम् ॥

परन्तु इस मास में गुरू और शुक्र का एक राशि में युक्त होना और ज्येष्ठ प्रतिपदा को बुधवार का होना प्रजा में दुर्भिक्ष गेंहूं, उड़द आदि धान्य, गुड घृत तैलादि रस, नारियल, सुपारी आदि फल रूई आदि तैल से बिकने वाली वस्तुओं का भाव तेज हो। "गुरुशुक्रौगतावेकराशौ दुर्भिक्ष दुःखदौ"। "चन्द्रग्रहेण दुर्भिक्षं भवतीह न संशयः" "ज्येष्ठाद्येबुधवारश्चवर्षे-त्वागात्रिकेभयम्" जेठ वदी पड़वा दिने जे होवे बुधवार। तो होवे दुर्भिक्ष अति कहा उक्करा विचार ॥ मंगल और शनिश्चरका सिंहमें होना तथा गुरुका कुम्भराशिमें इन दोनोंसे सप्तममें होना अयोध्या लंका और जगन्नाथपुरी के मध्यके देशोंमें क्षुधाभय तथा शस्त्र भयको सूचित करते हैं।

यदा सौरि सुराजमंत्री यदैकराशौ समसप्तराशौ ।
अयोध्यलंकापुरमध्यदेशे क्षुधाभयंशस्त्रभयं करोति ॥

जगत् में क्रोधकी मात्रा बढ़े, लोगोंको अनेकों प्रकारकी चिन्ताएं हों। गर्दभादिका नाश इनके पालने वालें तथा कुम्भकारों को पीड़ा। वायु अग्नि, चौर, अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, युद्ध महामारी आदि से कष्ट हों।

राशिफल:—मेषराशि वालों को धनलाभ, वृष को उदर रोग, मिथुन को कार्य नाश, कर्क को वित्त-लाभ, सिंह को धन तथा स्त्री सुख, कन्या रोगोत्पत्ति, तुला को राज्यभय, वृश्चिक को सुख, धनु को लाभ, मकर शोक व चिन्ता, कुम्भ को उत्तम भोजन की प्राप्ति, मीन को धन नाश ।

नक्षत्रफल:—रेवती अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा नक्षत्र वालोंको सुख तथा भाग। आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य नक्षत्र वालोंको रोग पीड़ा हो। अश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रानक्षत्र वालों को वस्त्र सुख तथा कपड़े के व्यापारियों को लाभ। स्वाति, विशाखा, अनुराधा नक्षत्र वालों को हानि। ज्येष्ठा, मूला, पूर्वाषाढ़ा, श्रवण धनिष्ठा, नक्षत्र वालोंको धनप्राप्ति हो। शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद उत्तराभाद्रपद नक्षत्र वालों को प्रवास ।

## व्यापार:—

चैत्र शुक्लपक्ष ( सुदी ) में रुई, चांदी, सोना, गुड़ का दैनिक रुख:—

| तिथि | वार | घटाबढ़ी |
|---|---|---|
| १० | बुधवार | —बाजार दिनके २॥ बजे तक दुतर्फा फिर मन्दा । |
| ११ | गुरुवार | —बाजार मन्दा चले दिनके १॥ बजे से २॥ बजेतक तेजी फिर मन्दा रहे । |
| १२ | शुक्रवार | —बाजार दुतर्फा चले परन्तु रुख तेजी की ओर रहे । |
| १३ | शनिवार | —चांदी, सोना, रुई, गुड़ में तेजी का चांस है । |

सारांश:—दर मंदीमें खरीदने का चांस है, सावधानी से व्यापार करें ।

वैशाख कृष्णपक्ष ( वदी ) में रुई, चांदी, सोना गुड़का दैनिक रुख:—

| तिथि | वार | घटाबढ़ी |
|---|---|---|
| १ | सोमवार | —चांदी के व्यापारियों चेतो मंदी है, दुतर्फा चलते हुये वस्तु मात्र मंदी । |
| २ | मंगलवार | — दिनके ३ बजेतक दुतर्फा फिर तेजी कारक है । |
| ३ | बुधवार | —चांदी, सोना, रुई मंदे, गुड़में तेजी । |
| ४ | गुरुवार | —चांदी, सोना, रुई, गुड़में दुतर्फा चले । |
| ५ | शुक्रवार | —चांदी, सोना,रुई गुड़में तेजी हो । |
| ६ | शनिवार | —चांदी, सोना, रुई, गुड़में मंदा रहे । |
| ८ | सोमवार | —चांदी, सोना, रुई, गुड़में मंदे का अद्भुत चांस है । |

९ मंगलवार चांदी, सोना, रुईगुड़में दुतर्फारुख मंदा
१० बुधवार—गुड़मंदा, चांदी, सोना, रुई तेज।
११ गुरुवार—चांदी, सोना, गुड़, रुईमें, मंदा खेलों।
१२ शुक्रवार—चांदी, सोना, रुई, गुड़में तेजी आवे।
१३ शनिवार—चांदी, सोना, रुई गुड़में तेजी चले।
३० सोमवार—चांदी, सोना, रुई, गुड़में मंदे का चांस है।

सारांशः—इस पक्षमें रुईमें १५) २०) चांदी, ५) ६) सोना २) ३) सूत सण १) १॥) गुड़ १॥) २) के मध्य उंचे नीचे में चलेगा। इस पक्षमें वायदा व्यापारमें कई वस्तुओं की अत्यधिक मंदी और कईमें बड़ी तेजी चलेगी सावधान होकर व्यापार करने का समय है।

वैशाख शुक्लपक्ष (सुदि) में रुई, चांदी, सोना, गुड़का दैनिक रुखः—

तिथि वार घटाबढ़ी

१ मंगलवार—आज दिन बाजारमें तेजी चले।
२ बुधवार—चांदीमें मंदा, रुईतेज; सोना, गुड़ दुतर्फा
३ गुरुवार—चांदी, सोना, मंदे, गुड़, रुई में तेजी,।
४ शुक्रवार—बाजार पहिले तेजी फिर मंदा चले।
५ शनिवार—चांदी, सोना, रुई गुड़में मंदा चले।
७ सोमवार—चांदी, सोना, रुई; गुड़में, अच्छी तेजी का चांस।
८ मंगलवार—चांदी; सोना, रुई, गुड़में तेजी हो।
९ बुधवार—रुई, चांदी, सोना. गुडमें मंदाकारक है।
१० गुरुवार—दुपहरबाद, रुई, चांदी, सोना गुड़ में तेजी।
११ शुक्रवार—चांदी, सोना, गुड़, रुईमें तेजी चले।
१४ सोमवार—बाजार भावमंदे की ओर रुकेगा।
१५ मंगलवार—घटबढ़ चलते बाजार मंदा रहे, परन्तु गुड़ में तेजी हो।

सारांशः—रुईमें १०) १५) चांदी ८) १० सोना ४) ५) गुड़ २) ३) सूत, सण, मूंगफली, एरंडादिमें १॥) २) के मध्य बाजार ऊंचे नीचे चले।

## (२) सौर ज्येष्ठ मास (वृष संक्रान्ति) १४ मई से १३ जून तक

स्वास्थ्यकी दृष्टिसे यह मास अधिक अच्छा नहीं है। प्रजामें यत्र तत्र पित्त, कफ, वायु आदिके अनेकों रोगोपद्रव ज्वर, रक्तविकार, पित्ताधिक्य, नेत्ररोग, अतिसार, शीतला (विस्फोट) विषूचिका (हैजा) आदिका प्रकोप हो। पूर्वदिशा, अग्निकोण दक्षिण दिशामें कई प्रकारकी हल-चल हो जिनके कारण प्रजामें चिन्ताकी लहर दौड़ पड़े। चोर, पाखंडी, क्रूर बुद्धि वाले, प्राणियोंकी हिंसा करने वाले आदि दुष्ट मनुष्यों-की वृद्धि हो तथा इनको सुख मिले। वायुका वेग अधिक तथा सूर्यकी धूप अधिक पड़े। गेहूँ, मसूरादि धान्य, घृत गुड़ादि रस; सर्वप्रकारका किराना; चांदी आदि श्वेत वस्तुओंका भाव तेज। लाल वस्तुओंकी हानि। नीलमणिका भाव तेज तथा इनके व्यापारियों को कष्ट बालकों को कष्ट अधिक हों। विलासिनी प्रमदाओं सिनेमा आदि काम करने वालोंको क्लेश तथा पीड़ा हो। शासकों की विचारशून्य अनीतिसे प्रजामें परस्पर वैमनस्य उत्पन्न हो जिसके कारण यत्र-तत्र दंगे फिसाद अधिक हों।

मेष संक्रान्तिसे वृष संक्रान्ति चतुर्थवार तथा पञ्चम नक्षत्रमें है, अतः राजा तथा प्रजामें दुःख शोककी मात्रा बढ़े। 'वारे चतुर्थे यदि पञ्चमेवा। पूर्वक्रमात् संक्रमते यदार्क स्तदा च दुःखं नृपविग्रहं च ॥' ज्येष्ठकी अमावस मंगलवारकी है अतः चौर तथा अग्निका भय और दोनों कालकी उपजमें हानि।

रवि शनि मंगलवारी अमावस जेठ ही जान।
चोर अग्नि भय काल दुह निपजत नहीं ज गधान॥

ज्येष्ठ संक्रान्तिके दिन रविवार होनेके कारण अनावृष्टिका भय, दुर्भिक्ष तथा देशोंमें उपद्रव व क्लेश हो। गेहूं आदि धान्यका नाश, रुई, सूत, कपड़ा सर्वप्रकारके फल, गुड़, खांड, घृत, मंजीठ, कुसुंभा तथा सर्वप्रकारके किरानेका भाव तेज होवे।

वैशाखे वृषसंक्रमें शनिकुजादित्या हि दुर्भिक्षदाः।
देशक्लेषरुचिर्महर्घविधयः प्राप्या न गोधूमकाः॥
कर्पासे फलवस्तुनीक्षुरसजे मांजिष्ठकेत्यादयः।

वृष संक्रान्तिके समय—वृषमें सूर्य और बुध चतुर्थमें शनि, मंगल, दशममें गुरु एकादशमें शुक्र और राहु हैं। पाप और शुभ दोनों होने से मिश्र हैं। अतः शारदीय अन्नों की उपज ( मूंग, मोठ, ज्वार, बाजरा, मक्की, माष आदिकी ) साधारण ही रहेगी।

वृषे संक्रमणे भानोः केन्द्रस्थानगतैः शुभैः।
शारदीय धान्य निष्पत्ति रुत्तमा कथिता बुधैः॥
पापैरेवस्थितैः स्वल्पा मिश्रै मिश्रा प्रकीर्तिताः।

राशिफलः—मेष राशि वालोंको उत्तम भोजन प्राप्ति वृष राशि वालोंको धननाश, मिथुन राषिवालोंको धनलाभ, कर्कराशि वालोंको उदर रोग, सिंह राशि वालोंको कार्यनाश, कन्या राषि वालोंको वित्तलाभ, तुला राषि वालोंको धन तथा स्त्री सुख, वृश्चिक राशि वालोंको रोगोत्पत्ति, धन राशि वालोंको राज्यभय, मकर राशिवालों को शोक और चिन्ताकारक है।

नक्षत्र फलः—अश्विनी, भरणी, कृत्तिका नक्षत्र वालोंको प्रवास, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य अश्लेषा वालोंको सुखोपभोग। मघा, पू० फा० उ० फा० वालोंको रोगादि पीड़ा। हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा ज्येष्ठा नक्षत्र वालोंको वस्त्र-सुख तथा कपड़ेके व्यापारियोंको लाभ। मूला, पू० षा० उ० षा वालोंको हानि। श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वा० भा० रेवती वालोंको बहुत धनकी प्राप्ति हो। वृष ( ज्येष्ट ) संक्रान्ति के दिन यदि वर्षा हो जाय तो विस्फोटक ( शीतला ) आदि रोगों से तथा चौर, अनावृष्टि, खेतियोंका नाश, आदि उपद्रवों से राजा प्रजा और गवादि पशुओं को कष्ट होवे।

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष ( वदी ) में रुई, चांदी, सोना, गुड़का दैनिक रुख :—

तिथि वार घटा बढ़ी

१ बुधवारः—रुई, चांदी, सोना, गुड़ मन्दा रहे।
३ गुरुवारः—बाजारमें वस्तु मात्रके भाव तेज होवें।
४ शुक्रवारः—बाजार भाव दुतर्फा चले।
५ शनिवारः—चांदी, सोना, रुई, गुड़में तेजी चले।
७ सोमवारः—रुई, चांदी, सोना, गुड़में मन्दा आवे।
८ मगलवारः—बाजार भावोंमें तेजी आवे।

ज्येष्ट कृष्ण पक्ष (वदी) में रुई, चांदी, सोना, गुड़ का दैनिक रुखः—

तिथि वार घटा बढ़ी

९ बुध वार चांदी, सोना, रुई; गुड़में दुतर्फा चले।
१० गुरु वार—चांदी, सोना रुई गुड़में तेजी चलू हो,
११ शुक्रवार—बजार रुख दुतर्फा चले।
१२ शनीवार—चांदी, सोना, रुई, गुड़में मंदा आवे।
१४ सोमवार—चांदी, सोना, रुई, गुड़में तेजी हो।
३० मंगलवार—चांदी, सोना, रुई, गुड़में तेजी चले।

सारांश—इस पक्षमें रुईमें १०, १५) चांदी ४) ५) सोना २) ३) गुड़, सण, सूत १॥) २) के मध्य ऊंचे नीचे रहेगा।

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष (सुदी) में रुई, चांदी, सोना, गुड़ का दैनिक रुखः—

तिथि घटा बढ़ी

१ बुधवार—चांदी, सोना, गुड़ मन्दे, रुई में तेजी।
१ गुरुवार—चांदी, सोना, गुड़ रुई में तेजी चले।
२ शुक्रवार—चांदी, सोना, गुड़, रुई में मन्दा आवे।
३ शनीवार—बाजार का भाव मन्दे चले।
५ सोमवार—चांदी सोना, रुई गुड़में मन्दा चले।
६ मंगलवार—दिनके २॥ बजे तक तेजी फिर मन्दा गुड़ में तेजी हो।
७ बुधवार बाजार भाव मन्दे चलें।
८ गुरुवार—बाजार भाव दुतर्फे चले।
९ शुक्रवार चांदी, सोना, रुई, गुड़में तेजी हो।
१० शनीबार—चांदी, सोना रुई, गुड़में तेजी चले।
१३ सोमवार—बाजार भाव मन्दे रहें।

१४ मंगलवार— वस्तु मात्रामें तेजी की लहर चले।
१५ बुधवार—रुई, चांदी, सोना, गुड़में मन्दा हो।

सारांशः–इस पक्षमें रुईमें, १५) २०) चांदी ४) ५) सोना ३) ४) अलसी, गुड़ १) सरसो, सूत, सण १॥) २) के मध्य ऊंचेमें चले। हर मन्देमें खरीदने का चांस है।

## (६) सौर आषाढ़ मास ( मिथुन संक्राति )
## १४ जूनसे १५ जौलाई तकः—

यह मास स्वास्थ्यकी दृष्टि से साधारण ही हैं। पूर्वके देशोंमें कई स्थानों पर परस्पर कलह व उपद्रव हों, चीनमें कई प्रकारकी हल चलें हों। दक्षिणदिशा तथा पाताल लोक ( अमरीका ) में यत्र-तत्र श्रेणिसंघष उग्ररूप धारण करे। पश्चिमके देशों तथा अफरीका की जनतामें खलबली मचे। प्रजामें वायु-अग्नि, चोर अतिवृष्टि, अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, युद्ध महामारी आदि उपद्रवोंसे कष्ट व क्लेश हों। खेतीसे आजोविका करने वालोंकों हानियां हो। सिनेमागृहोंमें कार्य करने वालों नटों तथा संगीतज्ञोंको कई प्रकारके दुःख। भेड़, बकरी आदिका नाश। भूत-प्रेत पिशाचादिकोंके उपद्रव हों। ब्राह्मणों, वैश्यों, बालकों तथा पहाड़ी प्रदेशों और जङ्गली लोगोंको कष्ट हों। किसी बड़े नेताको भय। कपड़ेकी ग्राहकी अधिक तथा कपास की हानि। सर्वश्वेत कपड़ा आदि तथा चांदी आदि श्वेत धातु का नाश। रुई, कपास, सूत, कपड़ा. सण, रेशम, ऊन, पशमीना, गेहूं आदि सर्वधान्य, घृत, तैल, तिल, गुड़ादि रस, चांदी, कांसी आदि श्वेत धातु तथा लोहादि काली वस्तुओं, शहद, मोम और समुद्र में होने वाले मोति आदिका भाव तेज रहे। प्रथम आषाढ़ कृष्णपक्ष चतुर्दशी को रोहिणी नक्षत्र होनेके कारण समय करवरा और राज्य का छत्रभंग कारक है। द्वितीयआषाढ़वदी द्वादशी और त्रयोदशी को रोहिणी नक्षत्र है अतः रौरव काल, मनुष्यों को हानि और चतुष्पदों का नाश, रस कस महंगे, तथा घनी अंधेरी आवे।

द्वादश तिथि रोहिणी हुवे रौरव काल दुहानि॥
लोक खपैं चौपद मरैं रस कस महंगे जोइ।
डक्क रिषी सुर इम भणै विरले जिवो कोइ॥
जे आवे दिन चौदसै समो करवरो जान।
छत्रभंग हुई राजको निश्चै कर मन आन॥
तेरस दिन जे रोहिणी एक घटी जे होइ।
घनी अंधेरी चाल है वर्षा भी नहि होइ॥

बृहस्पति शनि से सप्तम में है अतः प्रजाका नाश और अन्न का क्षय होवे।

यदा जीव युतो मंदो जीवाद्वा सप्तमे स्थितः।
तदा प्रजा विनश्यंति भूयश्चात्र परिक्षयः॥

राशि फलः—मेष राशि वालोंको शोक व चिन्ता कारक वृष वालों को उत्तम भोजन प्राप्ति, मिथुन वालों को धन नाश, कर्क वालों को धन लाभ, सिंह वालों को उदर रोग, कन्या वालों को कार्य नाश, तुला वालोंको वित्त लाभ, वृश्चिक वालों को धन तथा स्त्रीसुख, धनु वालों को रोगोत्पत्ति, मकर वालों को राज्य भय, कुम्भ वालों को सुख, मीन वालों को लाभ।

नक्षत्र फलः—रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा वालों को प्रवास। पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, मघा, पूर्वा० फा० उत्त० फा० वालों को सुखोपभोग। हस्त, चित्रा स्वाती वालों की रोगादि पीड़ा। विशाखा, अनुराधा ज्येष्ठा मूला, पू०षा, उ०षा वालों को वस्त्र सुख तथा कपड़े के व्यापारियों को लाभ। श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा वालों को हानि। पू० भा० उ० भा० अश्विनी, भरणी, कृत्तिका वालों को बहुत धनकी प्राप्ति होवे।

प्रथम आषाढ़ कृष्णपक्ष ( वदी ) में रुई, चांदी सोना, गुड़का दैनिक रुखः—

तिथि वार घटाबढ़ी
१ गुरुवार—चांदी, सोना, रुई, गुड़में तेजी हो।

२ शुक्रवार— बाजार भावों में तेजी चालू रहे।
३ शनिवार—चांदी, सोना, रुई, गुड़में दुतर्फा चले।
५ सोमवार—बाजार भाव मंदे की ओर रुके रहें।
६ मंगलवार—चाँदी, सोना, रुई, गुड़का उछाला लगे।
७ बुधवार—बाजार ऊंचा, नीचा, चलता मंदे की ओर रुके।
८ गुरुवार—चांदी सोना, रुई, गुड़में तेजी आवे।
६ शुक्रवार—बाजार में तेजी के अच्छे उछाले लगें।
१० शनिवार– दुतर्फा चले परन्तु रुख मंदे का।
१२ सोमवार– चांदी, सोना, रुई, गुड़में अच्छी मंदी चले।
१३ मंगलवार—बाजार दुतर्फा १२ बजे तक फिर एक तर्फा तेजी चले।
१४ बुधवार—बाजार रुख दुतर्फा परन्तु गुड़में तेजीहो।
३० गुरुवारः—तेजी मन्दी चलते रुख तेजी की ओर रहे।

सारांशः—इस पक्ष में बाजार में अच्छी उथल पुथल होगी। दर मन्दे में खरीदने की राय है।

प्रथम आषाढ़ शुक्ल (सुदी) में रुई चान्दी, सोना, गुड़का दैनिक रुखः—

तिथि वार घटाबढी

१ शुक्रवारः– चांदी, सोना, गुड़ में तेजी कारक है
२ शनिवारः— बाजार में तेजीके उछाले लगें।
४ सोमवारः—चांदी, सोना रुई, गुड़में मन्दा होवे।
५ मंगलवारः – चांदी, सोना; रुई गुड़ में तेजी हो।
६ बुधवारः—चान्दी, सोना, रुई, गुड़ में तेजीचले।
७ गुरुवारः—चांदी सोना, रुई गुड़ में तेजी हो।
८ शुक्रवारः—बाजार दुतर्फा चले रुख मन्दा रहे।
६ शनिवारः—बाजारभाव सामान्य परन्तु रुखमंदारहे
११ सोमवारः—चांदी, सोना रुई गुड़ में तेजी आवे।
१२ मंगलवारः—बाजार दुतर्फा चलते हुए मन्दा रहे।
१३ बुधवारः—पहले तेजी पीछे मन्दा आवे।
१५ गुरुवारः—हर वस्तु मात्रमें मन्दा हो सावधान।

सारांशः—इस पक्षमें रुईमें १०) १५) चांदी ४) ५) सोना २) २॥) लोहा ३) ४) गुड़ रंग में १) १।) सूत सणमें १॥) २) के मध्य ऊंचे नीचे बाजार चलेगा। पक्षान्त में हर तेजी में बेचना लाभ दायक होगा।

द्वि आषाढ़ कृष्णपक्ष (वदी) में रुई चांदी, सोना, गुड़का दैनिक रुखः—

तिथि वार घटाबढ़ो

१ शुक्रवारः—बाजार दुतर्फा चले कभी मंदा कभी तेज़ हो।
२ शनिवारः– चांदी, सोना रुई गुड़ तेज हो।
४ सोमवारः—बाजार भाव दुतर्फा रुख तेजी कारक
५ मंगलवारः—चांदी सोना रुई गुड़ में मन्दा हो।
६ बुधवारः—चांदी सोना रुई गुड़ में मन्दा चले।
७ गुरुवारः—चांदी, सोना, रुई गुड़में तेजी कारक।
८ शुक्रवारः—चांदी, सोना, रुई गुड़ में मन्दा चले
६ शनिवारः—बाजार रुख दुतर्फा रहे।
११ सोमवारः—चांदी सोना रुई गुड़में मन्दा हो।
१२ मंगलवारः—बाजार मंदे की ओर रुका रहे।
१३ बुधवारः—चांदी, सोना, रुई गुड़ में मन्दा हो।
१४ गुरुवारः—चांदी, सोना, रुई गुड़ में मन्दा चले।
१४ शुक्रवारः—बाजार भाव दुतर्फा चले।
३० शनिवार—चांदी, सोना, रुई गुड़में तेजी आवे।

सारांशः—इस पक्षमें रुई में २०) २५) चांदी १०) ११) सोना ३) ७) गुड़ सूत १॥) २) सण ३) ३॥) मूंगफली १ २) एरण्डा ३) ३।। श्रीफल १) १। के मध्य ऊंचे नीचे में चलेंगे।

## ८ सौर श्रावणमास (कर्क संक्रांति) १६ जौलाई से १६ अगस्त तकः—

स्वास्थ्य की दृष्टिसे यह मास हानि कारक है। विषूचिका (हैजा) ज्वर, नेत्ररोग अतिसार शीतला (विस्फोटक) महामारी आदि रोगोपद्रव व्यापें। पूर्व दिशा के सूर, मद्र, कलिंग, बंग, मगध आदि देशोंमें

तथा दक्षिण दिशामें कई प्रकार की हल चलें उत्पन्न होंवे ।

चोर, पाखण्डो, क्रूर बुद्धि वाले, प्राणियोंकी हिंसाकरने वालों दुष्ट मनुष्यों को पीड़ा । छोटे राष्ट्र बड़े राष्टों को आत्मसात् करनेके प्रयत्नोंमें तत्पर होंगे । प्रजामें दुःख युद्धविग्रह सूर्यकी धूप अधिक, वायुका वेग अधिक और धान्य तथा सरसोंका भाव तेज रहे । विद्वान् ब्राह्मणों नाग जातिके लोगों गवादि पशुओंसे आजीवका करने वालोंको, कुमारावस्थाकी स्त्रियोंको तथा बालकों को कष्ट और हानि । प्रसूता स्त्रियोंको सूतिकादि रोगों से पीड़ा हो तुरन देशोंमें आनन्द रहे । शूरों तथा वैश्योंको सुख और व्यापारियों को लाभ हो । गेहूं मसूरदिधान्य और मूंगफली, सरसों घृत, गुड़ादि रसों केशर हल्दी आदि पीलीवस्तुओं तथा चांदी का भाव तेज हो । चौपाये पशुओंको दुःख हो । प्रजामें परस्पर श्रेणि-संघर्ष अत्यधिक रूपमें यत्र तत्र दृष्टि गोचर होवें । तूफानी वायु चले । महावृष्टि हो । सौराष्ट्र गुजरातादि देशोंमें वृद्धि हो नदियां उमड़ पडें । कर्क संक्रान्ति रवि वार की है और मकर संक्रान्ति भी, अतः संसार में दुःखकी मात्रा बढ़े ।

यदा कर्कस्य संक्रान्ति अथवा मकरस्यच
भवंत्यर्काक भौमानां वारे दुःख प्रदा मता ॥

किसी बड़े नेता की मृत्यु अथवा अचानक दुर्भिक्ष पड़ जावे जिससे धान्यका भाव तेज हो ।

कर्क मकर दो बैन हैं बैठे राकण वारा ।
कै धरतीको पति मरै कै पड़े अचिन्त्योकार ॥

संक्रान्ति के समय वज्रयोग होनेके कारण जगत्में भयकारक है ।

व्याघाते च व्यतिपाते वैधृते वज्रगण्डयोः ।
भवेच्छूलेच संक्रान्ति कम्पिते भूतपलं तदा ॥

मिथुन संक्रान्तिसे कर्क संक्रान्ति चतुर्थ वार तथा पञ्चम नक्षत्रमें होने के कारण राज्यवर्ग तथा प्रजामें भय हो ।

वारे चतुर्थे यदि पञ्चमे वा
धिष्ण्ये तृतीये यदि पञ्चमे वा ।
पूर्वक्रमात् संक्रमते यदार्क
स्तदा च दुःख नृपविड्वरंच ॥

३ श्रावणसे २६ श्रावण तक चित्रामें मंगल और शत-भिषा में गुरु है यहः गोधूमान्न (गेहूं) का नाश सस्य हानि तथा महर्घता कारक है ।

वारुणेच यदा जीवः चित्रायां धरणीसुतः ।
नाशं यान्तिच गोधूमाः सस्यहानि महर्घता ॥

कर्क संक्रान्ति के दिन जलराशि (कर्कका) चंद्रमा है, अतः तंदुल योग कारक है जिससे चातुर्मास्य में सुन्दर वर्षा होवे ।

जलराशिगते च शशाङ्के रविसंक्रमणं कुरुते च कुलीरे ।
गणकः कथयति तंदुलयोगं तद्वर्षीत यवत्तु लान्तम् ॥

श्रवण संक्रान्तिके दशदिन भीतर ही बुधोदय होता है अतः श्रावण में शुद्ध वर्षा होवे ।

कर्का हूति दशदिनां लो ऊगसी बुद्ध ।
तो जाणिजे जोशियां श्रावण वर्षे शुद्ध ॥

श्रावण संक्रान्तिके दिन यदि वर्षा होजावे तो उस वर्षमें खेतियों को हानि पंहुचाने वाले टिड्डी तथा चूहे आदि जन्तुओं का उपद्रव नहीं होवे और सात महीने तक धान्य का भाव मंदा रहे, यदि वर्षा न हो तो अशुभ है, यदि उसदिन वायु अधिक चले या आंधी हो तो वर्षा के लिये अशुभ है ।

राशिफल—मेष वालोंको सुख, वृष वालोंको लाभ, मिथुन वालोंको शोक व चिन्ता, कर्क वालोंको उत्तम भोजन प्राप्ति, सिंहवालोंकोधन नाश, कन्यावालों को धन लाभ,तुलावालोंको उदार रोग,वृश्चिकवालोंको कार्य नाश, धनवालोंको वित्त लाभ, मकरवालों स्त्री सुख, कुम्भ वालों को रोगोत्पत्ति, मीन वालोंको राज्य भय हो ।

नक्षत्रफल - भरणी कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा आर्द्रा, पुनर्वसु वालोंको बहुत धन प्राप्ति । पुष्य, अश्लेषा, मघा वालोंको त्रास । पू० फा० उ० फा० हस्त चित्रा; स्वाति; विशाखा वालोंको सुखोपभोग । अनुराधा, ज्येष्ठा, मूला वालोंको रोगादि पीड़ा । पू० षा, उ० षा०, श्रवण, धनिष्ठा शतभिषा, पू० भा० वालोंको वस्त्र सुख तथा कपड़े के व्योपारियोंको लाभ । उ०भा० रेवती अश्विनी वालों को हानि हो । संक्रान्ति के समय यदि किसी का जन्म नक्षत्र हो अथवा जन्म नक्षत्रका अशुभफल हो तो तगर सरोरुह वृक्षके पत्ते, हल्दी, सरसों, और लोध इन पांचों औषधियोंको जल में मिलाके संक्रान्तिके दिन स्नान करनेसे जन्म नक्षत्रका अशुभ फल दूर होता है ।

तगर सरोरुहपत्रे रजनीसिद्धार्थलोधूसंयुते ।
स्नानं जन्मऋक्षे रवि संक्रान्तौ नृणां शुभदम् ॥

द्विआषढ़ शुक्ल ( सुदी ) में रुई, चांदी, सोना, गुड़, का दैनिकरुख ।

| तिथी | वार | घटाबढ़ी |
|---|---|---|
| २ | सोमवार— | रुई, मन्दी चांदी,सोना, गुड़, तेज हो । |
| ३ | मंगलवार— | रुई, चांदी, तेज गुड़में तेजी चले । |
| ४ | बुधवार— | बाजार भाव तेजी के उछाले लगें । |
| ५ | गुरुवार— | तेजी वाले नफेमें रहेगें । |
| ७ | शुक्रवार— | चांदी, सोना; रुई-गुड़में, तेजीका चांस |
| ८ | शनीवार— | दुतर्फा चले रुख तेज रहे , |

सारांश—इस पक्ष हरमंदेमें खरीदने का चांस है ।

---

# त्रैमासिक पर्व-व्रतादि निर्णय

[ 'श्रीविश्वविजय-पञ्चाङ्गसे' ]

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| चैत्र शुक्ल | ११ गुरुवार | ता० | ३० मार्च | कामदा एकादशी व्रत |
| | १२ शुक्रबार | ता० | ३१ मार्च | प्रदोषव्रत अनङ्ग १३ |
| | १५ रविवार | ,, | २ अप्रैल | खग्रास चन्द्रग्रहण सत्यव्रत चैत्री १५ |
| वैशाख कृष्ण | ३ बुधवार | ,, | ५ अप्रैल | श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० ६।४६ |
| | ११ बुधवार | ,, | १२ ,, | वरूथिनी एकादशी व्रत स्मार्त्त गृहस्थो का |
| | १२ गुरुवार | ,, | १३ ,, | मेष संक्रान्ति मु० १५ पुण्यकाल मध्याह्नोत्तर ३ बजे से प्रारम्भ मेला कुम्भ महापर्व हरिद्वार, एकादशी व्रत वैष्णवों का |
| | १२ शुक्रवार | ,, | १४ अप्रैल | प्रदोषव्रत |
| | ३० सोमवार | ,, | १७ ,, | सोमवती अमावस्या |
| वैशाख शुक्ल | १ मंगलवार | ,, | १८ ,, | चन्द्रदर्शन ( नयाचांद ) |
| | ३ गुरुवार | ,, | २० ,, | अक्षया ३ श्रीपरशुराम जयन्ती |
| | ५ शनिवार | ,, | २२ ,, | श्रीमदाद्य शङ्कराचार्य जयन्ती |
| | ७ सोमवार | ,, | २४ ,, | श्रीगङ्गा सप्तमी |
| | ११ शुक्रवार | ,, | २८ ,, | मोहिनी एकादशीव्रत |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | १२ शनिवार | ,, २९ ,, | | शनिप्रदोषव्रत |
| | १३ रविवार | ,, ३० ,, | | श्रीनृसिंह १४ व्रत |
| | १४ सोमवार | ,, १ मई | | सत्यव्रत कूर्म जयन्ती |
| | १५ मंगलवार | ,, २ ,, | | वैशाख पूर्णिमा |
| ज्येष्ठ कृष्ण | ४ शुक्रवार | ,, ५ ,, | | श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० १०।५५ |
| | ११ शुक्रवार | ,, १२ ,, | | भद्रकाली एकादशी व्रत |
| | १३ रविवार | ,, १४ ,, | | प्रदोषव्रत वृषभ संक्रान्ति मु० ३० पुण्यकाल मध्यान्ह ११ बजे से प्रारम्भ |
| | ३० मंगलवार | ,, १६ ,, | | भौमवती अमावस्या बटसावित्रीव्रत |
| ज्येष्ठ शुक्ल | १ गुरुवार | ,, १८ ,, | | चन्द्रदर्शन ( नयाचांद ) |
| | ३ शनिवार | ,, २० ,, | | श्री प्रताप जयन्ती |
| | १० शनिवार | ,, २७ ,, | | श्रीगङ्गा दशहरा |
| | ११ रविवार | ,, २८ ,, | | निर्जला एकादशी व्रत |
| | १३ सोमवार | ,, २९ ,, | | सोमप्रदोषव्रत |
| | १५ बुधवार | ,, ३१ ,, | | पूर्णिमा सत्यव्रत |
| प्र० आषाढ़कृष्ण | ३ शनिवार | ,, ३ जून | | श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० १०।३३ |
| | ११ रविवार | ,, ११ ,, | | योगिनी एकदशी व्रत |
| | १२ सोमवार | ,, १२ ,, | | सोमप्रदो व्रत |
| | १४ बुधवार | ,, १४ ,, | | मिथुन संक्रान्ति मु० ४५ पुण्यकाल दूसरे दिन |
| | ३० गुरुवार | ,, १५ ,, | | अमावस्या |
| द्वि० आषाड़शुक्ल | १ शुक्रवार | ,, १६ जून | | पुरुषोत्तम मास ( मलमास ) प्रारम्भ |
| | २ शनिवार | ,, १७ ,, | | चन्द्रदर्शन ( नयाचांद ) |
| | ११ सोमवार | ,, २६ ,, | | पुरुषोत्तमा ( परमा ) एकादशीव्रत |
| | १२ मंगलवार | ,, २७ ,, | | भौमप्रदोष व्रत |
| | १५ गुरुवार | ,, २९ , | | सत्यव्रत पूर्णिमा |
| द्वि० आषाढ़कृष्ण | ३ रविवार | ,, २ जुलाई | | श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० ९।५९ |
| | ११ सोमवार | ,, १० ,, | | कमला एकादशीव्रत स्मार्त्त गृहस्थों के लिये |
| | १२ मंगलवार | ,, ११ ,, | | ,, एकादशीव्रत वैष्णवों के लिए |
| | १२ बुधवार | ,, १२ ,, | | प्रदोषव्रत |
| | ३० शनिवार | ,, १५ ,, | | शनैश्चरी अमावस्या पुरुषोत्तम (मल) मास समाप्ति |
| द्वि० आषाढ़शुक्ल | १ रविवार | ,, १६ ,, | | कर्क संक्रान्ति मु० ३० पुण्यकाल मध्यान्ह ११ बजे तक चन्द्रदर्शन ( नयाचांद ) |
| | २ सोमवार | ,, १७ ,, | | श्रीजगदीश रथ यात्रा |
| | ९ रविवार | ,, २३ ,, | | भड्डली नवमी |
| | १० सोमवार | ,, २४ ,, | | श्रीस्वाध्याय सदन स्थापना दिवस |

# मिथुन-लग्न-जातक

[ ले० — श्री नन्दकिशोरजी गर्ग ज्योतिर्विशारद ]

मेष लग्न और वृषभलग्नका फल 'श्रीस्वाध्याय' के आठवें वर्षके चौथे और नवमवर्षके प्रथमाङ्कमें क्रमशः प्रकाशित हो चुका है। अब हम यहां मिथुन लग्नका विवेचन लिख रहे हैं। कर्क लग्नको आगामी अङ्कमें दिया जावेगा।

मिथुन लग्न वायुतत्त्व की द्विस्वभाव राशि है। इसके स्वरूपके विषयमें भिन्न २ ग्रन्थोंमें भिन्न स्वरूप पाये गए हैं। कहीं पीठकी ओरसे जुड़े हुए दो बालक देखे जाते हैं तो कहीं क्रीड़ा करते हुए स्त्री-पुरुषकी जोड़ी। बृहज्जातक के टीकाकार लिखते हैं—

'वीणा गदा धारे सदा गावत नरमादीन ।
अर्द्धाङ्गी क्रीड़ा करें राशि मिथुन न दीन ॥

यही इसका वास्तविक स्वरूप समझमें आता है। इसका निवास शयन ग्रह, आनन्द एवं विहार-स्थल, वाटिकाएं तथा क्रीड़ास्थलों में माना जाता है। तथा यह वनचारी है यह शीर्षोदय राशि होकर दिवाबली है। कालपुरुष के स्तनमध्य अर्थात् गले एवं हृदयपर इसका शासन है। अपने स्वामी बुधके समान ही इसे हरित रंग ही प्रिय है। यह पश्चिम दिशाकी स्वामिनी है। उक्त गुण इस लग्नके जातक में पाए जाते हैं। राशिका द्विस्वभाव इस लग्न के जातकके हृदय एवं मस्तिष्क की मिश्रित क्रिया में प्रगट होता है। अर्थात् जातक का बौद्धिक एवं भावात्मक दोनों ही प्रकारका विकास साथ ही साथ एवं अच्छा होता है। विशेषता यह होती है कि तत्वज्ञान अध्यात्म आदि के साथ आनन्द कला व संगीत प्रेम, मनोरञ्जन आदिकी भावनाओं का मिश्रण होता है। जीवनकी आनन्दित कलात्मक अवस्था में भी एकांत ढूंढ़ निकालता है। तात्पर्य यह कि दो नितान्त विरोधी जीवन-धाराओंमें सामञ्जस्य उत्पन्न करना चाहता हैं। तथा ये लोग समय २ पर अपने इस प्रयत्न में आश्चर्य जनक रीति से सफल होते देखे गए हैं।

वायु-तत्वकी राशि होना जातककी कल्पना शक्ति, विचारों की तेज उड़ान में प्रकट होता है। वह क्षणोंकी गति के साथ ही वस्तुस्थिति को पहचान लेता है। तथा इसी कारण उसका प्रकृति निरक्षण उत्तम होता है। वायुका सार्वभौमत्व भी कम प्रभाव नहीं डालता। इधर बुध स्वामी होनेसे वे प्रत्येक प्रकार के बौद्धिक, भावनात्मक एवं ज्ञान सम्बन्धी सभी मानसिक विषयों में प्रगति करना चाहते हैं। परन्तु वायुकी चञ्चलताके कारण गम्भीर विचारक नहीं हो पाते जिससे पूर्णत्व प्राप्त करना कठिन हो जाता है।

इस लग्न जातक का हृदय परिवर्तन शीघ्र तथा विचार अस्थिर होते हैं। बौद्धिक योग्यता मौलिक विचार के साथ ही मस्तिष्क की अति द्रुत गति के लिए ये योग प्रसिद्ध होते हैं। इसी के समान जबान भी बड़ी तेज होती है। ये अधिक वाचाल, चटका मटका करने वाले स्वयं प्रसन्न व दूसरों को भी प्रसन्न करने वाले होते हैं। इतनी जल्दी २ बोलते हैं कि सुनने वाला ही क्या स्वयं भी घबरा से जाते हैं। तात्पर्य यह कि वायु का वेग उनकी कल्पना की उड़ान यात्रा प्रेम चाहे जैसे वातावरण एवं स्थान के योग्य स्वयं को बना लेना और वाचालता से पूर्ण रूपेण प्रकट होता है।

बुध का प्रभाव स्नायुओं पर होता है अतः इनकी मानवी प्रकृतिकी निरीक्षण शक्ति भी उत्तम होती है। दूसरे योगोंकी भावनाओं एवं विचारों को शीघ्रसमझलेते हैं। बात बात पर शी ही प्रसन्न या अप्रसन्न हो जाते हैं, परन्तु हृदय इनका भोला होता है। सहन शीलता, क्षमाशीलता, निश्चिंतता तथा आनन्दित जीवन इनके मुख्य २ गुण हैं। मिथुन लग्न से बुद्धि स्थान तुला, धर्म स्थान में कुम्भ तथा दशम शुभ ग्रह गुरुकी राशि होना संतुलित बुद्धि सत्यवचन सहानुभूति नम्रता तथा दया उत्पन्न करती है। इन लोगों पर हर एक बात का प्रभाव शीघ्र पडता है, क्योंकि स्नायु ही इसके कारण होते हैं इसी से ये चिन्तित भी रहते हैं।

शरीर की आकृतिमें कद ऊंचा, सुन्दर व सुगठित शरीर कोमल व लम्बे हाथ तीव्र दृष्टि तथा फुदकती हुई चाल होती है। वायुके समान चंचल एवं प्रगति शील होते हैं। अतः स्त्रियां इनपर शीघ्र आकर्षित हो जाती हैं। इधर इनका हृदय भी भोला व प्यार करने वाला होता कला एव संगीत का प्रेम तथा विषय सुख की इच्छा तीव्र होती है। परन्तु कभी २ इस भोलेपन के कारण ये लोग कष्ट में भी पडजाते हैं। यद्यपि ये स्वयं तो न किसी को कष्ट देते हैं न कष्टके स्थान पर जाते ही हैं। इनके स्वभाव में भी द्विस्वभावपन प्रत्यक्ष दिखाई देता है। इनके बोलने अथवा लिखने में विरोधाभास दिखाई देता है। यदि ये सोचें तो भले रहते हैं परन्तु चिढ़ जाय तो बुरा करने वाले हो जाते हैं। यद्यपि इनको पूर्ण सत्यवादी नहीं कहा सकता तो भी जिसे वचन देते हैं, उसे पूरा करनेका जहां तक होता है प्रयत्न अवश्य करते हैं।

सुन्दन ज्योतिष में अमेरिका पर इसका शासन है। वहां के निवसियों के गुणों पर सामूहिक रूपसे विचार किया जावे तो उन कोगों की बनिया बुद्धि स्पष्ट झलकेगी। वे तथ्यों के ग्रहण कर्ता होते हैं तथा भिन्न २ वस्तुओं के परस्पर एवं वास्तविक गुणों के सम्बन्धोंके विचारक होते हैं। उनका औद्यौगिक एवं उत्पादन सम्बन्धी परिपाटियां बताती हैं, उन लोगों में नवीनता एवं साहस का प्रेम होता है। प्रत्येक काम शीघ्र पूर्ण करने की इच्छा होती है। सर्वप्रधान वस्तु है उनका दुभाषियापन, जो कि संयुक्त राष्ट्र परिषद के वादविवाद में पाठकों ने देखा होगा। समाचारपत्र-प्रेम विज्ञापन की आश्चर्योत्पादक सीमा तक मनोवृत्ति इसी राशि के कारण दिखाई पडती है इस प्रकार हम देखेंगे कि वैयक्तिक ही नही हैं सामूहिक विचारमें भी इस राशि के गुणों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ेगा।

## धंधा एवं प्रवृत्तियां

मिथुन का स्वामी बुध है। जिससे इस प्रश्नके जातक ज्ञानकी प्रत्येक शाखा का ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं। वे व्यापारिक मनोवृत्तिके होकर लगभग सभी प्रकार की कुछ २ जानकारी रखते हैं। साधारण तया दो धंधे करते हैं। बुधका शासन मस्तिष्क, स्मरण शक्ति, बुद्धि, वक्तृत्व, कला कौशल चित्रकारी तत्व ज्ञान, गणित, व्यापार, पत्रव्यवहार, लेन देन, संगीत, लेखन कला आदिके ऊपर है।— अतः मनुष्यकी शिक्षा, कला, व्यापार, आदि सभी की ओर रुचि होती है। बहुतसे कवि, लेखक गवैया, अभिनेता, खिलाड़ी, विदूषक इस लग्नके जातक हैं।

इसके अतिरिक्त अनेक कलाओंके जानकार, क्लर्क, वकील, आदि की ओरभी इस लग्न जातक की प्रवृत्ति रहती है। व्यवहार कुशल भी इतने होते हैं कि बड़ी जल्दी मित्रता करलेते हैं। धन स्थानमें भचक्र की चतुर्थ राशि कर्क है, जो भूमि स्थायी संपत्ति आदिका स्थान है अतः जातकमें बाग बगीचे क्रीड़ास्थल स्थायी संपत्ति आदि की ओर प्रवृत्ति रखता है। चतुर्थमें इसी ग्रह की राशि कन्या है जो जातकको निवारु तो सुन्दर स्थान मिलता है परन्तु स्वयं की संपत्ति का होना चंद्र की शुभ स्थिति पर ही निर्भर है।

भाग्योदय एवं शुभ समयः–

भाग्योदय एवं धर्म स्थान नवम स्थानमें कुम्भ

राशि है । जो रहस्य मयी राशि है यह जातक को तत्व-ज्ञानकी ओर प्रेरित करती है । बुध ३२में व शनि(कुम्भ का स्वामी ) ३६ में फलदेता है । मिथुन लग्न जातक के लिये मध्य पाराशरी मेंकहा है :—

भौमजीवारुणाः पापा एक एव कविः शुभः ।
शनैश्चरेण जीवस्य योगो मेषभवो यथा ॥

अर्थात् मंगल गुरु व सूर्य पाप ग्रह हैं केवल एक शुभग्रह शुक्र है , यहां भी मेषके समान केवल शनि-युत गुरु ही अशुभ होता है केवल गुरु नहीं ॥"

शुक्र स्वयं तो शुभ ग्रह है ही और यदि वह नवमेश शनिसे युतहो जाय तो और भी शुभ होजाता है शुक्रका फल २६ वें वर्षमें कहा गया है, तदनुसार मिथुन लग्न जातक केलिये बुद्धि का प्रकाश इसी वर्ष से होजाता है । फिर ३२ तक कुछ कठिनाइयों केसाथ ही । ३२ वर्ष के जीवन तक उसका अनुभव बढ़ जाता है पूर्णरूप से भाग्योदय ३६ वें वर्षमें ही होता है । मित्रके द्वारा यहयोग बनता है ।

## शुभदशान्तर्दशा—

शुक्र व बुध की महा दशामें चन्द्र बुध, शुक्र व शनि के अन्तर शुभ फल देते हैं । इसीप्रकार शनिमें राहु बुध व शुक्रांतर तथा गुरु की दशामें ( यदि शुभ की शुभस्थिति होतो ) गुरु, राहु व चन्द्रके अन्तर शुभ ही फल देते हैं ।

## अशुभदशांतर्दशाः-

मंगल केतु अशुभ ग्रह हैं । मंगलकी राशि कीट षष्ठ स्थानमें होनेसे जीवनमें अनेकों ब.र प्रपंचोंके कारण कष्ट होता है तथा अकस्मात् भय से परमात्मा रक्षा करता है । इन अशुभ ग्रहों की चन्द्र, गुरु सूर्य व राहु की भक्तियां कष्ट कारक होती हैं । इसी प्रकार राहुमें केतु, शनि, बुध, मंगल शुक्र तथा गुरु महादशा से बुध सूर्य व राहु और शनिमें राहु का अंतर भी शुभ नहीं रहता । शनि की शुभ स्थिति हुई तो शनिके अंतर व दशाकेवल शारीरिक कष्ट देसकती है, वैसे भाग्योदय कारक रहना चाहिये ।

भावार्थ रत्नाकारमें मिथुन लग्न जातक केलिये १० योग हैं उनमें से कुछ शुभाशुभ योग यहां देदेना उचित समझता हूं —

## शुभ योगः—

यदि सूर्य एवं बुध तृतीय भावमें होतो बुध निश्चय राजयोग कारक होता है । तथा निजदशामें अनेकों शुभ फल प्रदान करता है ।

(२) शुक्र मंगल व चन्द्र धन भावमें हों तो शुक्र दशा में धन प्राप्ति योग अच्छा होता है ।

(३) मंगल धन भावमें हो अथवा चन्द्रमा व शनि अष्टममें हो तो शनि तो अपनी दशामें मिश्रित फल देता है । तथा मंगल अपनी दशाके समय निस्स-देह धन योग उत्पन्न करता है ।—

(४ यदि गुरु व शनि नवम में होंतो उनकी दशा कालमें अशुभ योग जातके तीर्थ वा गंगास्नान यदि पुण्य प्राप्त करता है ।

(५) शनि मंगल धन स्थानमें हों तो तीनो ही की दशा धनहानि संपतिका नाश करती है । परन्तु सब कुछ नष्ठ नहीं होगा ।

(६) बुध ग्यारवें होना भाई के द्वारा वैमनस्य अथवा गलत फहमी होजाती है ।

अनेकों योग ग्रन्थोंमें पाये जाते हैं परन्तु कोईभी बिना विचारे, बिना बलाबल देखे सीधे प्रयुक्त होने पर पूरा २ फल नहीं प्रकट करते ।

## शरीर पर प्रभाव रोग एवं मारक आदि विचारः—

काल पुरुषकी छाती पर प्रभाव होनेसे तत्सम्बन्धी रोग ही विशेषकर जातकके होते हैं । हाथकन्धों, फेफड़े

श्वास प्रश्वास, पाचन क्रिया और रक्तपर इसका प्रभाव है। जिससे जातक, दमा, वायु विकार, पेटमें रोग मसा फेफड़ों में रोग, हृद् रोग क्षय तथा न्यूमोनिया आदि रोगों से पीडित होता है। मंगल बुधकी राशि में हुआ ते गर्मी, सुजाक, आदि रोगों के कारण रक्त विकार या आपरेशन होता है। नीचका मंगलनेत्र रोगसे पीडित किए बिना नहीं रहता। छठे में कीट राशि का होना प्रपंचों के उत्पन्नकरता है, तथा वैसे ही मंगल की स्थिति भी अशुभ हो ते जातक के अग्नि या शस्त्र से भी उसकी दशांतर्दशा में कष्ट होवा है।

चन्द्रमा व गुरु मार्केश स्थानों के अधिपति होने से मार्केशत्व के प्राप्त हैं, परन्तु चन्द्रमा मारक नहीं होता पाराशरी में भी दिया है 'नायं शशी निहंता' अर्थात् चन्द्रमा पाप ग्रह होनेपर भी मारक नहीं होता। यह राशि वंध्या राशि है। अतः रक्त विकार उत्पन्न करके संतति अल्प करती है, परन्तु पंचम में शुभ राशि तुला है जो कुछ संतति देती अवश्य है। २६वें वष अवश्य संतान होती है।

माता के लिए अशुभ दशान्तर्दशाः— चन्द्रमें शनि राहु व शुक्र व बुध में गुरु व शनि, शुक्र में शनि राहु व चन्द्र, राहु में गुरु व केतु तथा गुरुमें शनि व शुक्र।

पिता के लिए अशुभ दशान्तर्दशाः--शनिमें शनि मंगल गुरु व बुध में शुक्र व बुध में शुक्र व राहु तथा अशुभ स्थिति में चन्द्र।

भाई के लिए अशुभ दशाः—मंगल व केतुमें शनि राहु शुक्र गुरु व बुधमें शनि केतु व बुध। परन्तु मंगलकी शुभ स्थिति कष्टों का अनुभव अपनी दशा में नहीं होने देगी।

स्त्री के लिएः - सूर्य शुक्र में शनि चन्द्र व गुरु राहु या शनि में केतु शुक्र चन्द्र व बुध तथा गुरु में केतु व बुध। गुरु व बुध शुभ स्थानों में हों तो अथवा शनि के साथ शुभ न हो तो गुरु या बुध अपनी अन्तर्दशा में कष्ट नहीं देंगे।

मिथुन लग्न की स्त्रियां – स्त्री वर्गमें भी राशि के गुणों को वैसा ही प्रभाव पड़ता है परन्तु अपने वर्ग के अनुसार उनमें निम्न गुण इस लग्न जातकमें विशेष होते हैं। रति कामकी विशेष इच्छा वाली, कटु वचन बोलने वाली, कठोर स्वभावकी, अधिक व्ययी होती हैं। सर्दी तथा अन्य तत्संबन्धी रोग होते हैं। इसके साथ ही देरसे संतति होना, अस्वप्रजा, रक्त रोगोंसे चिंता रहती है। बुद्धिमती कलामें चतुर व मीठे स्वर-वाली, चपल, दयावती तथा बड़बड़ी होती हुए भी भोले हृदयकी होती हैं। फेफड़े सम्बन्धी ध्यान अधिक रखना चाहिए नहीं तो एक दे बच्चे होनेके बाद ही क्षयादि रोगों का भय होता है।

## हस्ताक्षर—

इस लग्नके जातक की जैसी चालढाल, विचारोंकी गति तेज रहती है वैसे ही लिखने में भी शीघ्रता करते हैं। अक्षरोंके सुन्दर, सुव्यवस्थित या सीधी लाइनमें लिखने की ये चिंता नहीं करते। ऊबड़ खाबड़, ऊंचे नीचे लिखने वाले होते हैं। अक्षर उनके ऊपरसे चौड़े व नीचेसे संकड़े होते हैं। अक्षर छोटे लिखनेकी प्रवृत्ति के कारण यह प्रभाव होता है।

## निर्बलताएं तथा हितवचन—

चंचलताके कारण आरम्भ किया हुआ काम पूर्ण नहीं कर पाते। स्नायु शीघ्र प्रभावशील होनेसे अस्थिर एवं अशांत रहते हैं। इसके कारण कभी २ चिड़चिड़ा पन भी आवश्यक है। फेफड़ों व श्वास पर इसका प्रभाव रहता है, अतः इस लग्न के जातक वर्गको प्राणायाम; श्वास क्रिया तथा फेफड़ों को दृढ़ व शक्ति-शाली बनानेके अन्य साधनों को करते रहना चाहिए। स्नायुके प्रभावसे से बचनेके लिये भय एवं शंकासे दूर रहना चाहिये। हिम्मत, आशा व श्रद्धा रखनी चाहिये। प्रत्येक कार्य या विषय की गंभीरता बनी रहने पर पूरा ध्यान आवश्यक है। पाचन क्रिया ठीक रहनेके लिये नियमित भोजन ही श्रेष्ठ है। फल फूल आदिका

# त्रैमासिक भविष्य प्रकाश

[ लेखक—ज्योतिर्विद्यारत्न श्री पं० गङ्गाप्रसादजी ज्योतिषाचार्य ]

प्रिय पाठको। श्री विक्रमीय संवत् २००७ स्वतन्त्राब्द प्रवेश काल रविवार में प्रारम्भ हुआ है। दैवयोग से चैत्रमास में पांच रविवार का योग पड़ा है। इसमें विशेष अन्त के रविवार में खग्रास चन्द्र ग्रहण तथा शनिः मंगल सिंह राशि में वक्री ( गुरु शुक्र का योग कुम्भ राशि में ) वर्षारम्भ के समय में इतने प्रबल योगों का होना विशेष चमत्कारी फलों का द्योतक है। व्यापार की काया पलट छः मास के अन्तर में होगी। चांदी, सोना, रूई, अरहर मटर, शेयर्स बारदाना, सरसों, अलसी, अरन्डा-इत्यादि वस्तुओं के भावों में भारी, आकाश-पाताल के अन्तर की तरह

---

प्रयोग लाभ कारी होता है। गर्मी के पदार्थों का सेवन तथा माद्य वस्तुओंका पान न करना ही उत्तम है। स्वस्थ, शांत और अपने कार्यमें लीन रहना चाहिए, ध्यान रहे कि वायु तत्व जिधर बहे उसी लोकमें उड़ा ले जाएगी अतः अपना मार्ग विचार कर चलो।

इस राशि वाले मिथुन, तुला, कुम्भ, कन्या, वृषभ राशि वालों से सम्बन्ध एवं भागीदारी लभाकारी रहती है। बैशाख, ज्येष्ठ, श्रावण, भाद्रपद मास अच्छे रहते हैं। आषाढ मास अशुभ होता है। सोमवार, बुधवार २-७-१२ तिथियां एवं ये शुक्रवारी हों तो और भी अच्छा प्रभवा देती हैं, शुक्रकी १०-५ या ३ में स्थिति हो तो ६-१५-१६-२४-२६ तारीखें अंग्रेजी लाभ प्रद होती हैं। स्वाति नक्षत्र कामों में निष्फलता देता है।

---

ऊंचा नीचा ज्यादा फेरफार होना पाया जाता है। व्यापारी भाई सावधान। सं० २००७ में व्यापार करना टेढ़ी खीर है। सर्व प्रकार के व्यापार सर्पमुखी चाल से चलेंगे। खरीदनेके बाद ही मन्दी, बेचने के बादही तेजी चकमा देदे कर व्यापारी के साहस को गिरा देगी। मंदी का बोल बाला, पर्य्याप्त होगा, जिसका अन्दाजा लगाना बुद्धि की सीमा से बाहर समझना सं० २००७ के तेजी मंदी के समुद्रकी थाह पालेना साधारण बात नहीं है, जो सज्जन वर्षों से आशा लगाये थे उन्हें श्री लक्ष्मीजी की सहस्रों वार विनती करने का फल व्यापारी भाई को इस २००७ में प्राप्त हो सकेगा। धातुओं को संग्रह तथा विक्रय करने वालों की तो बात ही क्या है, केवल मिट्टीके पदार्थों को ही क्रय विक्रय से मन माना लाभ प्राप्त हो जायगा। ग्रहण के पहिले और ग्रहण के बाद भारी उलट फेर समझें। विशेष फलः चांदी, रेशमी कपड़ा-रुई-तेल घृत सरसों-अलसी इत्यादि में होगा। भाग्यानुसार धन प्राप्ति की उत्तम चेष्टा करिये।

प्रतिपच्चैत्र शुक्लाया रविवारो यदा भवेत्।
संग्रह स्तत्र कर्तव्यः सर्षपाः तैलरौप्यकम ॥१॥

वर्ष आरम्भ के समय चैत्र सुदि १ को रविवार हो तो चांदी-तैल-घृत-सरसों संग्रह करने से तीन मास में लाभ होता है। अन्यच्च—

चैत्रस्य मासे यदि एकराशौ
गुरौभृगौ चैव गते तदास्यात्।
ग्राह्यं घृतं वै तिल तैल सूत्रम्
द्विमास मध्येतु भवेच्चलाभः ॥

इस प्रकार गुरु शुक्र एक राशि में है तो पूर्ववत् के योग की पुष्टि करते हैं—

### ग्रहणफल—

अल्पधान्याल्प मेघाश्च स्वल्प क्षीराश्च धेनवः।
कलिंगदेशे पीड़ा च ग्रहणे रविवासरे॥

ग्रहण रविवार को होतो वर्षा की कमी धान्य की उत्पत्ति अल्प दूध की कमी राजाओं में युद्ध कलिंग देश में पीड़ा होती है—

विशेषः—चन्द्र ग्रहण खग्रास रविवार में हो तो सफेद वस्तु चांदी, रुई में ग्रहण के पहले मंदी बादमें तेजी होती है। व्यापारी भाई मंदी के रियेक्शन में खरीदो लाभ हो जायगा। लाल वस्तु लालमिर्च सोना यह तेज बाद को मंदा होता है। घटे भाव संग्रह करने से लाभ होता है—

चांदी की तेजी मदी के सीक्रेट प्वाइट और द्वादश योगः—

(१) चैत्र सुदी १ रविवार होतो— चांदी तीन दिन तेज रहती है इस योग का फल सोमवार से बुध तक समझे।

(२. चैत्र सुदी ४ वृद्धि होती है तो चांदी पहिले मंदी फिर तेज।

(३) चन्द्र ग्रहण रविवारको हो तो चांदी मंदी होती है।

(४) चन्द्र ग्रहण रविवार को (खग्रास) हो तो लालमिर्च सोना चांदी में १५ दिन पीछे तेजी होती है।

(५) शुक्र गुरु कुम्भ राशिमें हो तो चांदी तेज होती है।

(६) चैत्र में पांच रविवार हो तो चांदी वदी में तेज सुदी में मंदी होती है। रुई फीचर विशेष तेज समझो।

(७) सूर्य राहु मीनमें हो तो शेयर्सके भाव तेज होते हैं।

(८) चैत्र सुदी १ को रेवती नक्षत्र हो तो चांदी में तेजी होगी।

(९) चन्द्रमा १।५।६।९ राशि का चांदी मंदी करता है। अन्य राशि का तेजी।

१०) सिंह का मंगल घृत लालमिर्च तेजी करता है।

(११) सिंह पर शनि मंगल वक्री चांदी रुई तेज करते हैं।

(१२) वर्ष राजा रवि हो तो चैत्र में घृत गुड़ खांड तैल सरसों संग्रह करने से आषाढ तक लाभ होता है।

### मेष संक्रान्ति फल

(१) मेष संक्रांति के प्रवेश समय गुरुवार हो तो राजाओं में युद्ध होता है। सर्व धान्यों की तेजी होती है। शतभिषा नक्षत्र हो तो विशेष तेजी।

(२) मेष राशि पर सूर्य लाख नारीयल तिल रुई चांदी तेज करता है। बुध साथ हो तो धान्यों की तेजी होती है।

(३) मेष संक्रमण के समय कुम्भका चन्द्रमा हो तो ग्रह की राशि के द्रव्यों की तेजी होती है। शनिकी वस्तु समझो।

### त्रैमासिक तेजी-सन्दी विचार-विमर्श चांदी रुई

जनरल ग्रह योगों द्वारा चैत्र सुदी १० से १५ तक चांदी रुई तेज। वैशाख बदी २ से अमावस तक मंदी होकर तेजी। १, २ से विशेष तेजी। बैशाख सुदी ३ से १५ तक निश्चय मंदी, नजराणा लगावें। ज्येष्ठ बदी २ से १४ तक तेजी। ज्येष्ठ सुदी २ से १५ तक मंदी, बाजार पानी २। आषाढ़ बदी १ से घटे भाव खरीदो चांदी तेज सुदी २ से १० तक मंदी होकर तेज।

### चांदी की सर्पमुखी चाल

मुख में दो सौ पूंछ डेढसो जाण।
पच्चासी सत्तर पेट में गणना करो सुजान॥१॥
शनि मंगल वक्री भया चढ़ी हिमालय जाय।
शुक्र गुरु के योग से सत्तावन हो जाय॥२॥
नब्बे दिन के बीचमें तेतालीसा सतरंज।
चाल दुपट्टी समझके गली लगावो सुजान॥३॥
रुई फीचर के अङ्क में छै छका को ध्यान।
दुवा चौका दुपट्ट कर समझो उसका मान॥४॥

अध्यात्म ज्यौतिष मीमांसा

# जन्मकुण्डली और मोक्ष ज्ञान

लेखक —
श्री गङ्गाप्रसादजी ज्योतिषाचार्य

प्राचीन कालसे भारतवर्षमें जितने भी साधु सत्पुरुष हो गये हैं वे सब कर्क सिंह वृषभ धनुः मीन लग्नोंमें से किसी एक लग्नके पाये जाते हैं, अध्यात्म-विचारमें भावों का बोध इस प्रकार जानना चाहिए।

(१) लग्न यमस्थान (२) नियमस्थान (३) आसन मुद्रास्थान (४) प्राणायामस्थान (५) प्रत्याहार स्थान (६) धारणा स्थान (७) ध्यान स्थान ८) समाधिस्थान (९) ज्ञानस्थान (१०) कर्म स्थान (११) राज योग स्थान (१२) विदेहीस्थान।

शनि मंगल सप्तम में बहुत ही अच्छा फलदेते हैं, यह योग पूर्ण वैराग्य सूचित करता है। माया मोह का पूर्ण नाश होता है, वह मनुष्य निश्चयी निग्रही एकाग्र चित्त वाला होता है। प्राप्तपरिस्थितिमें समाधान मानने वाला दयालु देशको सेवा करने वाला निडर और लोहपुरुष होता है। उसकी बुद्धि जन-तन्त्र कार्योंमें कुशाग्र होती है। देश की उलझी हुई ग्रंथी को सुलझानेमें बड़ा प्रवीण होता है। वाणी मेघ गर्जना के सदृश शत्रुओं को डराने वालो होती है। स्वभाव निर्भय तेजस्वी होता है।

पूर्व जन्म के अंतमें जो वासनायें अतृप्त रह जाती हैं उनको पूर्ण करनेके लिए फिरसे जीवन मात्र को जन्म लेना पड़ता है। प्रथम जन्म के कर्मों का संशोधन किस प्रकार करना चाहिए? इसके संशोधन का नियम ऐसा है कि जन्म लग्न में जिस स्थान में जिस राशिका शनि हो उस राशि को लग्न मानकर विचार करना। यदि शनि कर्क वृश्चिक धनुः मीन में हो तो प्रपंच और परमार्थ दोनों ही साध्य होते हैं। ऐसे जातक जन्मसे ही साधु स्वभावके बन जाते हैं। यदि मेष सिंह मकर कुम्भ में शनि हो तो पूर्व जन्मसे महात्मा बन कर नहीं आते। इस जन्म में धारणा युक्त हो कर पहले देश सेवा सच्ची लगन के साथ करके गुरु केन्द्र में हो तो अन्त समय में आत्मा का साक्षात्कार होकर ज्ञान योग प्राप्त होता है। लग्न में हर्षल चतुर्थ में सू० गु० शु० राजयोगी बनाते हैं, इस योगमें सुवर्ण के समान तपस्या करने के बाद ही राज योग प्राप्त होता है। और पीछे कर्मयोगी होकर आत्मा का चिन्तन करता हुआ दीर्घायुः को प्राप्त होता है। अध्यात्म योगों में भावगत ग्रहों का विशेष फल अगले लेखमें पाठकों के सामने रखेंगे।

---

# * व्यापार रुख *

[ लेखक :— ज्यो० आ० श्री गणेश विद्यासागर दैवज्ञ ]

## ता० २६ मार्च से ५ अप्रेल तक

ता० २६ को मन्दी के झटके हर एक वस्तु पर लगेंगे, कारण चन्द्र शुक्र की दृष्टि तथा बाण वेध चालू होगा, यह चांदी में ३ ३।।) सुवर्ण १) १।।) अलसी ।।।) सरसों १।।) शेयर आयरन ।।।) तक तोड़ देगा । इससे अधिक भी मंदी का झटका आसकता है। यह योग ता० १ अप्रैल दिनके ४ बजे तक अपना असर जमाए रहेगा । इस आई हुई मन्दी का नफालेकर माल पौते करने वालों को नुकसान नही है, यह तेजी तारीख ३ तक चलेगी और तेजीके आंकड़े भी तेज ही समझना लेकिन आई हुई तेजी ठहरेगी नहीं ता०४ तथा ५ को हर वस्तुमें दुतर्फा घटाबढी चलेगी ।

## ता० ६ से १२ अप्रेल तक

यहां ग्रहोंने खिलवाड़ मचा रखा है, प्रथम इस खिलवाड़में ता० ६ तक जिस वस्तुमें मंदी आये उसे खरीदना और साथके साथ नफा लेलेना अच्छा है । ता० १० से आये उछाले मालका बेचणा चालू करो। ता० १२ तक आपको हर वस्तु में जैसे चांदी, सोना, गुड़, अलसी, सरसोंमें मंदीका झटका लगेगा ।

## ता० १३ से १९ अप्रेल तक

प्रथम आज भी कुछ मंदी नजर आयेगी । उसमें माल खरीद करो । यदि किसी वस्तुमें थोड़ी मंदी और भी दिखाई दे तो घबराना नहीं योग संयोग दोनों तेजीके है । यहां ता० १६ तक चांदी ४) ४।। सुवर्ण १) १।।) गुड़ ।।।) टाटाडिफर्ड २०) २२) सरसों १।।) २) अलसी १) १।।) तेज होकर रहेगा । ता० १६ को २ बजे करीब फिर मंदी अवे उसमें माल पोते करके १८ को ४ बजे तक नफा लेलेना अच्छा हैं। फिर ता० १९ को बाजार दुतर्फा चलेगा ।

## ता० २० से २६ अप्रेल तक

मंगल जैसा दंगली और शनि जैसा उत्पाती दोनों ग्रहों की युति होना मार्केट में तहलका मच जाएगा । यहां हर वस्तु मात्र पोते रखना । लाभ आपको तेजी में होगा । इस तेजी का नफा ता० २३ को सायंकाल ४ बजे लेलेना । ता० २४ से २६ तक मार्केट में कुछ मंदी के झटके आयें, लेकिन फिरतबी समझना । आगे तूफानी तेजी आने वाली है । स्याणा सौदागर ऐसे समय में क्या किया करता है विचार लें ।

## ता० २७ अप्रेल से ३ मई तक

प्रिय व्यापरियों !लो गरीब से गरीब व्यापारी भी धन कमा लो । हम खुले आम आपको बतलाए देते हैं कि यहां आंधी जोरकी चलेगी और बड़े वृक्ष उखड़ जायेंगे । मन्दी का जो (सिण्डी केट) बना है वह उखड़ जाए और चांदी ५) ६) सुवर्ण १।।) २) गुड़ १) १।) सरसों २ २।।) शेयर टाटा ४०) ४५) अलसी ।।।) १) की तेजी पकड़ ले 'श्री स्वाध्याय' के ग्राहकों को ही ऐसे चांस मिलते हैं । बीच २ में मामूली मन्दी का झटका आता रहेगा ।

## ता ०४ मई से १० मई तक

भारत का वातावरण 'किं कर्तव्य' हो रहा है माल में तेजी पर तेजी चालू है बार बार लिखना अच्छा नहीं ।हमारी राय तेजी में अधिक तथा मन्दी कम नजर आती है । हर घटे भाव माल खरीद करो और नफे के साथ सुलटते जाओ, लेकिन बाजार टोन का ध्यान अवश्य रखना ।

## ता० ११ से १७ मई तक

प्रथम कुछ मन्दी आएगी इसमें माल खरीद करो। ग्रहों के अनुसंधान से सिवा मार्केट तेज होने के दूसरी बात नजर नहीं आती और आप स्वयम् खिलाड़ी हैं। चार व्यापारियों से इस विषय पर मसवरा भी करते रहें कि क्या करना चाहिए। मेरी राय तो तेजी में अधिक तथा मन्दी में कम है लेकर बेचाण करो।

## ता० १६ से २४ मई तक

यहां अच्छी टोन मंदी खेलने की आई है, प्रथम झटका लगेगा, दुनियां को मंदी दिखाई देगी। ता० १८ से २३ तक बाजार मंदी घटा बढ़ीमें चक्कर लगाता रहेगा, कारण यहां हर प्रकारके ग्रहों पर मार पड़ रही है। जब कोई पिटता है तब कभी ऊंचा कभी नीचा होता ही देखा गया है। योग मंदीमें अधिक तथा तेजीके कम हैं, लेकिन यह मंदी टिकेगी नहीं भाव फिर अगली कलममें अपने लैबिल पर आजायेंगे। समझदार को इशारा काफी होता है।

## ता० २५ मई से १ जून तक

देखिये, जब भी मार्केटमें मंदी आती है तब सटोरिया माल खरीदा करते हैं, लेकिन ता० २८ से ३० के दरमियान एक झटका अच्छे रूपसे फिर मंदी का आयेगा और वह भी ठहरेगा नहीं, यहा तेजी का सूर्य बादलमें छुप जायेगा लेकिन अंधेरा नहीं होगा। हर समय घटे भाव खरीद हाथों-हाथ नफा बढ़ाना। यदि इस कलम की बात समझमें नहीं आवे तो हमसे पूछ लेना लेकिन पत्र जबाबी देना।

## ता० २ से ६ जून तक

तारीख ३ तक भले ही आप मंदी खेल सकते हैं लेकिन ता० ४ से ग्रह योग साफ २ तेजी के चले हैं। इसका नफा ता० ३ को खुले बाजार दोगला बनजायेगा इस प्रकारके दो गले मार्केटके आंकड़े दोगले ही बताया करते हैं, हमारा काम नहीं। नजराणा लगानें की नेक सलाहै हैं।

## ता० ६ जून से १५ जून तक

यहां शुभ तथा क्रूर ग्रहों की भिड़न्त है, यहां बाजारोंमें काफी उलट फेर होगी मार्केट की स्थिति बिगड़ जाये। बिदेशोंके भारी प्रयोगड़े सुनाई देगें। चांदी ४) ४॥) सुवर्ण १॥) २) गुड़ १) १।) अलसी ॥।) १) सरसों २) २।) शेयर २५) ३०) की उलट फेरमें चलते मार्केट फिर अपने स्थान पर आजायेगा। ता० १ को जो भाव हो उनसे तेजी हो बेचना मंदी हो खरीदना ऐसा अनुमान है,

## ता० १६ से २५ जून तक

चन्द्र गुरु का बाण वेध चालू है मार्केटमें ढीलाई नजर आती हैं, यहां चांदी ३) ३॥) सुवर्ण १) १।) गुड़ ॥।) १) अलसी १) १।) सरसों १।।) २) शेयर १५) २०) का झटका खाजायेगा। आप यदि व्यापारी हैं तो इस समय को शान्ति से खेलडालिये लेकिन विचार शक्तिके साथ २ यदि यहां मंदी का झटका थोड़े रूपमें भी आए तो हम आपको एक अमूल्य चांस देते हैं। ता० २४ से २१ तक चांदी ४) ५) सुवर्ण २) २।) अलसी खोपरा सरसों १) १।) शेयर २५) ३० गुड़में ।।।) १) की अवश्य मंदी आयेगी। यह मेरा अनुमान परीक्षित पक्का है।

## २५ जून प्रातः से १ जुलाई तक

प्रिय बन्धु व्यापारियों! हम आपको एक अनुसूत चांस भी बतला रहे हैं देखो जिस शुक्रकी परस्पर दृष्टि होती है उस समय चांदीमें ७) रुईमें २७) शेयरमें ३७) काली मिर्चमें १७ अलसी सरसोंमें २) गुड़ १।≡) की मंदीका झटका अवश्य आता है। जिस समय प्रतियुति होगी उस समय से दो दिनमें यह योग हो जायेगा। श्री सम्पादक महोदय श्रीस्वाध्याय से इनकी प्रतियुतिका समय पूछ हजारों रुपयोंका हाथ मार सकते हैं। यह चांस इस सप्ताहमें अवश्य मिलेघा। आये हुए इस समयके मंदी के चांसका नफा ले लेना। इन आंकड़ोंसे कम मन्दी नहीं आयेगी याद रखना।

## ता० २ से ८ जुलाई तक

यहां भी थोड़े रूप में बाजार दोनों तरफ डुलता हुआ नजर आएगा, लेकिन अन्य योगों को देखने से ज्ञात हो होगा कि मार्केट मन्दी के स्टेण्ड पर नहीं ठहरेगा। जहां मन्दी का रोला सुनाई दे वहां खरीद कर लो, देखो समय मुझे इस माह में अधिक नहीं मिला है फिर भी चांदी ४) ४॥) सुवर्ण १) १॥) अलसी सरसों २) २।) शेयर १५) २०) टके का उछाला इस सप्ताह में आ जाएगा। यदि आप मालदार बनना चाहते हैं तो 'श्रीस्वाध्याय' में अपनी कुण्डली तथा २५) भेजकर स्थायी ग्राहकों में नाम लिखा रसीद हासिल क्यों नहीं कर लेते। इसमें आपको कौनसी अड़चन प्राप्त हो रही है, लिखें।

## ता० ६ से १५ जुलाई तक

मेरे प्यारे व्यापारियों! देखो और नोट करो यहां ४ ग्रहों का सिण्डीकेट गुरुदेव की देख रेख में हो रहा है और गुरुदेव का ख्याल भी अपने शिष्यों को मन्दी खिलाने का है, लेकिन अन्य ग्रह अपनी नीचता दिखाकर कायम भाव नहीं रहने देंगे और एक चाल पर बाजार को नहीं चलने देंगे, हर आए उछाले माल का बेचाण करो और नफा बढाओ।

## ता० १६ से २५ जुलाई तक

यहां चन्द्रमा क्रूर ग्रहों में फंस गया, है जिस प्रकार बोगस व्यापारी चट दलालों के चक्कर में आ जाता है। भाव में तूफानी चाल से गरमो चलेगी इस गरमी का अन्दाजा लगाना मामूली काम नहीं है। हमतो आप को डण्के की चोट कहते हैं कि जिसके माल पोते होगा वह मालदार कहलाएगा। हमारे संकेत को होशियार ही समझ सकता है। बीच २ में कहीं पर मन्दी भी दिल बहलाने को आ जाएगी, इस आई हुई मन्दी का उपयोग घटे भावों माल खरीद में रहना भाव मार्केट तेजी वालों की तरफ चलेगा। हमारी नेक सलाह 'श्री स्वाध्याय' में अचूक चांस सं० २००७के एकत्रित रजिस्टर में दर्ज हो गए हैं और यह उन्ही भाग्यशालियों को प्राप्त होंगे जो मय अपनी जन्म कुण्डली के २५) रु० जमा करा देगा। इस स्वर्ण अवसर को हाथों से नहीं जाने देना चाहिए।

---

# व्यापारिक तेजी-मन्दी और ज्योतिष

## [ लेखकः—श्री प्रोफेसर बी० सी० मेहता M.R.A.S ]

जब से नूतन वर्ष सन् १९५० प्रवेश हुआ व्यापारिक वस्तुओं में अच्छी घटाबढ़ी चल रही है। वर्ष के आरम्भ में ही बड़े २ योगायोग प्रारम्भ हो गये। जनवरी के प्रथम सप्ताह में ही शनि बुध शुक्र हरएक वक्र गति में हो गये तथा कन्या राशि में मंगल केतु इकट्ठे होकर इन वक्री ग्रहों से त्रिकोण योग में आ गये ये लगभग सब व्यापारिक चीजों में तेजी करने वाले योग बने और इन योगों से जनवरी के प्रथम सप्ताह से ही सब बाजारों में तेजी का भभका प्रारम्भ हो गया। इसी मास में इन योगों से समर्थन करने वाले कुछ योग एक साथ ही बने और बुध बृहस्पति शुक्र जैसे तीनों ग्रह मकर राशिमें अस्त हो गये। फिर क्या था इन योगों के प्रभाव से चांदी, सोना, शेयर, गुड़ तेलवाने में बहुत ही अच्छी तेजी आई। हमने इस तेजी को बड़े सुन्दर व स्पष्ट शब्दो में 'एस्ट्रोलोजिकल मेगजीन' के जनवरी मास के अंक में पाठकों की सेवा में उपस्थित किया था। वह आज भी ज्योतिष की सत्यता के प्रमाण स्वरूप कोई भी महाशय देख सकता है। फरवरी मास में ता० १४ को मंगल ग्रह वक्री हुआ इसने प्रत्येक वस्तु में मन्दी का झटका दिखाया और मार्च में फिर बाजार सामान्य से बन रहे हैं।

किन्तु अब यह बाजार की सामान्यता व सुस्ती कब समाप्त होगी इसका दिग्दर्शन पाठकों को इस लेख में कराया जायगा। ता० १३ मार्च से योगों में महान् परिवर्तन हो रहे हैं और अप्रेल मई और जून मास व्यापारिक घटाबढ़ी के लिये तूफानी कहे जावें तो भी अतिशयोक्ति नहीं मानी जाती। ता० १३ मार्च को बृहस्पति जैसा महान् ग्रह अपनी राशि परिवर्त्तन करके कुम्भ राशि में प्रवेश करता है। कुम्भ राशि के सामने शनि जैसा महान् ग्रह पहले से विद्यमान है इसलिये इसका प्रतियोग ( आपोजिशन ) कुम्भ राशि में प्रवेश करने वाले बृहस्पति से होना अनिवार्य है। यह योग चांदी सोने व शेयर में अच्छी घटावढ़ी व मन्दी का द्योतक है। इसको सहयोग ता० १८ मार्च के होने वाले सूर्यग्रहण से भी मिलता है। यद्यपि यह सूर्यग्रहण हिन्दुस्तानी पंचांगोंमें नहीं मिलेगा फिरभी ता० १८ मार्चको सूर्यग्रहण अवश्य होगा ❋

और इसके ठीक १५ दिन बाद ही अर्थात् चैत्र सुदी १५ को अत्यन्त महत्वशाली चन्द्रग्रहण भी हो रहा है। यह चन्द्रग्रहण कन्या राशि में होगा। इस प्रकार दो

❋हमने अपने सं० २००६के 'श्रीविश्वविजयपञ्चाङ्ग' पृष्ठ ४ पर 'ग्रहण-निर्णय'में इस ग्रहण का उल्लेख करते हुए स्पष्ट लिखा है कि—''यह दक्षिण-पश्चिम अफ्रीका और अमेरिकाके कुछ भागोंमें ही स्वल्प खण्डग्रास दिखाई देगा। भारतमें कहीं भी इस ग्रहणका स्पर्श-मात्र भी नहीं है।'' सम्भव है विद्वान् लेखकने यह लेख लिखते समय श्रीविश्वविजयपञ्चाङ्ग का उक्त पृष्ठ ध्यान से नहीं देखा होगा। अन्यथा 'यह सूर्यग्रहण हिन्दुस्तानी पंचांगोंमें नहीं मिलेगा'' यह वाक्य कदापि न लिखते। — सम्पादक ]

ग्रहण एक साथ अत्यन्त महत्वशाली व विचारणीय है इसके अतिरिक्त एक विशेष योग इसी समयमें और बनता है। वह है अत्यन्त क्रूर ग्रह शनि मंगल का वक्री अवस्थामें सिंहराशि में एकत्रित होना तथा इसके ठीक सामने की राशि कुम्भमें अत्यन्त सौम्य ग्रह बृहस्पति शुक्रका एकत्रित होना। ऐसी अवस्था ग्रहों की कम से कम ६० वर्ष पहले नहीं बन सकती। यद्यपि यह योग इस समयतो प्रायः १२० वर्ष बाद इस राशिमें हुआ है। इसका प्रभाव भारतकी सामाजिक राजनैतिक तथा आर्थिक अवस्था पर अत्यन्त महत्वका होगा और इससे व्यापारिक क्षेत्रोंमें महान् परिवर्त्तन व तूफानी तेजी-मंदी होने की सम्भावना है। इसलिये व्यापारी मित्रोंसे हमारा अनुरोध है कि वे बहुत ही सावधानी से अपना व्यापार करें. अन्यथा बहुत बड़े खतरेमें फंसने की आशंका है।

राजनैतिक क्षेत्रमें इस योगका यथेष्ट प्रभाव दृष्टिगोचर होगा तथा नानाप्रकारक घटनाएं व खबरं देखने व सुनने को मिलेंगी। इस अवधिमें कई जगह युद्धके बाजे भी बजने लगेंगे। चादी सोना शेयरमें आश्चर्यजनक अनहोनी घटाबढी हो सकती है। चांदी सोनेमें यदि तेजी चली तो भाव २००) के चांदी के व १३०) के ऊपर सोनेके भाव जानेकी सम्भावना है और मन्दी चली तो १६० चांदी व १००) करीब सोना हो सकता है। अन्य वस्तुओं में भी बहुत अच्छी घटाबढी की सम्भावना है। हमारे ध्यानमें तो चांदी, सोना में तेजी ही होनेकी सम्भावना है गुड़ व अन्य वस्तुओंके सौदे नये प्रारम्भ होंगे और कुछ वस्तुओं के सौदे गवर्नमेंट को बन्द भी करने पड़ेंगे। इन योगोंका प्रभाव ३१ मई तक रहेगा इसलिये उक्त तारीख तक प्रत्येक मनुष्यको सावधानीसे व्यापार करना चाहिये तथा किसी अच्छे ज्योतिषीकी भी राय लेते रहना चाहिये।

जून मासमें योगायोग व्यापारिक दृष्टिसे विशेष महत्वशाली नहीं है। साधारण घटाबढ़ी चलेगी शेयर व तेलवानेमें समय-समय पर मन्दीके झटके आते रहेंगे। चांदी-सोने का ट्रेण्ड घटाबढ़ीके साथ कुछ तेज रहेगा। ता० २५ जूनके आस-पास व्यापारियों को तेजी से हर व्यापार से निकल जाना चाहिये, क्योंकि वहांसे आगामी कुछ समय तक अच्छी मन्दी हर व्यापारमें आनेके योग बने हैं। विशेष आगामी अङ्कमें देखिये।

---

# ओ मराली जाग !

[ श्री दाक्षायणी ]

व्यस्त है संसार को
परिछादिनी अब कालिमा।
है उठी अन्तर्गगन से
वैद्रुमो नव लालिमा ॥१॥

आज अस्ताचल शिखर में,
टिम-टिमाती इन्दु भा।
खिल उठी मन मोहिनीं।
प्रत्यूष में पङ्कज प्रभा ॥२॥

खिंच गई लेखा मनोहर,
बांध नूतन.. ... राग।
पी रहा मकरन्द मधुकर,
ओ मरालो... ... जाग ॥३॥

आ गया वातायनों से,
झांकता शीतल समीर।
साथ ले आया उषा की,
कान्ति तमको चोर ॥४॥

सुप्त नीरवता हुई,
हो रो रहो मानो तमी।
आज भावों के उदय में,
है न कोई भी कमी ॥५॥

जबकि जीवन वाटिका में,
जागता है....... राग।
हो गया संसार द्योतित,
ओ मरालो........जाग ॥६॥

केशरी अंशुक लहरते,
छा गया भूमें बसन्त।
आज हैं फैली लतायें,
राजती फैली दिगन्त ॥७॥

हो गये विकसित सुमन अब,
उड़ रहा पीला पराग।
बोलता तरु शिखा से पिक,
ओ मराली......जाग ॥८॥




श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा अर्जुन प्रेस दिल्ली में छपकर श्रीस्वाध्यायसदन सोलन (शिमला) से प्रकाशित।